

“वसि विपरीतं जाते जगु निपुणं बुद्धिबुद्धिं युक्तिपुणं ।
साधयि अतिव बह्वं य जलं हि साधयं हि नेण ॥”

“यावाणो ब्रह्मणे देविर्दत्तवरो जनेभ्यः प्रथममिषं
सुतं वाः सिद्धताः प्रबललज्जिकाः शोवालमन्मः सुधा ।
तरे कल्पमहेन्द्रेः किमपरं नामाणि रत्नाकरः
इति पादभूषणं पठित्वा व्याख्याय पुनः गतः । तेषु शम्भुर्वेकः
सकौविकः पञ्चदशपदं सुमुद्रतन्मगाल । इष्टः कञ्जोन्मालाचुम्बितमगाननामः
समुद्रः । विष्टः सः अचिन्तामय कन्द्यः सर्वा लम्पयन्ते , प्रथमं विष्टितः सलिलं
निर्वाणि । पीतं तद्वयः कोष्ठः । ततः पठति ,

आभापरिमितं,
"देरुत्तरमयं निरुत्तरं विनापि नो दानपि"। विजीपतां, तीर्थानि
पूजन्ताम् ॥ मन्त्रां कौटिल्याय नमः, किमुपसर्गं प्रस्तावते विनापि
य, न विदुः परमायुः किमर्पयिष्ये । आचार्यवर्य, पूरा गमतां, भवतां
कार्याणि स्यान्ति । मन्त्रां सविशेषं पृच्छति । सुरयो वदन्ति, सविबेन्द्र !
भूयतां, मन्त्रासं कृत्वा मन्त्राः स्तुतवन्तः लोभयाः परावो वसन्ति, पृष्टि
निर्वादिन्, कथालवष्टो वादयन्ति, नञ्कदा वेलाकुलोपचरः पान्य आग-
मत् । नवीन देति कृत्वा आभूरादितः, पृष्टः, त्वं कः, कथः । तेनोक्तमहं समु-
द्रतटस्थसम । पान्यः पुराणामिकः पृष्टः, समुद्रः केन जानितः । तेनोचं स्वयम्भूः
सः । पुनरुचः पृष्टः, किमासः । पान्योक्तमलवपारः । किं तज्जास्ते इति पृष्टे
पुनस्तेनावत् ।

[illegible]

सिद्धिः । कः प्रोक्तः ।

[illegible]

॥ एतत् एतत्, एतत् एतत् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

महिलायामिति विद्यां ददा । ततः प्रतिभयानि जगद्वर्जानि भवन्ति । भविष्य

[illegible][illegible]

मित्रां वा दर्शितुं कथं शक्यमिह, न मयि हं विद्यायां मित्रं किंचिदप्यन्यथा

प्रातः समुद्रतः श्रुतिः । मया मनःप्रवृत्तेन यत्र वदन्ति तस्मिन् नान्यथा भवेत् ॥

तैः, मन्त्रिभ्यः किमहमुचिन्तयामासुः, किं चारणः, किं वन्दे, किं तु सर्वसिद्धान्त-

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

माधिराः चरुयः, मन्त्रिदत्तमित्रवर्णनम् । आचार्यदेवम् । अथमात्मनो भू-

वादिना मे सहस्रद्वयं तत्रैव निरूप्यते । अतः चेत् । अतो भविष्यत्काले,

आगत । नव जलमुत्पत्तिः स्वयम् । सविप्रकम्पादिभिरुत्पन्नम् ।

विज्ञेय सन्निवन्तः, पदोन्नतिना सर्वेभ्यः क्षमयित्वा करोमान् यम एकः

“यत्किञ्चिदप्यत्र पठे ब्रह्मिण्यत्र । सविस्तरं व्याख्यातं कृतं

स्मात्प्र पद्यादर्थं चर्वाङ्कनं, विनमस्कारादि विस्मयं, पद्यादि श्रुति

कारमन्त्रिणमन्त्रिकान्तरात्तद्विषयम् । इति ।

अध्यात्मार्थं वा आत्मार्थं वा किमर्थं वा श्रेयं वा यत्नं कलियुगमार्थं वा

सदस्यदेवताः सन्त, तस्मात् आद्यावत् आद्यात्मनो-आत्मदेवतादेवता

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

मन्त्रः प्रहः समं धृतिः क्षुब्धता, कामन्यतद्विवासाय मन्त्रः । अथैव । आदिः ।

मन्त्रो ग्राह मम वातः क्षयतां । अनेकपितृवद्वर्षे अवतिः । अचरा चारुः ।

[illegible]

ॐ श्री गणेशाय नमः । इति श्री कृष्णार्जुनसंवादे धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सोः संवादे । अर्जुनस्य दशैकादशोऽध्यायः ॥

आणि । कदाचिदत्र गोधूमिभ्योत्तम मन्त्री तस्य पुत्रो वक्ष्यामः स्वैरं भुक्तानि

[illegible]

श्रीवत्सलपतिः

निर्गुणं सर्वत्र स्थितः केनचित् ।

नमोऽर्पितं त्रिपदेना श्रुतस्थितः दिवा ॥ ”
उक्तं: सपादा अस्य देवी मन्त्रिणः । दानमपहृषिकायां निपुणा

श्रीगणेशाय नमः । श्रीगणेशाय नमः । श्रीगणेशाय नमः ।

। अथ विष्णोः शक्तिः ।

ਪ੍ਰਸਿਦ੍ਧ : ਸ਼੍ਰੀ ਭਗਵਤ ਗਿਰੀ ਪ੍ਰਸਿਦ੍ਧਪੁਸ਼ਪਤੀ

— ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥

विष्णुविद्महे नमः ॥ १ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1. အခြေခံကျမ်းဂန်များကို အသုံးပြုနိုင်ရန်

പ്രകൃതിവിജ്ഞാന പ്രാബല്യം പ്രകാശിപ്പിക്കുന്നു, — വിജ്ഞാനം

[illegible]

अथर्वसि—शुभ्रावर्तनान्निविष्टातिष्ठत् सः ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1. ԲԵԼԻՍԻՆԻ ՆԻՐԱԼԱԿԵՐՍԻՄԻՆ ԽԱՆԷ ՆԻՐԱՌԱՌՈՒՄԷ ՏԻՈՒՄ 1275.

— ۲۲ —

" || རྒྱུ་བཀོད་པར་གསལ་བཤེས་པའི་མཁན་

(Faint handwritten notes at the bottom of the page)

[illegible][illegible][illegible]

— १५५ —

॥ माहेश्वर एवमेवमेव नमः ॥

1. 1941. 1942. 1943. 1944. 1945. 1946. 1947. 1948. 1949. 1950. 1951. 1952. 1953. 1954. 1955. 1956. 1957. 1958. 1959. 1960. 1961. 1962. 1963. 1964. 1965. 1966. 1967. 1968. 1969. 1970. 1971. 1972. 1973. 1974. 1975. 1976. 1977. 1978. 1979. 1980. 1981. 1982. 1983. 1984. 1985. 1986. 1987. 1988. 1989. 1990. 1991. 1992. 1993. 1994. 1995. 1996. 1997. 1998. 1999. 2000. 2001. 2002. 2003. 2004. 2005. 2006. 2007. 2008. 2009. 2010. 2011. 2012. 2013. 2014. 2015. 2016. 2017. 2018. 2019. 2020. 2021. 2022. 2023. 2024. 2025. 2026. 2027. 2028. 2029. 2030. 2031. 2032. 2033. 2034. 2035. 2036. 2037. 2038. 2039. 2040. 2041. 2042. 2043. 2044. 2045. 2046. 2047. 2048. 2049. 2050. 2051. 2052. 2053. 2054. 2055. 2056. 2057. 2058. 2059. 2060. 2061. 2062. 2063. 2064. 2065. 2066. 2067. 2068. 2069. 2070. 2071. 2072. 2073. 2074. 2075. 2076. 2077. 2078. 2079. 2080. 2081. 2082. 2083. 2084. 2085. 2086. 2087. 2088. 2089. 2090. 2091. 2092. 2093. 2094. 2095. 2096. 2097. 2098. 2099. 2100. 2101. 2102. 2103. 2104. 2105. 2106. 2107. 2108. 2109. 2110. 2111. 2112. 2113. 2114. 2115. 2116. 2117. 2118. 2119. 2120. 2121. 2122. 2123. 2124. 2125. 2126. 2127. 2128. 2129. 2130. 2131. 2132. 2133. 2134. 2135. 2136. 2137. 2138. 2139. 2140. 2141. 2142. 2143. 2144. 2145. 2146. 2147. 2148. 2149. 2150. 2151. 2152. 2153. 2154. 2155. 2156. 2157. 2158. 2159. 2160. 2161. 2162. 2163. 2164. 2165. 2166. 2167. 2168. 2169. 2170. 2171. 2172. 2173. 2174. 2175. 2176. 2177. 2178. 2179. 2180. 2181. 2182. 2183. 2184. 2185. 2186. 2187. 2188. 2189. 2190. 2191. 2192. 2193. 2194. 2195. 2196. 2197. 2198. 2199. 2200. 2201. 2202. 2203. 2204. 2205. 2206. 2207. 2208. 2209. 2210. 2211. 2212. 2213. 2214. 2215. 2216. 2217. 2218. 2219. 2220. 2221. 2222. 2223. 2224. 2225. 2226. 2227. 2228. 2229. 2230. 2231. 2232. 2233. 2234. 2235. 2236. 2237. 2238. 2239. 2240. 2241. 2242. 2243. 2244. 2245. 2246. 2247. 2248. 2249. 2250. 2251. 2252. 2253. 2254. 2255. 2256. 2257. 2258. 2259. 2260. 2261. 2262. 2263. 2264. 2265. 2266. 2267. 2268. 2269. 2270. 2271. 2272. 2273. 2274. 2275. 2276. 2277. 2278. 2279. 2280. 2281. 2282. 2283. 2284. 2285. 2286. 2287. 2288. 2289. 2290. 2291. 2292. 2293. 2294. 2295. 2296. 2297. 2298. 2299. 2300. 2301. 2302. 2303. 2304. 2305. 2306. 2307. 2308. 2309. 2310. 2311. 2312. 2313. 2314. 2315. 2316. 2317. 2318. 2319. 2320. 2321. 2322. 2323. 2324. 2325. 2326. 2327. 2328. 2329. 2330. 2331. 2332. 2333. 2334. 2335. 2336. 2337. 2338. 2339. 2340. 2341. 2342. 2343. 2344. 2345. 2346. 2347. 2348. 2349. 2350. 2351. 2352. 2353. 2354. 2355. 2356. 2357. 2358. 2359. 2360. 2361. 2362. 2363. 2364. 2365. 2366. 2367. 2368. 2369. 2370. 2371. 2372. 2373. 2374. 2375. 2376. 2377. 2378. 2379. 2380. 2381. 2382. 2383. 2384. 2385. 2386. 2387. 2388. 2389. 2390. 2391. 2392. 2393. 2394. 2395. 2396. 2397. 2398. 2399. 2400. 2401. 2402. 2403. 2404. 2405. 2406. 2407. 2408. 2409. 2410. 2411. 2412. 2413. 2414. 2415. 2416. 2417. 2418. 2419. 2420. 2421. 2422. 2423. 2424. 2425. 2426. 2427. 2428. 2429. 2430. 2431. 2432. 2433. 2434. 2435. 2436. 2437. 2438. 2439. 2440. 2441. 2442. 2443. 2444. 2445. 2446. 2447. 2448. 2449. 2450. 2451. 2452. 2453. 2454. 2455. 2456. 2457. 2458. 2459. 2460. 2461. 2462. 2463. 2464. 2465. 2466. 2467. 2468. 2469. 2470. 2471. 2472. 2473. 2474. 2475. 2476. 2477. 2478. 2479. 2480. 2481. 2482. 2483. 2484. 2485. 2486. 2487. 2488. 2489. 2490. 2491. 2492. 2493. 2494. 2495. 2496. 2497. 2498. 2499. 2500. 2501. 2502. 2503. 2504. 2505. 2506. 2507. 2508. 2509. 2510. 2511. 2512. 2513. 2514. 2515. 2516. 2517. 2518. 2519. 2520. 2521. 2522. 2523. 2524. 2525. 2526. 2527. 2528. 2529. 2530. 2531. 2532. 2533. 2534. 2535. 2536. 2537. 2538. 2539. 2540. 2541. 2542. 2543. 2544. 2545. 2546. 2547. 2548. 2549. 2550. 2551. 2552. 2553. 2554. 2555. 2556. 2557. 2558. 2559. 2560. 2561. 2562. 2563. 2564. 2565. 2566. 2567. 2568. 2569. 2570. 2571. 2572. 2573. 2574. 2575. 2576. 2577. 2578. 2579. 2580. 2581. 2582. 2583. 2584. 2585. 2586. 2587. 2588. 2589. 2590. 2591. 2592. 2593. 2594. 2595. 2596. 2597. 2598. 2599. 2600. 2601. 2602. 2603. 2604. 2605. 2606. 2607. 2608. 2609. 2610. 2611. 2612. 2613. 2614. 2615. 2616. 2617. 2618. 2619. 2620. 2621. 2622.

॥ अथ च! कर्माणां भवति हि भवति हि भवति हि भवति हि भवति हि ॥
॥ अथ च! कर्माणां भवति हि भवति हि भवति हि भवति हि भवति हि ॥

1. የህዝብ ጥቅም የሚባል ማንኛውንም ጥቅም

॥ शुभं भवतु ॥

[illegible][illegible]

॥ अथ भगवत्पुत्रोत्पत्तिश्च ॥

1. የግብርና ሚኒስቴር የግብርና ሚኒስቴር

मयं विपमान उरामवाङ्मनाः पतिपत्नीभ्यां विलीनमासः । ततः

“॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥”

[illegible]

॥ हस्तोऽङ्गुली च त्रिषु चोत्पल्लवोऽङ्गुली

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

—ਪ੍ਰਭ ਪ੍ਰਕਾਸ਼

निमालयपदं दत्त्वा पवनविद्वन्मते, न सता दृढयावापि महेत्तवम् ।

एवं भवमाप्यु देवात्म आनीमिमापुञ्ज्य सवर्गनीयुक्तिनाः केनाः

॥ पुष्टिपुष्टि ! नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

॥ केषां न प्रययन्ति तेन हि सिद्धं श्रीवसिष्ठोक्तम् ॥

10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846.

[illegible]

പുലിപാലം, പാലക്കാട് : 1954. പുലിപാലം,

| | | | | | | | | |
|----|-----|-----|-----|----|-----|-----|-----|---------|
| ३३ | ... | ... | ... | ३३ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ७ | ... | ... | ... | ३ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ३ | ... | ... | ... | १ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ३ | ... | ... | ... | २२ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ७५ | ... | ... | ... | १ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ०२ | ... | ... | ... | २१ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ३ | ... | ... | ... | २३ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ७३ | ... | ... | ... | ३५ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ५२ | ... | ... | ... | २ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ०३ | ... | ... | ... | १५ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| २२ | ... | ... | ... | ७३ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| २२ | ... | ... | ... | ०१ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ०३ | ... | ... | ... | २२ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ०२ | ... | ... | ... | २२ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ७३ | ... | ... | ... | ३ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| २२ | ... | ... | ... | ७१ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| १२ | ... | ... | ... | १२ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ७२ | ... | ... | ... | १० | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ७२ | ... | ... | ... | ३५ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ०२ | ... | ... | ... | ३३ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ७५ | ... | ... | ... | १२ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ७ | ... | ... | ... | ०२ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ७३ | ... | ... | ... | २१ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| २३ | ... | ... | ... | २२ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| २३ | ... | ... | ... | १५ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ७ | ... | ... | ... | २२ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ३३ | ... | ... | ... | ३ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| २२ | ... | ... | ... | ११ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| २ | ... | ... | ... | १ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ०३ | ... | ... | ... | ११ | ... | ... | ... | अविर्भा |
| ०३ | ... | ... | ... | १२ | ... | ... | ... | अविर्भा |

1
 2
 3
 4
 5
 6
 7
 8

been written by Harihara. Arisinha sang the good deeds of his patron in his *Sukrtasankhîrtana* and got a Śâsana Nothing is known of other poets Śankaraswami may be probably the Sankarâchârya of Dvârka of the time.

The manuscript material—The present edition is based on the single ms of the poem hitherto known, from the Bhandar of the Sangha in Phofalia Vâdâ at Pattan It is a very beautifully written paper ms. dated Samvat 1477 and is uniformly correct A few grammatical and metrical irregularities will be found in the poem, but in the absence of another ms. we cannot say whether they are of the original writer or of scribes The author himself with all humility requests the learned world to correct the faults which may have occurred in the present poem either through want of proper knowledge or haste.¹ The ms consists of 25 leaves with 15 lines on a page. The scribe's colophon runs as follows —

संवत् १४७७ वर्षे मार्गशीर्षवदि १४ चतुर्दश्यां बुधे लिखिता ॥ * ॥ श्रीः ॥ * ॥

The following is added, after this, in a different hand, showing that the ms. was purchased by the owner from the scribe for the religious merits of his mother:—

श्रीपार्श्वः श्रेयसे भूयाद्भवतां भवतान्तिभित् ।
 यत्सेवा कल्पवल्लीव दत्ते चित्तेप्सितं फलम् ॥ १ ॥
 अस्ति स्वस्तिपदं लक्ष्म्या स्वस्तिरस्कारकारकम् ।
 वडली नाम नगरं नगरङ्गत्वदालयम् ॥ २ ॥
 तत्राभूद्गान्धिकश्रेष्ठी प्राग्वाटज्ञातिमण्डनम् ।
 सूर्राहयः श्राद्धधर्मकर्मकर्मठमानसः ॥ ३ ॥
 रुपिणीति प्रिया तस्य पुत्राः सोमादयोऽभवन् ।
 गुणप्रपञ्चरुचिराः पञ्च पञ्चानना इव ॥ ४ ॥
 नरनारायणानन्दकाव्यं तेन यशस्विना ।
 स्वमातृश्रेयसे श्रेयो निजद्रव्येण लेखितम् ॥ ५ ॥

शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥ सं० १४७९ वर्षे वडलीग्रामवासिगां० सोमाकेन स्वमातृश्रेयसे नरनारायणानन्दकाव्यपुस्तिका लेखिता ॥ श्रीः ॥ ग्रन्थाग्रं १२५०.

- (1) उद्गात्स्वदिविद्यालयमयमनसः कोविदेन्द्रा वितन्द्रा
 मन्त्री वडाञ्जलियो विनयनशिरा याचने वस्तुपालः ।
 अन्यप्रजाप्रबोधदपि सपदि मया कल्पितेऽस्मिन्ग्रन्थे
 भूयो भूयोऽपि यूय जनन नयनक्षेपतो दोषमोपम् ॥

| | | | | | | | | | |
|----------------|-----|-----|-----|----|----------------|-----|-----|-----|----|
| सत्या प्रभुः | ... | ... | ... | ३ | दूती० | ... | ... | ... | ४१ |
| तस्याम्भोधेः | ... | ... | ... | २७ | दूर० | ... | ... | ... | ३० |
| तादृग्भासुर० | ... | ... | ... | १० | दूरात्० | ... | ... | ... | २८ |
| तादृशेरपि | ... | ... | ... | ३१ | दृग्भिः | ... | ... | ... | ४० |
| तापादन्तः | ... | ... | ... | २७ | दृग्मार्ग० | ... | ... | ... | २९ |
| तिमिर० | ... | ... | ... | १७ | दृग्वारि० | ... | ... | ... | ४० |
| तिमिवत् | ... | ... | ... | ११ | दृश्यः | ... | ... | ... | ७ |
| तिलकोऽपि | ... | ... | ... | १२ | दृष्टा | ... | ... | ... | ४१ |
| तीरस्थिते | ... | ... | ... | ३३ | देवः | ... | ... | ... | ५९ |
| तुरग० | ... | ... | ... | ५६ | देहे | ... | ... | ... | ५२ |
| तुरगाम० | ... | ... | ... | ५० | दोल्या | ... | ... | ... | ३१ |
| तेजोवह्निः | ... | ... | ... | ४ | दोल्याद्भुत० | ... | ... | ... | ३१ |
| तेन तोयज० | ... | ... | ... | ५ | दोष० | ... | ... | ... | ५ |
| तेन सार्द्ध | ... | ... | ... | ४६ | द्योत० | ... | ... | ... | ५ |
| ते प्रत्येकं | ... | ... | ... | २९ | द्रुततम० | ... | ... | ... | ५६ |
| त्वत्कीर्ति० | ... | ... | ... | ४१ | द्रुततर० | ... | ... | ... | ५७ |
| त्वदादेश० | ... | ... | ... | ४५ | द्रुतमनुजित० | ... | ... | ... | १५ |
| त्वमपि | ... | ... | ... | ८ | द्रुतमभिप्रियं | ... | ... | ... | १८ |
| त्वरितं | ... | ... | ... | १४ | द्वार० | ... | ... | ... | ६ |
| त्वा वंशपांसनं | ... | ... | ... | ४३ | द्वारि | ... | ... | ... | ६ |
| त्वा विभुं | ... | ... | ... | ७ | द्विरदेषु | ... | ... | ... | ५० |
| दधत्या | ... | ... | ... | ४२ | द्विपता | ... | ... | ... | ४१ |
| दन्त० | ... | ... | ... | ४३ | द्वेषि० | ... | ... | ... | ४६ |
| दन्ती | ... | ... | ... | २८ | धर्मोचिती | ... | ... | ... | ६० |
| दण्डितवर० | ... | ... | ... | २० | धातृद्विजाः | ... | ... | ... | २८ |
| दण्डितमधर० | ... | ... | ... | १९ | धामाधारः | ... | ... | ... | २६ |
| दर्शनं | ... | ... | ... | ४१ | धावत्तर्कर० | ... | ... | ... | ५६ |
| दहन्महाभैरि० | ... | ... | ... | ५४ | धिगगन्त | ... | ... | ... | ३९ |
| दातापि | ... | ... | ... | १ | धिगगयराज | ... | ... | ... | २८ |
| दायादता | ... | ... | ... | २४ | धीमता | ... | ... | ... | ५ |
| दारितारि० | ... | ... | ... | ४ | धीमान् | ... | ... | ... | २६ |
| दासीय | ... | ... | ... | १६ | धीरोऽसि | ... | ... | ... | ४० |
| दिवस० | ... | ... | ... | ९ | धृति | ... | ... | ... | १९ |
| दिशि | ... | ... | ... | १७ | धूम० | ... | ... | ... | २६ |
| दीप्तार्क० | ... | ... | ... | २५ | धौ० | ... | ... | ... | २८ |

| | | |
|-----------------------|----|----------------------|
| ध्रुवमभवत्० ... | २२ | निःसीम० ... |
| ध्रुवमवधि० ... | ८ | नीरार्द्र० ... |
| ध्रुवमस्ति ... | ३९ | नूनं नानेन ... |
| ध्रुवमालवाल० ... | १२ | नूनं विनिर्यत्० ... |
| ध्वनिः ... | ४३ | नैर्वायु० ... |
| नक्त दीप्तैः ... | २६ | नो चेद्यशस्ति ... |
| नक्तं भरेण ... | २४ | नो माति ... |
| नक्तं निरङ्कुशतया ... | २५ | न्यकृतानुल्य० ... |
| नक्तं शशाङ्कोपल० ... | २ | पतता ... |
| नतोऽपराधी ... | ३ | पतति ... |
| न निकरोपि ... | १७ | पतिता ... |
| ननृतेऽरि० ... | ५३ | पतितेऽपि ... |
| ननृते शरद्यवलया ... | १४ | पतितो ... |
| नभोनदी० ... | १ | पथिकाः ... |
| नरनारायणानन्दो ... | ६१ | पदताडनेऽपि ... |
| न रसन० ... | १९ | पद्मनाभ० ... |
| नवकुसुम० ... | १० | पद्मश्री० ... |
| नवपाटला० ... | १२ | पद्मे ... |
| नवरक्त० ... | ५१ | परधात० ... |
| न विधुन्तुद ... | ३९ | परमे ... |
| नागेन्द्र० ... | ६० | परसूर० ... |
| नारङ्ग० ... | २४ | परिकम्पतेऽद्य ... |
| नार्यः ... | ३३ | परिचित० ... |
| नासीर० ... | ३५ | परिणन्तुमुद्रय० ... |
| निम्रन्तं ... | ४६ | परिणयपरिणाहि ... |
| निजघान ... | ४९ | परिणयरय० ... |
| निजसुताः ... | १७ | परितः पतन्तु ... |
| निज ... | ४५ | परितः परि० ... |
| नितमां ... | १४ | परिनाप० ... |
| निविड० ... | २० | परिदलन० ... |
| निभृतमथ ... | ५७ | परिसुक्त० ... |
| नियत० ... | ९ | परिरम्भ० ... |
| निर्विप्रेके ... | ४६ | परिरम्भणे ... |
| निशित० ... | ५७ | परिरम्भपरप्रिया० ... |
| नि रोप० ... | २५ | परिरम्भपरम्परां ... |

| | | | | | | | |
|-------------------|-----|-----|----|-------------------|-----|-----|----|
| परिरम्भिणि ... | ... | ... | ४७ | प्रातर्जगत्य० ... | ... | ... | २४ |
| परिशोधित० ... | ... | ... | ३७ | प्रातः० ... | ... | ... | ३० |
| पह्येषु ... | ... | ... | ३१ | प्रासाद० ... | ... | ... | २३ |
| पवनः ... | ... | ... | ३८ | प्रासितं ... | ... | ... | ३० |
| पवित्र ... | ... | ... | ५८ | प्रियजन ... | ... | ... | १७ |
| परम ... | ... | ... | १० | प्रियतम० ... | ... | ... | २१ |
| पर्योण० ... | ... | ... | ४६ | प्रियतया ... | ... | ... | १६ |
| पुण्यस्य ... | ... | ... | ५९ | प्रियनिकेतन०... | ... | ... | १२ |
| पुपोष ... | ... | ... | ४ | प्रियनिर्विशेषमपि | ... | ... | ५१ |
| पुस्तकं ... | ... | ... | ५९ | प्रियालाम० . | ... | ... | १३ |
| पूरम्पूर ... | ... | ... | ५३ | प्रियवेश्म० ... | ... | ... | २२ |
| पूर्व ... | ... | ... | ३३ | प्रियद्वय० ... | ... | ... | ४० |
| पूर्वाज्ञाना० ... | ... | ... | २४ | प्रियासक्ते .. | ... | ... | ३१ |
| पूर्वावनी० ... | ... | ... | २५ | प्रेक्षित० .. | ... | ... | ३६ |
| पादपीठ० ... | ... | ... | ४ | प्रेमोत्तर . | ... | ... | २७ |
| पादप्रणामेऽपि... | ... | ... | ३७ | प्रौढप्रीती | ... | ... | ४२ |
| पादसम्पात० ... | ... | ... | ४४ | प्रौढोपनत० . . | ... | ... | ७४ |
| प्रकाशित० ... | ... | ... | ५५ | वधे ... | ... | ... | ४८ |
| प्रशात० ... | ... | ... | ३ | बलमिन्द्र० ... | ... | ... | ४८ |
| प्रणयिना० ... | ... | ... | १८ | बल्योर्बलिनो ... | ... | ... | ३ |
| प्रतिघात ... | ... | ... | ४९ | बलप्रदधःकुल्य ... | ... | ... | १३ |
| प्रतिदन्तिनां ... | ... | ... | १३ | बलिरिव . . | ... | ... | ५१ |
| प्रतिभित० .. | ... | ... | १० | बहुमांस० ... | ... | ... | २५ |
| प्रत्यग्र० ... | ... | ... | २७ | बालाशुमालि० | ... | ... | २८ |
| प्रथमधाम० ... | ... | ... | १७ | भयः ... | ... | ... | ६५ |
| प्रथममविदितानि | ... | ... | २२ | भयः . | ... | ... | ५१ |
| प्रथमादित० ... | ... | ... | ४७ | भवति ... | ... | ... | २ |
| प्रदेशोऽपि ... | ... | ... | २७ | भवत्प्रतापा० ... | ... | ... | ५६ |
| प्रचल० ... | ... | ... | १३ | भवन० ... | ... | ... | ४३ |
| प्रभाव० ... | ... | ... | ५३ | भयन्त ... | ... | ... | ६० |
| प्रभाविलासा ... | ... | ... | ५२ | भास्वत्यभाव० .. | ... | ... | ३५ |
| प्रमद० ... | ... | ... | ९ | भिक्षु० .. | ... | ... | २१ |
| प्रस्तुता० ... | ... | ... | ५ | भिक्षुः० ... | ... | ... | ६ |
| प्रदिता ... | ... | ... | ५० | भुक्ति ... | ... | ... | २१ |
| प्राग्रा० ... | ... | ... | ५० | भुक्ति ... | ... | ... | २१ |

| | | | | | | | | | |
|-------|-----|-----|-----|-----|----------------|-----|-----|-----|----|
| अरुणः | ... | ... | ... | ४६ | सुनि० | ... | ... | ... | १३ |
| अरुणः | ... | ... | ... | २७ | सुहृदि | ... | ... | ... | १९ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ३५ | सू० | ... | ... | ... | ४३ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ६ | मूल० | ... | ... | ... | २२ |
| अरुणः | ... | ... | ... | २ | मौली | ... | ... | ... | २३ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ९ | मूलनं | ... | ... | ... | २४ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ५० | य. काम० | ... | ... | ... | ६१ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ४६ | यः परेः | ... | ... | ... | ६ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ३ | यशस्व | ... | ... | ... | ५४ |
| अरुणः | ... | ... | ... | १७ | यतीन्द्र० | ... | ... | ... | २ |
| अरुणः | ... | ... | ... | १४ | यचोन्मुग | ... | ... | ... | १ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ४० | यत्केश० | ... | ... | ... | ३१ |
| अरुणः | ... | ... | ... | २० | यत्सहस्र० | ... | ... | ... | ३२ |
| अरुणः | ... | ... | ... | १९ | यथार्थ० | ... | ... | ... | ४३ |
| अरुणः | ... | ... | ... | २ | यशस्वतुदर० | ... | ... | ... | ५१ |
| अरुणः | ... | ... | ... | १९ | यशस्वमभि० | ... | ... | ... | १ |
| अरुणः | ... | ... | ... | १९ | यदि | ... | ... | ... | १३ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ३५ | यम० | ... | ... | ... | ४९ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ३६ | यथा | ... | ... | ... | ४० |
| अरुणः | ... | ... | ... | २८ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ३४ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ३५ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ३५ |
| अरुणः | ... | ... | ... | १० | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ३६ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ३८ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ३७ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ४० | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ३८ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ४२ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ३९ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ४४ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ४० |
| अरुणः | ... | ... | ... | ४६ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ४१ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ४८ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ४२ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ५० | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ४३ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ५२ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ४४ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ५४ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ४५ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ५६ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ४६ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ५८ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ४७ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ६० | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ४८ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ६२ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ४९ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ६४ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ५० |
| अरुणः | ... | ... | ... | ६६ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ५१ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ६८ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ५२ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ७० | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ५३ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ७२ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ५४ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ७४ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ५५ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ७६ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ५६ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ७८ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ५७ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ८० | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ५८ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ८२ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ५९ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ८४ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ६० |
| अरुणः | ... | ... | ... | ८६ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ६१ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ८८ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ६२ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ९० | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ६३ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ९२ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ६४ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ९४ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ६५ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ९६ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ६६ |
| अरुणः | ... | ... | ... | ९८ | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ६७ |
| अरुणः | ... | ... | ... | १०० | यथाः सपौर्ण्य० | ... | ... | ... | ६८ |

| | | | | | | | |
|-------------------|-----|-----|----|-----------------------|-----|-----|----|
| यं मातृभक्ति० ... | ... | ... | ६० | रसवशग० ... | ... | ... | २६ |
| वाचिष्यते ... | ... | ... | २५ | रसविवश० ... | ... | ... | ५७ |
| या ददे ... | ... | ... | ३२ | रागो ... | ... | ... | २४ |
| यावदाहयति ... | ... | ... | ६ | राधां ... | ... | ... | ४४ |
| या श्रीः ... | ... | ... | ३७ | रिपुनिकर० ... | ... | ... | ५४ |
| युधि ... | ... | ... | ४९ | रुचितमभिमतेषु ... | ... | ... | २६ |
| युध्य ... | ... | ... | ५५ | रे चौर ... | ... | ... | ४४ |
| युवतिषु ... | ... | ... | २० | रेणौ ... | ... | ... | २६ |
| ये उभे ... | ... | ... | ५ | रोदित्यसौ .. | ... | ... | २ |
| योपितः ... | ... | ... | ३१ | रोधस्तटेभ्यः ... | ... | ... | ३४ |
| यौवनोष्म० .. | ... | ... | ३२ | रोपागेपाद्भुज्या० ... | ... | ... | ५५ |
| रचित० ... | ... | ... | २२ | रोमराजि० ... | ... | ... | २० |
| रतिजानि० ... | ... | ... | १४ | लघुतां ... | ... | ... | १४ |
| रत्नपादासने० ... | ... | ... | ४२ | रदग्या० ... | ... | ... | ५५ |
| रत्नश्रेणी० ... | ... | ... | २६ | लावण्य० ... | ... | ... | २६ |
| रथचिह्नकृति० ... | ... | ... | ४८ | लीलागतिं .. | ... | ... | २५ |
| रथमेक० ... | ... | ... | ४९ | लीलामीत्पट्टि० .. | ... | ... | २० |
| रथस्त्रज्जन० ... | ... | ... | ४२ | लीलासमुत्पत्ति० ... | ... | ... | २० |
| रथारोहेऽय ... | ... | ... | ४२ | लक्ष्मणपुष्प० .. | ... | ... | २० |
| रथास्य० ... | ... | ... | ४२ | लोचनीताल० .. | ... | ... | २० |
| रथिनां .. | ... | ... | ५० | लोला .. | ... | ... | ४२ |
| रथिनामिव ... | ... | ... | ४८ | लोलाटोल० .. | ... | ... | ५६ |
| रथिपति० .. | ... | ... | ७ | लोले जलार्द्र० .. | ... | ... | २० |
| रणदूर्य० ... | ... | ... | ५० | वधो .. | ... | ... | २० |
| रणभक्त० .. | ... | ... | ४९ | मध्यः .. | ... | ... | २० |
| रणमूर्च्छिनि .. | ... | ... | ५९ | मनसात् ० .. | ... | ... | २० |
| रणमीमि ... | ... | ... | ५० | मनाग्रेण .. | ... | ... | २० |
| रभसचमल० ... | ... | ... | १८ | मलात्तां .. | ... | ... | २० |
| रभसदरित० .. | ... | ... | २० | मलात्तां .. | ... | ... | २० |
| रभसभर० ... | ... | ... | २२ | मलात्तां .. | ... | ... | २० |
| रमणी० ... | ... | ... | २९ | मलात्तां .. | ... | ... | २० |
| रमिव रोदति० ... | ... | ... | १६ | मलात्तां .. | ... | ... | २० |
| रमिभट्टिरिव .. | ... | ... | १६ | मलात्तां .. | ... | ... | २० |
| रमिरमर .. | ... | ... | १६ | मलात्तां .. | ... | ... | २० |
| रसगतिं .. | ... | ... | १६ | मलात्तां .. | ... | ... | २० |

| | | | |
|--------------------|----|---------------------|----|
| वक्षोजशैला० | ३६ | व्यक्तं | २६ |
| वक्षोजापतितैः... | ४० | व्यययत्ययं | ३८ |
| वक्षोरुहाडम्बर० | ३ | व्याम० | ३१ |
| वादेवतां | ५८ | व्यालावली० | ५४ |
| वाति स्म | २३ | गङ्गेऽवतंता० | ३५ |
| वाह्मैर्मरुत्वरैः | ४३ | गङ्गे तदा | ३४ |
| विघटमान० | १५ | गङ्गे शारद० | ६१ |
| विघटितेऽपि | १६ | शरजाल० | ३८ |
| विजयिनि | ५७ | शरदः स्फुरत्० | १३ |
| विज्ञाया | ४१ | शरदिन्दुमुखि | ३८ |
| विदधेऽश्रु० | ३९ | शर्वरीश्वर० | ५४ |
| विदारितं | ३ | शशिनि | १७ |
| विदितं | १४ | शशिमणि० | १० |
| विधु० | ५८ | शास्त्रार्थ० | ५९ |
| विरह० | ४० | शितिकण्ठ० | १२ |
| विरहातुर० | ३९ | शायिल० | ५८ |
| विरहानल० | ३९ | शिशिरस्ततान | १४ |
| विरहिणा | १५ | शुचिना | १२ |
| विरहोद्भव० | ३९ | शूरः | ५३ |
| विरुद्धः | ४५ | शूरो | ४७ |
| विलम्बयति | ४५ | शैलेन्द्र० | ७ |
| विविधायुध० | ४० | शोभाभिभूत० | ५८ |
| विशति | १८ | शौर्यधैर्यावधौ | ४६ |
| विश्वतीर्थ० | ६ | श्रमविहित० | ९ |
| विश्वाधार | २६ | श्रीचन्दन० | २३ |
| विसृमर० | ९ | श्रीरत्न० | ५९ |
| विस्पष्ट० | २५ | श्रीवस्तुपाल कलि० | ११ |
| वीरः कुचक्षमावर० | ३७ | श्रीवस्तुपाल जिन० | ५१ |
| वीरनन्दक० | ५३ | श्रीवस्तुपालसचिवस्य | ३० |
| वृत्ते | ४३ | श्रीवास० | ५९ |
| वृद्धः | ३६ | श्रीराजुञ्जय० | ६१ |
| वेगेनाहम्भृत्पिका० | २६ | श्रेष्ठे | ४५ |
| वेगिनेत्र० | ६ | मकल० | ९ |
| दैनिवार० | ५ | म कुन्दीनः | ४५ |
| दैनिवार० | ५ | मङ्गल० | ३४ |

CONTENTS

1870

| | |
|---|-----|
| Index | 1 |
| Corrigenda | 2 |
| Notes of Vastupala's image in Lepid's temple on Mt. Abu | 3 |
| 1. <i>ganesha-temple</i> | 4 |
| II. <i>ganesha-temple</i> | 5 |
| III. <i>ganesha-temple</i> | 6 |
| (1) <i>ganesha-temple</i> | 7 |
| (2) <i>ganesha-temple</i> | 8 |
| (3) <i>ganesha-temple</i> | 9 |
| (4) <i>ganesha-temple</i> | 10 |
| (5) <i>ganesha-temple</i> | 11 |
| (6) <i>ganesha-temple</i> | 12 |
| (7) <i>ganesha-temple</i> | 13 |
| (8) <i>ganesha-temple</i> | 14 |
| (9) <i>ganesha-temple</i> | 15 |
| (10) <i>ganesha-temple</i> | 16 |
| (11) <i>ganesha-temple</i> | 17 |
| (12) <i>ganesha-temple</i> | 18 |
| (13) <i>ganesha-temple</i> | 19 |
| (14) <i>ganesha-temple</i> | 20 |
| (15) <i>ganesha-temple</i> | 21 |
| (16) <i>ganesha-temple</i> | 22 |
| (17) <i>ganesha-temple</i> | 23 |
| (18) <i>ganesha-temple</i> | 24 |
| (19) <i>ganesha-temple</i> | 25 |
| (20) <i>ganesha-temple</i> | 26 |
| (21) <i>ganesha-temple</i> | 27 |
| (22) <i>ganesha-temple</i> | 28 |
| (23) <i>ganesha-temple</i> | 29 |
| (24) <i>ganesha-temple</i> | 30 |
| (25) <i>ganesha-temple</i> | 31 |
| (26) <i>ganesha-temple</i> | 32 |
| (27) <i>ganesha-temple</i> | 33 |
| (28) <i>ganesha-temple</i> | 34 |
| (29) <i>ganesha-temple</i> | 35 |
| (30) <i>ganesha-temple</i> | 36 |
| (31) <i>ganesha-temple</i> | 37 |
| (32) <i>ganesha-temple</i> | 38 |
| (33) <i>ganesha-temple</i> | 39 |
| (34) <i>ganesha-temple</i> | 40 |
| (35) <i>ganesha-temple</i> | 41 |
| (36) <i>ganesha-temple</i> | 42 |
| (37) <i>ganesha-temple</i> | 43 |
| (38) <i>ganesha-temple</i> | 44 |
| (39) <i>ganesha-temple</i> | 45 |
| (40) <i>ganesha-temple</i> | 46 |
| (41) <i>ganesha-temple</i> | 47 |
| (42) <i>ganesha-temple</i> | 48 |
| (43) <i>ganesha-temple</i> | 49 |
| (44) <i>ganesha-temple</i> | 50 |
| (45) <i>ganesha-temple</i> | 51 |
| (46) <i>ganesha-temple</i> | 52 |
| (47) <i>ganesha-temple</i> | 53 |
| (48) <i>ganesha-temple</i> | 54 |
| (49) <i>ganesha-temple</i> | 55 |
| (50) <i>ganesha-temple</i> | 56 |
| (51) <i>ganesha-temple</i> | 57 |
| (52) <i>ganesha-temple</i> | 58 |
| (53) <i>ganesha-temple</i> | 59 |
| (54) <i>ganesha-temple</i> | 60 |
| (55) <i>ganesha-temple</i> | 61 |
| (56) <i>ganesha-temple</i> | 62 |
| (57) <i>ganesha-temple</i> | 63 |
| (58) <i>ganesha-temple</i> | 64 |
| (59) <i>ganesha-temple</i> | 65 |
| (60) <i>ganesha-temple</i> | 66 |
| (61) <i>ganesha-temple</i> | 67 |
| (62) <i>ganesha-temple</i> | 68 |
| (63) <i>ganesha-temple</i> | 69 |
| (64) <i>ganesha-temple</i> | 70 |
| (65) <i>ganesha-temple</i> | 71 |
| (66) <i>ganesha-temple</i> | 72 |
| (67) <i>ganesha-temple</i> | 73 |
| (68) <i>ganesha-temple</i> | 74 |
| (69) <i>ganesha-temple</i> | 75 |
| (70) <i>ganesha-temple</i> | 76 |
| (71) <i>ganesha-temple</i> | 77 |
| (72) <i>ganesha-temple</i> | 78 |
| (73) <i>ganesha-temple</i> | 79 |
| (74) <i>ganesha-temple</i> | 80 |
| (75) <i>ganesha-temple</i> | 81 |
| (76) <i>ganesha-temple</i> | 82 |
| (77) <i>ganesha-temple</i> | 83 |
| (78) <i>ganesha-temple</i> | 84 |
| (79) <i>ganesha-temple</i> | 85 |
| (80) <i>ganesha-temple</i> | 86 |
| (81) <i>ganesha-temple</i> | 87 |
| (82) <i>ganesha-temple</i> | 88 |
| (83) <i>ganesha-temple</i> | 89 |
| (84) <i>ganesha-temple</i> | 90 |
| (85) <i>ganesha-temple</i> | 91 |
| (86) <i>ganesha-temple</i> | 92 |
| (87) <i>ganesha-temple</i> | 93 |
| (88) <i>ganesha-temple</i> | 94 |
| (89) <i>ganesha-temple</i> | 95 |
| (90) <i>ganesha-temple</i> | 96 |
| (91) <i>ganesha-temple</i> | 97 |
| (92) <i>ganesha-temple</i> | 98 |
| (93) <i>ganesha-temple</i> | 99 |
| (94) <i>ganesha-temple</i> | 100 |



2

प्राचयवाणि^१कमणोरसुनि कमेण रेणुत्वमयनि यत्र ॥ २६ ॥
 तस्यां प्रसुतिरुत्तरद्विभवतद्वा यादवमालिरताम् ।
 तद्वाक्यैः सपुत्रिणालदमालिकद्विप कृष्णानिः ॥ २६ ॥
 कामादकानन्दकला^२यकामि^३र चविद्वजनिमिभविषिः ।
 यस्यानामवाप यदुसुवस्य सु^४त्रिप्राणि चरुसुता ॥ २७ ॥
 मन्त्रायतनस्य मण्यमोऽयमार्वादिना सा स विद्यापि सिन्धुः ।
 रत्नय नं प्रविष्टं स त्वे द्विने द्विने द्विने द्विने ॥ २८ ॥
 यद्विद्वत्तन्मन्त्रायतनस्यः प्रियायाः पुत्र्याविने ॥
 सस्मा यः कृष्णपरिवारं विन्दुमन्मन्त्रकन्दवधम् ॥ २९ ॥
 ममः सुखं द्रव्यिष्येऽपि पर्के यः दमार्पितद्विपुद्विषमोऽयम् ।
 परादेसुर्नरिप तस्य नाति स्वेच्छाविजसं सनापितुमसः ॥ ३० ॥
 विद्वदिने वराविहाद^५भरः सुतरद्वल्लिखेव ।
 व्यापारिना भूत गुह्यवन्तं तन्मन्त्रतनुं यनस्तं द्विषेव ॥ ३१ ॥
 वलदयःश्रुत्वा वलि सुरारिः पुनः प्राने सुवि द्रौष्ट्यदर्शनाम् ।
 चिरादिराकसुनिताय द्वाप द्वां द्वां स ततोऽधिकं यः ॥ ३२ ॥
 भवप्रतापसद्वतः सदेतकोऽभ्युदयनिस्तुस्वविद्वान्मा ।
 रतान्तान्ता^६पि सुमोच विद्वं प्रो सदेसाञ्जिनाकोपना यः ॥ ३३ ॥
 नतोऽपराधा पदयोः प्रियाया निजाप्यविद्यानि नवेतु धौष्ट्य ।
 स्मरन्देवार्वाविषयामये वसुधैवकुर्वन्ममयः ॥ ३४ ॥
 स्वापु^७द्विरःस्यातलनेत्रदीपं संसृज्य धारि^८पि रजोऽन्वकारे ।
 ममविषयो बाणवलेतु बाणाञ्चयेतु मन्त्रमयमद्विषयः ॥ ३५ ॥
 जयान युद्धे देवं वादेर्नो^९रसां सुखं देव कृपा यः ।
 प्रियासु^{१०}नेपां वदेत्तरिपयत्त कृपाद्विनेता नयनैः सवायैः ॥ ३६ ॥
 साधव्यमालि प्रमदसि साभिन् दाने पुनर्मणिममोहलेतु ।
 प्रमयसुद्वारिणामस्य यस्य द्विपा विद्वेता खलु भूदद्वेष्ट ॥ ३७ ॥
 असां प्रजाः पाति प्रिनेव तित्थं नयप्रवीणा इति वृष्टिस्तम् ।
 सूता न जानन्त्युदरोत्थविषयः स एव मालापि प्रितापि तासां ॥ ३८ ॥
 अपि विद्वेकोपरमार्थवेदी नोपाय नेपां सविद्वेत्सोऽपि ।
 अज्ञानपुर्व्वरिप कविद्वेतां संकैश्चमकारमिवाचचार ॥ ३९ ॥
 प्रज्ञानतत्त्वोऽपि पपाठ शोचिणमन्त्रमन्त्रमन्त्रिणान् च कायैः ।

हरसोमनि कृतोऽनघनीत्यादिद्वयो नवनवाग्रिभूयः ।
 मन्त्रिमित्रकविकेसिसमादां सम्यैव संपादं न्यवारयत् ॥ २२ ॥
 अर्थिनां ह्युपमानरथातिनां तेन किञ्चन तथा ददं तदा ।
 तैव्या संपादं तस्य सान्तिद्वारि कल्पनकानाधिपतम् ॥ २३ ॥
 आपनद्वारिबालासिनीजनेर्गुरुरवनिननरिनिस्तम्भैः ।

स्वाधिनो न चक्रे सभाजनप्रसूतिजलपल्लवसंभवः ॥ २४ ॥
 स प्रभुः स्मरवर्धः सभासमिहान्तमपवदन्तिषु विस्मिताञ्जलिः ।
 वारवाभानयनजनेरवष्टमसम्भ्रममिषुण सस्वजे ॥ २५ ॥
 पञ्चनभपदपद्मसुखमनमसिमतसुखैः कर्मण सा ।
 राजहंसनिकरैर्युयुन श्रीविजलसुरसदोषिका सभा ॥ २६ ॥

उज्ज्वलधनकैरवा रुरसोपलपयिष्वनरुद्धसङ्गतिः ।

कुर्वेल्लोकेनकरस्युज्ज्वला नन्मुवेन्दुपुरतः सभा वभौ ॥ २७ ॥

दोरामपठलिनदंनदोषिषतिः शोषरोक्तिनकरस्युज्ज्वलधयः ।

वेज्यते यदामनादिरः पुरतं तदां स्युजितं व्यजिज्ञेयत् ॥ २८ ॥

द्वारि निष्ठति चिरदिवादिनो रैवनादिद्वनपणलपुण्यः ।

नन्मुवेन्दुचिराचने दंयष्टिचने चलचकोरचाङ्गा ॥ २९ ॥

सुष सज्जनमनःसरोजिनोदेससंसदंमुषुषि याति वा ।

देत्यवेत्य मुक्तिं व्यकम्पयन्मवेदनाञ्जनेऽय केदवः ॥ ३० ॥

यावदंद्दुषति न न वेज्यतेवावर्त्यनिनया नमस्तलम् ।

द्वैतिशब्दं देव तस्य निम्नो विष्णुमौलिजिह्वालिमालया ॥ ३१ ॥

वैजितेवचलान्तालः सभां स प्रविश्य च विनम्य च प्रभुम् ।

सर्वकालसकलपुमालिनो रैवतस्य कुसुमानयदौकयत् ॥ ३२ ॥

तस्य ह्युपनिषदं तस्य च शोणादिश्वनापयवदंनान्ध्रजस्य च ।

नन्मनोरमरसनिमयफलदां पदपदां विदंविरे विषयुषम् ॥ ३३ ॥

युननाविजलिमनोरितः प्रभाः प्राचलितदंष्ट्रं स व्यजिज्ञेयत् ।

मन्दसम्यदंष्ट्रमनोरितो रैवतस्य वदंष्ट्रमनया निर ॥ ३४ ॥

यः पुरः कविददंष्ट्रमनोरितं मनसा मुदंमतः ।

यः परस्परकामिनीपरदंष्ट्रमनोरितः सान्तिद्वारिः ॥ ३५ ॥

विजयदंष्ट्रमनोरितं परस्परवदंष्ट्रमनोरितः सभासतः ।

स प्रभुस्युजितं सभासोऽङ्गां स्युजितमनोरितं पाण्डित्यदम् ॥ ३६ ॥

तद्वचःश्रवणसम्मदामृतस्नानपावनतरान्तरात्मनि ।

दीयतां किमु तवेति जल्पति श्रीपतौ स्मितमुखं जगाद सः ॥ ३७ ॥

त्वां विभुं प्रतिभुवं दिवाकरादर्थयेऽन्वहमहर्मुखेष्वहम् ।

याचितेन जगदीश दीयते तोषिणा तदधिकं किमु त्वया ॥ ३८ ॥

तस्मै ददावथ मुरारिरपारतोष-

स्तत्पारितोषिकाविभूषणवाहनादि ।

ज्ञातो बहिः सहचरैरपि मोहवद्भि-

यैनेप सोऽहमिति क्लृप्तवचा विनिर्यन् ॥ ३९ ॥

शैलेन्द्रचूतवदरीवनखेलितानि

तानि स्मरन्निव भवान्तरलालितानि ।

रन्तुं नरेण सह रैवतकावनीषु

नारायणोऽजनि समुत्सुकचित्तवृत्तिः ॥ ४० ॥

इति श्रीगूर्जरेश्वरमहामात्यश्रीवसन्तपालविरचिते नरनारायणानन्दनाथि

महाकाव्ये सभावर्णनो नाम द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥

दृश्यः कस्यापि नाऽयं प्रययति न परमार्थनादैर्न्यमन्य-

स्तुच्छामिच्छां विधत्ते तनुहृदयतया कोऽपि नैषुण्यपण्यः ।

इत्थं कल्पद्रुमेऽस्मिन्वसनपरवशं लोकमालोक्य सृष्टः

स्पष्टं श्रीवस्तुपालः कथमपि विधिना नूतनः कल्पवृक्षः ॥ २ ॥

तृतीयः सर्गः

अथ कथमपि कल्पकोटिकल्पं क्षणमपि निर्गमयाम्बभूव देवः ।

नरपरिचयसत्त्वरो रथैकप्रगुणनसम्भ्रमनिर्भरेऽपि सूते ॥ १ ॥

अथ रथमभजद्भुजासहायो बलमपि बल्लभमप्रतीक्षमाणः

रणरणकंवलेन पाण्डुसूतोः सपदि वशीकृतमानसो मुरारिः ॥ २ ॥

हृदयमपि विभो रयाज्जयद्भिर्नरपरिम्भमनोरथातिकृष्टम् ।

रथचलननियोगतुल्यकालं हरिभिरभूष्यत रैवतोपकण्ठः ॥ ३ ॥

रथिपतिरयमेति कोऽतिदूरे निगदति यावदिदं दृदैव पार्थः ।

त्वरितममुमुपेत्य तावदभ्युत्थितिकृतसम्भ्रममालिलिङ्ग विष्णुः ॥ ४ ॥

इह हृदि सुहृदः सदाऽस्मि नो वा ध्रुवमिति वीक्षितुमभ्युनाहुर्न

दृढतरपरिरम्भकैतवेन प्रकटमकाङ्क्षि सिथोऽपि हृत्प्रवेशः ॥ ५ ॥
 यदयमधिपतिर्व्यधत्त जिष्णोर्भुजपरिरम्भनिपीडनं तदानीम् ।
 यदि तदुदधिमन्थने वितन्यात्तदिह भवेन्न लवोऽपि मन्दरस्य ॥ ६ ॥
 चिरसमयसमागमोत्कपार्थप्रचलभुजापरिरम्भसम्भ्रमेण ।
 हरिजठरजगन्मुमूर्च्छ नैव प्रमदसुधारससेकतः कथञ्चित् ॥ ७ ॥
 सुहृदयममुमवाप्य सव्यसाची किमपि तदूर्जितमर्जयाम्बभूव ।
 प्रभुरयमुदपादि येन विश्वत्रयनिलयः परिरम्भलीलयैव ॥ ८ ॥
 समजनि परिरम्भणेन नारायणनरयोरिह कोऽपि स प्रमोदः ।
 परमपदलोऽपि निःस्पृहोऽपि व्रतिनिवहः स्पृहयाम्बभूव यस्मै ॥ ९ ॥
 अपुनरपसृतिप्रपञ्चभाजोरिव परिरम्भभरे तयोर्विभेदम् ।
 विपुलपुलकदण्डकैर्मिथोन्तर्गतपरिभाषणकौतुकानि तेन ॥ १० ॥
 उरसि रसिकयोस्तयोः प्रमोदाद्दृढपरिरम्भविभिन्नभूषणेऽपि ।
 द्रुतमतनुन तारहारलक्ष्मीं स्मितरुचिविच्छुरिताश्रुविन्दुपङ्क्तिः ॥ ११ ॥
 कथय कथय पार्थ तीर्थयात्रां विरचितवानसि कुत्र कुत्र तीर्थे ।
 जनय नयनयोर्विकीर्णतोष श्रवणपथं सुकृतिन् कृतार्थमेनम् ॥ १२ ॥
 इति गदति तदा गदाग्रजेऽस्मिन्नुदितमुदि स्मितभस्मितेन्दुशोभे ।
 अमृतरुचमुवाच वाचमैन्द्रिः प्रमदरसप्रसरप्रसत्तिभाजम् ॥ १३ ॥ (युग्मम्)
 ध्रुवमवधिमपूरयं पुराऽहं नियमितकाननवासवासराणाम् ।
 न्वयि पुनरवलोकिते ममाभूच्चिभुवनतीर्थमयेऽय तीर्थयात्रा ॥ १४ ॥
 न्वमपि मदवलोकमदृचोभिर्यदि मुदमुदहसि त्रिलोकनाथ ।
 तदिनि फलमदत्त भाग्यवद्विर्मयि तव भालनिभालनोद्भवैव ॥ १५ ॥
 इति परमपरस्परानुरागप्रगुणितगौरवगौरवाग्विवेकां ।
 गृह्णन्ति विहसिन्तां विलेखन्तुम्नां मृदुगति रैवतकावनीवनीषु ॥ १६ ॥
 हृद इव मुहृदः पुरो नमस्य स्वयमथ मङ्गल्ययाम्बभूव विष्णुः ।
 निजजनगगनगम्य रैवतस्य युतिजितदैवतपर्वतस्य शोभाम् ॥ १७ ॥
 गुणरगनमर्हान्तादिकन्दोऽवनिवनिनानवकेठापाशयन्धः ।
 अवितनगतिनिवृत्तदक्षकन्याविन्दगनभूमिरयं मनो धिनोति ॥ १८ ॥
 मरुदिव्यदिनर्षमिकामु भाल्यनारनरगुनिमण्डलायलुभाः ।
 दृष्ट्वा तन्महामहामुहूर्त्तकोन्दाद्वयकर्मिणः कथयन्ति पन्थगाः स्वम् ॥ १९ ॥
 भुवि दृष्ट्वा तन्महामहामुहूर्त्तकोन्दाद्वयकर्मिणः कथयन्ति पन्थगाः स्वम् ॥ १९ ॥
 भुवि दृष्ट्वा तन्महामहामुहूर्त्तकोन्दाद्वयकर्मिणः कथयन्ति पन्थगाः स्वम् ॥ १९ ॥

इह शिखरिणि गण्डभित्तिकण्ठयनमपि सानुषु दिग्गजाः सृजन्ति ॥२०॥
 नियतमधिदिताभिरन्तराले स्फटिकतटीभिरिह स्खलन्ति वाणाः ।
 शनैरकरसमुद्भिज्ञताः पञ्चनाभिय सुकृतेन कृताभिरुज्ज्वलेन ॥ २१ ॥
 उपरितनशिरःसरःसु लोकान्तरितमपि द्युमणिं निरूपयन्तः ।
 इह न विरटिणां भवन्ति कोंका निशि विसिनीनिचया न सङ्कुचन्ति ॥२२॥
 उपरितनयनाग्रनीषु नीचैश्चलजलदास्विह चातकाः स्मयन्ते ।
 जलकणनिकरैर्निकाममब्दभ्रमदसगब्दयनेभहस्तमुक्तैः ॥ २३ ॥
 इह तटविनिवेशिराजसुरे परिणतादिग्गजकर्णतालवीज्ये ।
 तरलिततडिदायुधा ध्वनन्तः क्षितिभृति भ्रान्ति पयोभृतोऽङ्गरक्षाः ॥ २४ ॥
 अरुणमणिगणप्रणङ्गमूर्त्तैरलिकुलकोकिलकोमलद्युतोऽस्य ।
 प्रसरति परितो वपुष्यमान्ती द्युतिपटलीव तडित्वतां मिषेण ॥ २५ ॥
 भ्रमविहितफलाय नेह कोंऽपि स्पृहयति गूढनिधानमण्डलाय ।
 यदयमनुपदं जनार्णमुद्धादितपटुरत्ननिधानभूतसानुः ॥ २६ ॥
 इह विवरपथस्पृशः कदाचिद्गुरुशिखराधिकृहः कदाचिदेते ।
 भुजगजगति वा नभस्तले वा सुरसरितं मुनयः श्रयन्ति शुद्ध्यै ॥ २७ ॥
 अनवरतरसार्द्रदृष्टिलीलाविशदमरीचित्रङ्गभासमानः ।
 त्वमिव हृदि निरन्तरं मदीये निवसति सानुचरः सुरव्रजोऽस्मिन् ॥२८॥
 मणितमभिनयन्तु मङ्गु पारापतपतगेषु विशोषितानुरागाः ।
 अनुकृतचटुषु स्वयं शुकेषु प्रियमिह मानमुचः स्त्रियः श्रयन्ते ॥ २९ ॥
 विसृमरतिमिरे गुहागृहे स्त्रीरसविवशेषु चिरं वनेचरेषु ।
 द्रुतकृतशमितैस्तडित्प्रदीपैर्निनदति खिन्न इवेह वारिवाहः ॥ ३० ॥
 दिवसविवशमन्धकारमेव स्वकुहरसीमनि रक्षति क्षितिधुः ।
 रजनिजनिततामसप्रसन्नं दिवसमपि ज्वलदौषधिच्छलेन ॥ ३१ ॥
 इह यदकृत तिर्यग्गङ्गमिश्रा रुचिरकुचाः सुमुखीश्च किलरस्त्रीः ।
 सततनतिरतासु तेन मन्ये विबुधवधेषु विधिर्भृशं प्रसन्नः ॥ ३२ ॥
 सकलमकलनीयमेव देवैरपि धरणीधरणप्रवीणशक्तिम् ।
 शिखरिणममुमद्य पश्यतस्त्वामिव किमु तृप्यतु नेत्रयोर्द्वयं मे ॥ ३३ ॥
 प्रपदवनभिदं तदीयमग्रे प्रमुदितमस्य गिरैरुपत्यक्रासु ।

तस्य चित्तमिति प्रमाणं तत्रैव चित्तमिति न तत्रैव तत्रैव तत्रैव ॥ ३४ ॥

जातिमिति तत्रैव तत्रैव तत्रैव तत्रैव तत्रैव तत्रैव तत्रैव तत्रैव ॥ ३५ ॥

प्रत्यक्षमिति तत्रैव तत्रैव तत्रैव तत्रैव तत्रैव तत्रैव तत्रैव तत्रैव ॥ ३६ ॥

प्रतिबिम्बनिजमुक्तिर्विशेषेण तत्रैव तत्रैव तत्रैव तत्रैव तत्रैव ॥ ३७ ॥

अपि रजनिम् निविष्टं विद्यायाधित्वा विदितं न विदितं तत्रैव तत्रैव ॥ ३८ ॥

मभिर्गतिगुणैर्गिरीन्डवन्तागतगजिज्जालमगतावेतिभिर्गतिभिः ॥ ३९ ॥

प्रतिक्लमनिरोधने विमांशो मन्त्रिणः केचित्कोट्यकाधिराजः ॥ ४० ॥

अममजगन्पण्य विश्वजेतुर्गज इव मायानि यदपि तत्रैव तत्रैव ॥ ४१ ॥

रविर्गुणपदमत्र नृपतीव मरुद्वरणाभवनपुष्पाणांम ॥ ४२ ॥

नयद्गुणमपरागगजिभाजि अमरकदम्बककर्णैर्गन्तविशे ॥ ४३ ॥

अपि मविधमुपैति नात्र गितः समृद्धिभमदयानन्तप्रमेय ॥ ४४ ॥

छायाभिगन्तवतप्रमाणं विद्याय मले

दत्तच्छदा मधुरमेतत्तत्रैव गृह्णन्ति ।

छायात्रलम्बनचलनप्रार्थनः प्रमर्शः

छायाभिह प्रियमन्ता इव दम्पतीनाम् ॥ ४५ ॥

अस्मिन्लुप्तानां च मर्हान्तां च मिथः पर्याम्भभृतां सकम्पम् ।

स्वेदोदविन्दन्ति पश्य पुष्पत्रजान् तस्यैव शनैः समीगः ॥ ४६ ॥

पश्य प्रमृन्विनिविष्टनिरन्तराल-

रोलम्बजालमिपनोऽञ्जनमञ्जुलश्रीः ।

छायेव मूलमणिवेदिमरीचिवीचि-

नुक्ता स्फुरत्युपरि भूमिच्छामिहासौ ॥ ४७ ॥

तपोवने कामतपोधनस्य वनेऽत्र सर्वे ऋतवः सदैव ।

निर्वैरमन्योन्यविरोधिनोऽपि मिलन्ति पुष्पस्मितभासमानाः ॥ ४८ ॥

तादृग्भासुरभूति तस्य विफलं राज्यं विडासाचलः

सोऽयं रैवतको न यस्य तदिदं लीलावनं यस्य न ।

किञ्चैतत् द्वयमप्यवैमि विफलं तस्य प्रशस्यः सुहृत्

पाश्वे यस्य भवादृशो न हि दृशोः पीयूषपूरप्रपा ॥ ४९ ॥

इत्युद्दामरसप्रसृत्वरगिरं दामोदरं सम्मदी

द्वाक्षासण्डपमण्डनायितरुचौ माणिक्यवेदीतटे ।

धृत्वा पाणितले न्यवेशयदसौ भीमानुजन्मा नव-
प्रेमस्थेमवशो गिरामवसरं प्रस्तावयन्नात्मनः ॥ ४५ ॥

इति श्रीगूर्जेरेश्वरमहामात्यश्रीवसन्तपालविरचिते नरनारायणानन्दनामि
महाकाव्ये नरनारायणसङ्गमवर्णनो नाम तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

श्रीवस्तुपाल कलिकालविलक्षणस्त्वं
संलक्ष्यसे जगति चित्रचरित्रपात्रम् ।
यदानसौरभवता भवता वितेने
नानेकपेन मदमेदुरिता मुखश्रीः ॥ ३ ॥

चतुर्थः सर्गः

अथ विष्णुमद्भुतमुदा विजयी निजगाद कः स्तवपरोऽस्तु तव ।
ऋतवः सदा षडपि यस्य वने विदिता नमोऽन्नभवतेऽभवते ॥ १ ॥

अरुणाङ्घ्रिपाणिनयनं किरणाद्भुतकौस्तुभं वत भवन्तमिव ।
मुदिते दृशौ मम विलोकयतो मधुमद्य मावदरचिन्द्रविम् ॥ २ ॥
यदि जेतुमिच्छसि जगन्ति ततः कुरु मां करे किमपरैः कुसुभैः ।
वदति स्मरं पृथगितीव मुहुः कुसुमावलिर्भ्रमरवामरया ॥ ३ ॥

हृदि मय्यकामशरशल्पशते वत चुम्बकं प्रियममृतं ययुः ।
प्रतिबोधितेव मदमोहवती मधुपध्वनेः कलतया लतया ॥ ४ ॥
गदिताः किमप्यलिकुलकणितैः परितर्जिताः किमलयाङ्गुलिभिः ।
दयिताजने निविडमानभृतो निभृतं रसालतरुणा तरुणाः ॥ ५ ॥
सपदि प्रविश्य हृदि संयमिनामपि दुर्गमे विधुरतां विदधे ।
मदनावनीशवरवीर इव भ्रमरध्वनिः पिकवचःकवचः ॥ ६ ॥
अभरानुबन्धमधुरेण वधूमुखशीधुनाऽकुलपुर्वकुलः ।
कुसुमानि घान्यधित तैः समदान् जयति स्मरो रिपुन्पा पुम्पान् ॥ ७ ॥
सहजल्लिपोऽपि न विरोधमधुर्धुयमाज्ञया स्मरन्तल्लपनेः ।
यदचुम्बि चम्पकनतिर्मधुः स्तिमिरायनैर्धुतदिशानविभा ॥ ८ ॥
तिमियत् प्रियाभ्रयरसप्रयत्नान्मदनो नित्यन्तुमिय पान्यजनान् ।
नवकिशुकान्यधित वरागलग्रत्यन्त्रवत् प्रवरधीवरधीः ॥ ९ ॥

मलयानिलैर्विरहिणां च वधूसहचारिणां च पृथगेव ददे ।

ध्रुवमुष्णता च हिमता च फणिश्वसितोद्भवा मलयजालयजा ॥ १० ॥

पदताडनेऽप्यतुलरागतयादृतत्तपल्लवकरं तदिदम् ।

सखि कान्तसन्निभमपि प्रमदं जनयत्यशोकवनमेव न मे ॥ ११ ॥

तिलकोऽपि पश्य विरहेऽयं हृद्वा मदनस्य वाणयति पुष्पततिम् ।

सकटाक्षविभ्रममदर्शि वृथा हृदयेशमेव समया स मया ॥ १२ ॥

प्रियनिर्विशेषमपि यस्य मया परिरम्भणं कुरुवक्तस्य कृतम् ।

सखि हन्ति मां तमभिगम्य मदी मदनो जगत्रितयशातयशाः ॥ १३ ॥

इति गद्गदाकुलितकण्ठपदं निगदन्त्य एव विरहिप्रमदाः ।

द्रुतमागतैः प्रियतमैर्नितमामतथावचोभरचिता रचिताः ॥ १४ ॥ (कलापकम्)

ज्वलिताग्निपिङ्गलकरालकराकुलभानुसाध्वसमये समये ।

क्षितिजावलीभिरुचितं रुचितं मधु पुष्पतोऽवनिहितं निहितम् ॥ १५ ॥

शितिकण्ठकण्ठकमनीयरुचेर्भवतः कठोरमहसः सदृशम् ।

विदधे शिरीषरजसाकुलितं शुचिना दिवो रविवरं विवरम् ॥ १६ ॥

शुचिना प्रियेण परिरम्भमियं रचयाञ्चकार किल केलिवनी ।

अनुरागिणी विकचपाटलया नवमल्लिकाप्रसवहासवहा ॥ १७ ॥

समयानुभावशिशिरे पतितास्तपतसमूर्त्तय इवोद्गुणाः ।

वभुराहिता विचकिलावलयो हरिणीदृशासुरसि तारसिताः ॥ १८ ॥

भृशमुच्चतां यदतनिष्ट महालहरीततिः पतिरयं पयसाम् ।

तदवैमि निर्भरमनामि रविच्छविमण्डलादधरया धरया ॥ १९ ॥

समये गभीरहृदयः सलिलं शिशिरीचकार वत कूपगणः ।

अजनिष्ट सम्प्रति यतः परितः सरितां गणोऽपि तपयातपयाः ॥ २० ॥

ध्रुवमालवालवलयेषु पयःपरिपूरितेषु निजमूलभुवि ।

प्रविशन्त्यमी प्रतिकृतिच्छलतः पृथिवीरुहस्तपनतापनताः ॥ २१ ॥

हिमता गनैव जगतोऽर्कभिया सुदृशां कुचौ शिखरिदुर्गरुचौ ।

इति कामिनोऽनुपमशैत्यगुणस्पृहयाऽभवन् परमदारमदाः ॥ २२ ॥

नवपाटलाप्रसवलासवलादुदिते स्मरे परमया रमया ।

नरुणीततिर्मधुरसाधुरसा दयिते वभूव नतमाननमाः ॥ २३ ॥

मन्दुत्तरङ्गितपिङ्गपटाञ्जलमञ्जुलस्य हरकण्ठरुचः ।

तय तुल्यतामकलयज्जलदस्तङ्किना प्रभारुचिरयाऽचिरया ॥ २४ ॥

परिरम्भणे गलद्गुहप्रसवस्त्रजि वाढमीलितरचीन्दुशाम् ।
रसिनो दिशां त्रिदशनाथधनुर्मिपतोऽन्बुदा नवमदुःखमदुः ॥ २५ ॥
पतति प्रकाममुहुपुष्पगणे गगनद्रुमस्य करकच्छलनः ।
रभसादघट्टयदमुं यदसौ घनपङ्क्तिर्गजसमाजसमा ॥ २६ ॥
✓ जनयञ्जने मुदमुदारतरामपि कालिमानयभजज्जलदः ।
यदनेन चण्डरुचिचन्द्रमसौ त्रिजगद्गुशामपि हितां पिहितां ॥ २७ ॥
प्रियवेदममार्गमसतीषु दिशन्निव लोकहृष्टिचकितासु घनः ।
शुशुभे मुहुःप्रकटितान्तरितक्षणिकामिपानुपमदीपमदी ॥ २८ ॥
वहिरिव कण्टकवतीमभजत् वत केतकीमिह सुधासन्धुपः ।
न तदीयमप्यरसधूसरकं मनुते रसैकहृदयं हृदयम् ॥ २९ ॥
✓ सरिर्दुर्मिनिर्मितमृदङ्गरवैः स्मितनीपभृङ्गवृत्तगीतलये ।
जगति स्मयं दिशानि केकिततिर्नवनृत्तलोलुपकलापकला ॥ ३० ॥
अपि सद्गुणैर्धवलयाऽञ्चलया क्रियते न किं चतुरयाऽऽशुगया ।
वरजातिरेनमलिनं मलिनं यदसौ भजत्यसमात्ममता ॥ ३१ ॥
प्रबलप्रतापशुचिकीर्तिभृतस्तव साग्यमग्र यदि नह्यते ।
रुचिभारदुःसहसहस्रगचौ शरदि प्रपक्षितविशीतविशी ॥ ३२ ॥
✓ शरदः स्फुरत्तमणिमोष्मसदृक्तरणिशुतेर्नयमरोजहताः ।
सुरचापशेखरजुपः शुशुभे प्राशिदीधितिः परमात्मताः ॥ ३३ ॥
✓ सरसी निजं सरसिजैरभितः सुरभीकृतं सरस्तमेव जलम् ।
पथिकज्जजाय ददनीय मुहुर्विमलं सांसरदर्शरपनी ॥ ३४ ॥
पथिकाः पथि स्तुतयधूम्रदृग्गतिविभ्रमा मुहुरग्रे सन्तः ।
सरितां प्रवातमदलोक्त्य सरोगत्यैतदप्रस्तवांसराज ॥ ३५ ॥
अस्तनप्रह्ननवट्या घटितः कटरे शिखीसुगमणः प्रसृष्टः ।
विधुतकुपेव धुतमान्तपधुनिर्गन्तनिर्गन्तणसंगम ॥ ३६ ॥
प्रतिदन्तिनां मदन्पा विपन्नपादगन्धिवापुनिगिताऽऽभिषिक्तः ।
गगने ययुर्गजगोत्रगजाः परितन्त्र मन्त्रेणिवगन्धिवन्त्र ॥ ३७ ॥
पनन्तपटमण्डनमिदं सारदं पनन्तमेतन्नु मा स्त गन्तव्यं ।
शरदानमे यमिति दोहिरुहं पथिकरुदन्तदिरुहं दिवन्त्र ॥ ३८ ॥
मुक्तिरप्यगतिरगन्तव्यमिति दासपन्नमनं सन्तम् ॥

इति सङ्कुचन्तु सरितोऽम्बुनिधिस्फुटदृष्टतत्प्रतिभयाऽतिभयाः ॥ ३९ ॥
नन्दते शरच्चलया चलयावलिनादभासुरमुदारमुदा ।

शुकसंहतिः कलमतो लमतो घनमार्गसीमनि रयान्निरयात् ॥ ४० ॥
परसूरमण्डलसहोत्थमहः स्वलनावलक्षमहिमैकनिधिः ।

त्वमिव प्रजासु जयति स्म सहाः फलिनीषु गाढतरजातरजाः ॥ ४१ ॥
नितमां तमीषु महतीषु मुहुः कृतकापराधघटनाकुपितैः ।

मिथुनैर्मिथोऽप्यनुनयेन रसः किल कोऽपि कामकलितः कलितः ॥ ४२ ॥
विदितं यदुष्णमवष्टेषु पयस्त्रपया पतत्तदिह धर्मचयः ।

यदमुं विलङ्घ्य गहनं तुहिनं भुवनेऽभिभूततमभूतमभूत् ॥ ४३ ॥
रतिजानियौवनतपस्वितपोवनशैलयोरिव बधूकुचयोः ।

स्थितमुष्णभावमहरन्न हिमो महिमा हि तापसततः सततः ॥ ४४ ॥
त्वरितं हुताशहरिति स्फुरितस्तपनोऽपि शीतभरभीत ईव ।

ददति व्यथां न कथमन्यजने मरुतः प्रसृत्वरतुषारतुषाः ॥ ४५ ॥
मदनस्य मानिमदशैलभिदे शतधारकोणशततामगमन् ।

शतपत्रिकासु कुसुमच्छदनावलयः शतं कुसुमितासु मिताः ॥ ४६ ॥
अवियोगिनां विरहिणां च तनौ तरुणीकुचोष्मजुषि तापपुषि ।

वत सर्वथैव विफलस्य जने पवनस्य शैत्यपतितापतिता ॥ ४७ ॥
परिकम्पतेऽद्य रविभारविभादहनप्रभालिपिधराऽपि धरा ।

पवमानवल्लभमदम्भमदं हिममित्यधावत रसात्तरसा ॥ ४८ ॥
शिशिरस्ततान तव तारयशःसुरभीकृतक्षितितलस्य तुलाम् ।

नवकुन्दपुष्पपटलं यदिह त्रिदशापगाजलसितं लसितम् ॥ ४९ ॥
लघुतां प्रयाति यदहस्तदहो जलधौ प्रवेष्टुमतुलौर्वभृति ।

तुहिनातुरस्त्वरयते तुरगानपि चण्डिमप्रसविता सविता ॥ ५० ॥
परितःपतत्तुहिनद्वनतनोः पुलकोद्गमद्युतिमधत्त दिवः ।

पवमानलोलितलवङ्गरजःकणराजिरत्यसितभासितभाः ॥ ५१ ॥
उष्णां हिमोर्जितनिशातनिशागमेपु तीव्रेऽहि तप्तनपनातपनाशिगैत्यौ ।

स्त्रीणां कुचौ मृमरमामरसाः श्रयन्तः के स्युर्न हर्षसदनं सदनङ्गरागाः ॥ ५२ ॥
आकर्ण्येव मिथःकथामिनि तपोगरामरामः क्वचित्
कोऽपि क्षोणिभृदीदृशोऽस्मि नटिनीकासारमागम्यतिः ।

लोकेऽस्मिन्निति वीक्ष्य महु चलिः शोभाविभावद्युति
लोकेऽन्यत्र विलोकितुं तु भगवान् राजीवजीवप्रदः ॥ ५३ ॥

इति श्रीगूर्जेश्वरमहामात्यश्रीवसन्तपालविरचिते नरनारायणानन्दनामि
महाकाव्ये ऋतुवर्णनो नाम चतुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥

शृङ्गासि नाम परतोऽपि नवान् गुणांस्त्वं
त्यागो गुणस्तव नवस्तु न वस्तुपाल ।
लोकोत्तरस्तदपरस्य नरस्य स स्यात्
यत्तादृशो नहि दृशोः पथि मादृशानाम् ॥ ४ ॥

पञ्चमः सर्गः

अथ ननाम वधूमनु पश्चिमासुदितदिग्गजकुम्भनवस्तनीम् ।
इतरदिग्गतिनिमित्तविप्रियः प्रिय इवाधिकरागधरो रविः ॥ १ ॥
विरहिणां मयि गच्छति विप्रियं प्रियजुषां प्रियमत्र करोमि किम् ।
रविरितीव चिराय विचारयंश्चरमपर्वन्मूर्तिं विलम्बितः ॥ २ ॥
दृप्तमनुजिज्ञततापपरम्परोऽपरदिशा यिनमन्ननुरक्तया ।
रविरसावधिरोप्य नगोन्नतस्तनतटे स्म चिरं परिरभ्यते ॥ ३ ॥
अवनतानि विमुच्य तनीयमी त्वरितमुन्नतरेषु रविः स्थिता ।
व्रजति भास्वति भर्त्तारि दूरतस्तदवलोकरोमादिव रागिणी ॥ ४ ॥
अहमिदं करोमि निशि स्थितिं पृथगिनीय विषादरसाकुला ।
विटपिमौलिषु दत्तपदा मुहुस्त्वरितमुत्पतति स्म गम्गादलिः ॥ ५ ॥
अभवदर्शनमिलितपद्मदृग् हिमसमीरमुन्मादिव पशिनी ।
रयिमिषार्कलमत्कुमुदक्षणा कुमुदिनी क्षणपातिनमंजन ॥ ६ ॥
विषटमानतन् नित्यतेर्बलादतिचलेन मुहुः परिरम्भिणी ।
जगति एन्न रथाङ्गविटमौ न कसरोदयनां कल्पारव्यः ॥ ७ ॥
कनककुण्डलमेव दिव्यो रविर्दधदधोगतिनैकलवं द्रष्टुः ।
अपरपर्वन्मूर्तिनि दूरतः पतनराणि वसोदिरिवाद्यमौ ॥ ८ ॥
गिरिशिरःशयितार्कमथ क्षणं शुभादिमण्डलनक्तनैर्जने ।
मुगसरोजमिषैश्चयत नाभिकावपि दिनस्य सातामि मञ्जकः ॥ ९ ॥
अपस्तुगं गपनेन यथा यथा तिमिरमेवाभिषेव दत्तः दत्तः ।

प्रमृतमल्पजवेन तथा तथाऽभिसुखभानुभयादिव तामसैः ॥ १० ॥
 अरमताऽपरदिग्दयितां रविर्गिरिगुहागृहगुप्ततनुर्ध्रुवम् ।
 मलिनिमानममानमन्त्रयया तदिनरां नितरां दधिरे दिशः ॥ ११ ॥
 रविरथस्य तदात्वमलक्ष्यतां गतवनश्चरमाचलसीमनि ।
 अरुणकेतुपटाञ्चलचञ्चलं क्षणमलक्ष्यत सान्ध्यमहो महः ॥ १२ ॥
 अथ मलिस्तुचदौस्त्यलतादवैश्चलदुलूकविलोकनभास्कैः ।
 अभिसरन्कुलटाकरदीपकैः जगदपूरितमां तिमिरोमिभिः ॥ १३ ॥
 मयदि दिक्षु किमु क्षुभितोऽम्बुधिर्नभस एव विभा किमलम्बत ।
 किमुरगैन्दपानि रमातलादिति जनेन तदाऽनुममे तमः ॥ १४ ॥
 रविरागोऽनुनिमुक्तमिलानले किमपताद्वियदेव मलीममम् ।
 क पवितां रविरित्यवलोकितुं घनपथेऽधिरुरोह धैर्य किम् ॥ १५ ॥
 मिमिमिन्ममिर्नाकृतमूर्त्तयस्तपनभर्त्तृशुचा ककुभोऽभितः ।
 निर्मागनिधियरे भुजनेऽभितो भविभिरित्यभिशाङ्कितमाकुलैः ॥ १६ ॥ (युग्मम्)
 गगनकाननगीमनि तारकैः कुसुमितासु तमोनवचल्लिपु ।
 अगनि युक्तमर्मा कुसुमासु भविजगतीविजयच्यमनोन्मुगः ॥ १७ ॥
 प्रियतिरेतनवर्मनि चञ्चलैश्चलितमस्यलितं कुलटाकुलैः ।
 प्रमृष्टं निर्मितेऽपि नवञ्चलन्मदनदापविभाभरभामिभिः ॥ १८ ॥
 अचुष्टिने सति तन्मग्नमौपयाप्रियतमे च गते च रुचिप्रिये ।
 प्रिरवियोगस्तुःखमर्वां तदा रनिरजिप्रियदापधिमण्डलीम ॥ १९ ॥
 रविर्दृष्टि सप्तसु दीपकैर्द्रुमवःस्थितस्तान्दिमर्कतवात ।
 इन्द्रजन्म तदा तन्मग्न्यना विरहिते नियतं स्थितनामने ॥ २० ॥
 विचित्रगगनप्रसूना तमधिष्ठगमयमयममसीमनि ।
 अर्चन वासवैर्दर प्रमृतमलक्ष्यतनिर्भोज तदा युतुगान्द्राम ॥ २१ ॥
 विचित्रा रविर्वा रवि सान्तिना विरहिते सप्तसु किमु योयुक्ता ।
 सप्तसु तदा रविर्वा रवि सान्तिना विरहिते सप्तसु किमु योयुक्ता ॥ २२ ॥
 विचित्रा रविर्वा रवि सान्तिना विरहिते सप्तसु किमु योयुक्ता ।
 अर्चन वासवैर्दर प्रमृतमलक्ष्यतनिर्भोज तदा युतुगान्द्राम ॥ २३ ॥
 विचित्रा रविर्वा रवि सान्तिना विरहिते सप्तसु किमु योयुक्ता ।
 अर्चन वासवैर्दर प्रमृतमलक्ष्यतनिर्भोज तदा युतुगान्द्राम ॥ २४ ॥
 विचित्रा रविर्वा रवि सान्तिना विरहिते सप्तसु किमु योयुक्ता ।

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ गुरुगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

॥ ८३ ॥

[illegible]

॥ ७ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ३२ ॥

፲፱፻፲፱ ዓ.ም. ጥቅምት ፳፯ ቀን

॥ ३३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

|| ॐ || श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ३४ ॥

कर्मणि कञ् च पठ्यति च । विजयतेः परमेश्वरिणो मयाः ।

॥ ३३ ॥

एतद्वा। सकलवर्णिका इव हिमशिखरीवद्वत्तः।

अधिकलावसिखलितवर्तुषात् ॥ ३२ ॥

निजसुतः पतिर्दाविभवापयानिदिना ॥ विप्रकान्तजलकृपात् ।

॥ ३ ॥ निमित्तं शङ्कराचार्यं तद्विद्वत्पतिं ॥

द्विषन्ति योऽकारकाणि निभयहेनं निरिच्छन्ति सर्वोपधिभिः क्षिप्तम् ।

अथ विक्रयकोमलकौमुदीपरिमलवशोपठितोऽक्षर ॥३०॥ (श्रीगणेश)

इति सुन्दरिदेव स्था इतः सितशशिः पतिता त्रयदंष्ट्रा ।

॥ ॐ ॥ सप्तविंशति प्रश्नोत्तर वृत्तान्त विवरण विवरण

। ताम्रसहितसुवर्णम् चतुर्विधं यथा ।

॥ २७ ॥

[illegible]

॥ ॐ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

उत्पद्यते वाक्यं नामकं निर्वचयामास ॥ २३ ॥

अथ विष्णुः तन्मित्रादिभिरुपैः शृङ्गममूर्तिरित्येतां त्रयविधैः

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

11 11 11 11 11 11 11 11 11 11

अथ नलिनसुखी निजं च अङ्गवर्तिनेनावसरं सुराशोभं ।
 रसरसरसं मुखं च पुनं चपकानि स्वयमाप विस्वितेन ॥ १ ॥
 अपरमयुरलङ्घितानि चूनं दक्षिणस्थानि निरोक्ष्य विन्वितानि ।
 नवसरकरस्यु दम्पतीनाममव कानि विद्योपतः पिपासा ॥ २ ॥
 पुरि मयुरिमवाचुरं कर्पूनामपरोष्ठं पिबति प्रियेतिरिणाल ।
 निजदलनिनदं करोद मन्थं निजपानावसरं सुरोत्पन्नाप ॥ ३ ॥
 इदमथमथवा दद्याति पुष्टं नम्रं मयिपुमिनीव बोद्धकासाः ।
 सरससरसपुच्छं च केषा नवमखासवमप्या युवानः ॥ ४ ॥
 मयुरमयुमधीरमङ्गुलीं विनरन्त्यापकं च्युते प्रकम्पात् ।
 मुञ्जलिनयनं पुलापरौष्ठं मुक्तामण्डपमणालिनीं पिपासाः ॥ ५ ॥
 न रसरसमाससादं अङ्गीरवलीलाजिपि नादशं सुरीयाम् ।
 मणिलरवपुशोपरं पिपासा दृश्येताः किल पादशो प्रपदं ॥ ६ ॥
 मुञ्जति सरकं निधाय कान्तापरपाने मणिलानि पयितेयः ।
 मयुरनिदमिनीऽपनीव कण्ठः स्तवनं चमुञ्जितीव नयुवानः ॥ ७ ॥
 निनतिव मयु मीनितं कर्पूनामपरेः पानकृतः परोक्षमाणाः ।
 विपुमणिलोपकृतिनीव दधे जवज्ज्वलं च युवा सुप्राङ्गुलीतः ॥ ८ ॥
 रसपति सरकं यत् कर्पूनामपरोष्ठं मयुपरोपानि यतः ।
 मुञ्जति दक्षिणपरं च गणालयानि प्रापि मयुरसि नैविदुः ॥ ९ ॥
 मयु सरसमण्डपदलानाम् मुक्तीनांजीवितं प्राणं दद्यात् ।
 दद्याति नदपदं च मयिपुलीनाददशालां निपराणि नानामप ॥ १० ॥
 अग्नित कानि पान्तामङ्गुलीनामपः न स सुतरासमा ॥
 अमदपदं पान्तामङ्गुलीनामपः रसनापमणिलसि यत् न यतः ॥ ११ ॥
 रङ्गदं कण्ठशोभनीयनीयः सपदसङ्गोत्पन्नामपः ॥
 अग्नितममदपदं पान्तामण्डपनामपः निपुण्युपानामपः ॥ १२ ॥
 मयुपरोष्ठं पिपासा यतः सपदं यो-प रसनामपः ।
 कपतिव मयि योपमण्डपनामपः पानां दम्पमण्डपनिजः ॥ १३ ॥
 दक्षिणमयुरपुच्छात् पुनः निजदंजीवितं च मयिनीं विपन्नाः ।
 विपानि निजं मयिनीं मयिनीं मयिनीं मयिनीं मयिनीं ॥ १४ ॥

पुष्टः सुरीः

इति मयुक्तेनमोहेनाभिभवात्तु अपथेव अपथपि सङ्गः सुक्ते ।

अतानि लसदन्तङ्गमङ्गनानां परिहृत्वाऽभिमतैः सहस्रतलाः ॥ १५ ॥

क्षणमतिक्रान्तिः क्षणं प्रसवा देवितक्ष क्षणमाकुलः क्षणं च ।

नवनवसरमङ्गीमङ्गीभ्यां इदं नमनोवत प्रियाणाम् ॥ १६ ॥

अतिरतमयुषानधौतारगण्डदन्तार्द्धधरोऽधरस्तकण्ठ्याः ।

अपरम्यादृष्टो प्रकोपनयापिभ सङ्क्षोपयिषुं पृथुं योऽन ॥ १७ ॥

समयुरगुणया हिंयं हरेत्या प्रतिकान्तं सुरयैव कापि मुखा ।

चरुवचनमघाटि मन्दमन्दं स्वयमन्तर्गतया वयस्येव ॥ १८ ॥

मदपरवदोचनेसां वधूनां हुतमुक्ताङ्गिञ्जनमन्दमयनारैः ।

प्रतिपदमनवस्थितप्रयत्नैरेषि गीतैर्द्विषुं सुदं युवानः ॥ १९ ॥

युवतिषु सङ्गपयनीषु रोगावपक्वं रोगिषु वादयन्सु रिक्तम् ।

इदं योग्ययुषी विमुच्य सर्वं वत जयविष दिद्युते मनोभ्यः ॥ २० ॥

विपरिवर्तितचुस्मनप्रपञ्चादवरावाकट्यामुदस्य रोगम् ।

अभिमुख्यपतिषु नन्वे स प्रतिकान्तनयनेषु रोगाभ्याः ॥ २१ ॥

इदं निवसति सा नवीति सेव्यं निगदन्ती किलमनमन्यजन्ती ।

भारसमिधवाः वधूवनाभ्यां इदं पश्युर्गोडयन्त्यक्त्याभ्याम् ॥ २२ ॥

हनयति रम्योऽर्थकं रमण्या इदं योऽहमेण वा मुदा वा ।

त्रिगुलकण्ठकोदंभद्वेषा वा परिवान् परिख्यमुचिञ्जितं वा ॥ २३ ॥

रुद्राणि पतिवृद्धं कुवज्जपां यत्राप्या सङ्कुचनं चकार भुक्तिः ।

नमदं देवनाया नन्दं यमुद्वेदं प्रयुज्ज वीकयाञ्चकार ॥ २४ ॥

इदं वतिमतिनः यक्षैः सुखादिभिरुद्विग्नानि तपानि लोलेषुव ।

कथमपि मुद्राभामन्यनानामा युवभिमुखमदो मुह्यैः सारथैः ॥ २५ ॥

निविडनारदार्द्धपाञ्चमानादधिनेन प्रसभं कुतपामाऽपि ।

नन्मयुदवाः नानां प्रविष्टाऽपरिविस्त्रात्किञ्च कोपकथं पृथ ॥ २६ ॥

रामदेविनरनरमापण्यः पतिरग्नः सदेवैव दूतनीतिम् ।

नन्दमपि ययुः नन्दमप्यकान्तवत्तं दूतपयान्द्वेञ्चकार ॥ २७ ॥

अतिन जितकथं नृणां सप्तपदेनोपयोजनं स रणः ।

इति जेतव्यं नृ विजयपानं रणैः पालिपुर्गं नन्दं वज्याः ॥ २८ ॥

इति नृ नृणां नन्दं नन्दः नन्दः नन्दः नन्दः नन्दः ॥ २९ ॥

प्रियतमकरपट्टयेन गुनं परमानन्दपदं व्यञ्जितं किञ्चित् ।

युवतिञ्च योऽपि चोपपादयत्पदं तद्विदधौ भूयवपानसहस्रं यत् ॥ ३० ॥

अपि च विनिन्यदौलसीन् स्फुटमासीद्दंभाजि कान्तहस्तः ।

चाक्रे देव च चाल कम्पमानः शानकैर्भूयपथं कुर्ये कुर्याद्गदाः ॥ ३१ ॥

स्वचलितं देव यत्प्रतिष्ठितं प्रियपाणिः पालितश्च माभिमुख्ये ।

केतवलयविवरावमकुलिभ्यां चक्रे च द्रुतमद्वन्द्वकारभ्याम् ॥ ३२ ॥

रसवशावर्षकरागिनिभश्च प्रियपाणां हरति क्षोभं वासः ।

प्रदत्तमयुरसोऽर्द्धितेन दंष्ट्रं जयनेन स्वयमेव लज्जयेव ॥ ३३ ॥

वसन्निभमिति प्रकीर्णकान्तीः रूपमेवैव वेद्यः ।

करमकथयदौ कठेण कान्ता गालितं पूर्वमजाननी दुर्कूलम् ॥ ३४ ॥

सुजगुगहदवज्जनेन गुनां रससर्ववसमदौहशान् रमण्यः ।

त्वरितमिदमिममपि वाहस्यैकद्वयसन्दर्शनिपट्टितेन नासासम् ॥ ३५ ॥

रुदयमतिवशीकृतं मिथोऽपि स्फुटमानग्रहनिग्रहश्च चक्रे ।

असमशोभयस्वपदं शोभासन्निभं कण्ठं मणिनामैवैवैवभ्याम् ॥ ३६ ॥

अशोभितपरिरम्भनी दधानाः पिहितं दम्पन्या मिथोऽङ्गमङ्गैः ।

अग्रमथ दशो मुह्येच्चुम्बितसौन्दर्यमलोक्यमुद्विष्टः ॥ ३७ ॥

वसन्निनयने करारोपं परिरम्भं विभक्तिं सुवोऽभिमानात् ।

अधररसनसम्भवे तु चक्रेश्चदवाचं मुह्येद्यो रसाय गुणम् ॥ ३८ ॥

कलयति कलनां प्रियं च वदयं विदधते मणिते निनिश्चिनीनाम् ।

स्वयमर्कजं कृते न कश्चिच्छयाग्रहदृष्टीरित्येव हिमेव कामः ॥ ३९ ॥

सुरतगानिषु दर्शयन्मुखज्वलं नववत्या वसन्निनदौषकायाः ।

सनतमपि मणिकृतः स्वसंभोऽं सप्तमे प्रत्युपकेदमेव गुनः ॥ ४० ॥

गालितसकलतन्त्रावापि हरि गृण्यन्तां देव सुपमान्त्वभ्युद्यः ।

दृढतरपरिरम्भोऽङ्गमभ्युदयिच्छामाणयो रतानि गुणम् ॥ ४१ ॥

परिदलनमथादिवादिमुक्तस्तनसङ्घो गालकन्दलवलयोः ।

पुकरतन्त्रेणां लज्जयन्तां स्मरदोलालितं वमार हारः ॥ ४२ ॥

परिचितयुक्तापि तन्त्रमप्यथा मुह्येदोलालसदङ्गकान्तकण्यः ।

देवपतिमुसितैरौजस्यैरुच्यन्ममरसगोत्रं तन्नयः ॥ ४३ ॥

कलितममिमनोषु पथादासोऽग्रममदादित्यद्विक्तमेव चक्रेः ।

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

॥ १०० ॥

[illegible]

॥ ३ ॥

देवविष्णुब्रह्माद्याः कालावस्थानुसारं-
 प्रह वदति सर्वम् कस्य नो ज्ञानमस्मिन् ।
 तप ये विवर्कान् कालं कर्तुमायः
 सुखिनीषु गच्छे वसिष्ठ उवाच ॥ ६ ॥

1 : 1/2 : 1/4

॥ १ ॥ वासि स्म धेहि नल तत्तु सुमन्त मन्दल नानि पुर पुरावतः ।
 अशान्तानां तव ललित कान्ता सङ्कल्प कण्ठ पद पुर निशान्तावतुः ॥ १ ॥

॥ २ ॥

नमस्तस्मात् नमः ॥ यथा ॥
विनाशो वा हि वयं च न किंचिदप्यनुभवामहे मया ।
३ ॥

मानं विभुस्य तस्मात् प्रमदं सिद्धयः, योऽप्युचि यः प्रमदं विभुस्य तस्मात् प्रमदं सिद्धयः ।

॥ ४ ॥

॥ वाचं धेनुमुपासीत ॥

तमसो मा जगदग्रतो निकास्यते । तस्मात् सच्चिदानन्दं प्रकृतम् ।

वर्गदेवता स्वयम्भुव प्रनिर्वृत्तव शिवा । भाग्यवान् भवेत्पुनः पुनश्च ॥

ब्रह्मण्यः कालपयसा नमः ॥ १ ॥
 इत्युक्तं श्रीमद्भक्तिसिद्धिदा इव वृद्धिमानः ॥

समर्पितो मयुरवारिविभुक्तवादेदेवमरवक्ष्यामि न भयते मया ॥ ८ ॥

सुखात्प्राप्तं वदन्ति । तस्मात्तु यथावत् ।

1 : 11 : 111

अष्टमः सर्गः

हेमै रामः सन्दनश्रीनालं चलं धारयामास ॥
 शोणश्रीकं लक्ष्मलक्ष्मैव सद्यः सन्दयामिभ्यं वारिदं आरुदन्तः ॥ १ ॥
 चक्रे कंठालोक्तत्वात्तं हंति लोकानिव सन्दनः सानन्दस्य ॥
 वानपातप्रस्फुरत्कविदंस्तमया जाम्बवद्वन्द्वप्रवाहः ॥ २ ॥
 नो मालि स्म व्यापपात्रोऽप्यमया यत्रारुमोत्ताननिस्त्रानातः ।
 स्थानं कञ्चिद्वृक्षं निभुञ्जन् शृङ्गानि भ्रंशयामास सन्त्य ॥ ३ ॥
 रत्नश्रीमालि शाले विद्याले तेजो जालैरप्यलक्ष्यां प्रतीकाम् ।
 सौमन्यायुः सम्मुखपातवानवानजानह्रारदंशवक्राशम् ॥ ४ ॥
 अन्योन्यस्य स्यन्दना यदमनाः प्राकारस्य छारदंशो विरोधः ॥ ५ ॥
 रेणौ बाह्व्युद्वेखले प्रसूते पङ्क्तिर्भौदंतिनदंशान्तर्युरैः ।
 वेगो न दृष्टुर्विकल्पानमानसकृतैः सन्तैस्त्रिभक्तलं विमुक्तः ॥ ६ ॥
 अन्योन्यस्य स्यन्दना यदमनाः प्राकारस्य छारदंशो विरोधः ॥ ७ ॥
 इत्युक्तपात्रैव वपासु रिक्तं प्रीतसं पूर्णं यः स्वयं स्वं तमालि ॥ ८ ॥
 अन्तर्निधं येन वृन्दैरकणां वृन्दैर्वृन्तं विभ्रता विभवमयम् ।
 वीचीवञ्चकनदंशेन भवे भयः साक्षाद्विनिन्दन्तावदानम् ॥ ९ ॥
 विधवाधरं येन जामातुमाया पात्रं वृत्तं विध्वंस्य दृढं नः ।
 शोभामिभुञ्जामस्त्वयोरप्यस्य सन्त्य लक्ष्मालिस्त्रिभुजस्य दंशोऽहं वन्दः ॥ १० ॥
 वामाधरः कलिमौखं कलानां सत्पुत्रोऽसौ दृक्स्वयमिविन्दन्तिः ।
 एकं लक्ष्यं क्षालयमास्तिनिदं यः स्वमेव स्थानकमभिलिखेति ॥ ११ ॥
 चञ्चलवृत्तमालस्तमालाधाय चञ्चलः प्रोच्छलच्छेतिपुणः ।
 शौर्वचलजालभुमालि भुमवत्तमोमो विरुक्लिङ्गिव यस्मिन् ॥ १२ ॥
 इदं शश्वदंशिरप्यते योऽनारिधे तेनापीतं विजना जानते माम् ।
 अङ्गश्रीं कृन्मयानेरितोव हयति लोकं यः क्षिपत्यस्युविन्दन् ॥ १३ ॥
 धूमस्तोमैवाहवमिर्वान्तःसुप्तस्यैव श्रौपतेसेवसा यः ।
 रते रामश्चोपरशोभामाशुहसितकाम्यः कञ्चलेव नीलः ॥ १४ ॥
 मत्तं दौष्टरेपधोना विगतैः स्फूर्जन्तव्यालैः सुभुक्तानैर्विवापि ।
 मत्तं तेनां राघवस्यैव शश्वदंशैः यस्मिन्सेविदोच्छलेन ॥ १५ ॥

1916.

BARODA.

CENTRAL LIBRARY

PUBLISHED UNDER THE AUTHORITY OF THE GOVERNMENT OF
HIS HIGHNESS THE MAHARAJA GAIKWAD OF BARODA

Shastri, Central Library

R. ANANTAKRISHNA SHASTRY,

AND

Librarian, Central Library.

C. D. DALAL M. A.,

BY

EDITED WITH INTRODUCTION AND APPENDICES

VASTUPĀLA

OF

NARANARAYANANANDA

नरनारायणानन्दवस्तुपालम्

श्रीवस्तुपालविवर्धन

तस्यान्धोऽपि सौख्यं भोजनं भां यन्मन्दप्रया ~~सन्मन्दप्रया~~
 प्राप्तां सैन्यलोकं स्वार्थं लालाशैलं रश्मिं रश्मिं

पांशुप्रोत्ति संतां कृष्णपार्थी तो स्मानन्दः प्रा. ~~सन्मन्दप्रया~~
 उवाःपांशुं सम्मुत्ताभ्युत्थिताभ्यां तृणी नाभ्यां ~~सन्मन्दप्रया~~
 अन्तःशांभाभासमानं तृणालीगालिन्युद्धे ~~सन्मन्दप्रया~~
 मन्त्रायासानाजु विश्वं रश्मिः सेना तेने रश्मिः ~~सन्मन्दप्रया~~
 स्वच्छायाभिः सौरभः पुष्पपद्मेर्भुङ्गीगीतं ~~सन्मन्दप्रया~~
 अङ्गेनापि धीनिधानेन पृथ्वरक्षप्रोतिः ~~सन्मन्दप्रया~~
 म्पावासेषु स्थापितेष्वेव रत्न्या जग्मे लोके ~~सन्मन्दप्रया~~
 कृष्णावासोऽदर्शयत्वेतुना तत्तेषां शत्रु ~~सन्मन्दप्रया~~
 अग्रे गत्वा स्थापयित्वाऽष्टपद्भिः तृणी ~~सन्मन्दप्रया~~
 उवाःपीठाभ्यामिनो लम्बकूर्चादोषप्रन्तः ~~सन्मन्दप्रया~~
 कश्चिद्याच्या लोचनान्तेन कश्चित् कश्चित् ~~सन्मन्दप्रया~~
 निष्ठन्तः स्यापिते सन्निवेशे वेद्यान् ~~सन्मन्दप्रया~~
 प्रत्यग्रप्रान्मूमिमुत्तापादोदश्चवीरन्तः ~~सन्मन्दप्रया~~
 तृणी यानादुत्तरन्त्यस्तमण्यो वीक्ष्यन् ~~सन्मन्दप्रया~~
 प्रष्टव्योपि स्पष्टमन्त्रं भविष्युर्लभो ~~सन्मन्दप्रया~~
 दुःखं धृतो रेणुरेणोक्षणाभिः ~~सन्मन्दप्रया~~
 ग्वेदस्येदोदासभामानि सद्यः पृ. ~~सन्मन्दप्रया~~
 तानि स्थाने बीजयंश्चामरालान् ~~सन्मन्दप्रया~~
 वंशाग्रेण क्षोणिमुक्तेन सौम्य ~~सन्मन्दप्रया~~
 नामग्राहं हर्षतास्यानुगमैः ~~सन्मन्दप्रया~~
 णः कुञ्जादुत्पतन् दूरयात्रा ~~सन्मन्दप्रया~~
 भीलोलाक्षः केनचिन्नैव जट ~~सन्मन्दप्रया~~
 जटः प्रौढं सञ्चरद्भिविमानः ~~सन्मन्दप्रया~~
 मृद्यन्ते स्म एष्यया तैरनिष्ट ~~सन्मन्दप्रया~~
 तापादन्तःसङ्गतानां छिप्य ~~सन्मन्दप्रया~~
 व्यक्तं मुक्ताहारहारिन् ~~सन्मन्दप्रया~~
 भ्रान्तैरन्तर्दन्तिभिः ~~सन्मन्दप्रया~~

सद्यो मूलोच्छेदमाशङ्क्य शङ्के लब्धानङ्गाः पङ्कजिन्यो ममञ्जुः ॥ २९ ॥
 दूरोदञ्चद्भीचिनिर्मज्जद्वजं निर्मशानामन्तरातापशान्त्यै ।
 दन्तीन्द्राणां पुष्करैः स्पष्टदृष्टैः कल्लोलिन्यो रेजुरम्भोजभाजः ॥ ३० ॥
 हास्यं मा स्यादद्य कुम्भद्वयं वः प्रत्यक्षेषु स्पष्टप्रासां कुचेषु ।
 ध्यात्वेतीव स्त्रीषु नीरागतासु व्रीडादन्नवीरिमग्नं गजेन्द्रैः ॥ ३१ ॥
 पद्मे बोधादास्यलास्यं दधाने हस्ताग्रेणाम्भोजिनीराकलव्य ।
 मूर्धन्यध्यारोपयामास भूयः स्त्रैणभ्रान्त्या शिक्षितो राजदन्ती ॥ ३२ ॥
 धौते दाने वारिभिर्वारणानां सम्मर्देनाम्भोजपण्डेऽपि भग्रे ।
 प्रीतिं नीरायातनारीमुखाब्जैर्भेजुर्भृङ्गाः कुत्र चिन्ता न धातुः ॥ ३३ ॥
 कुम्भस्याम्भः पूर्यमाणस्य शब्दं श्रुत्वा दूरादन्यदन्तिभ्रमेण ।
 एतय व्यालो योषितोऽग्रे नताया मध्यं पश्यन्नत्रसत् सिंहशङ्खी ॥ ३४ ॥
 सिन्धौ कुध्यन्नन्यगन्वेभगन्धाहत्वा घातं स्वप्रतिच्छन्द एव ।
 भग्रे तस्मिंस्तोयकम्पेन तेने मत्तो दन्ती गर्जितान्यूर्जितानि ॥ ३५ ॥
 हस्तोदस्तैश्चातकान्प्रीणयन्तो नीरैर्द्धीरध्वानन्दत्यन्मयूराः ।
 अम्भोधिभ्यस्तोयलीलातिनीला निर्जग्मुस्ते वारिवाहा इवेभाः ॥ ३६ ॥
 दन्ती दानैर्गण्डकण्डूयनोत्थैः साक्षाद्वृक्षं सौरभादयं चकार ।
 दूरोत्क्षिप्तैः सद्य एव प्रसन्नस्तोमैः सोऽपि प्रत्युपाकारि तेन ॥ ३७ ॥
 भग्नः शाखी क्रीडया कुञ्जरेण भ्रष्टो नोव्यां तद्दृढालानवन्धात् ।
 लोकाः किन्तु व्यापदं क्रूरशूरम्लानैर्जजुस्तस्य पत्रप्रसूनैः ॥ ३८ ॥
 उद्यद्धानामोदलुब्धालिमालागीतप्रीताः सैन्यभाजो गजेन्द्राः ।
 आलानदुच्छन्नमायूरपत्रच्छत्रच्छायच्छत्रतापा विरेजुः ॥ ३९ ॥
 लीलामीलहृष्टिभुक्तापभुक्तैरेवाहारैरुन्मदाः सादिनोऽपि ।
 चादृत्तया वा ताडनक्रीडया वा नाशु ग्रासं ग्राह्यामासिरेऽमी ॥ ४० ॥
 धातूङ्घ्रिन्नाः पीवराश्चीवराणामत्रावासाः सर्वतः पर्वताभाः ।
 पर्यन्तेषु प्रेक्षितैः शान्तिदत्तच्छायै रेजुः पादकल्पैः करीन्द्रैः ॥ ४१ ॥
 स्फूर्तिर्यादृक् साश्ववारैः श्ववारैः तादृग् नासीदस्ननिःशेषभारे ।
 तेजोभाजामप्रभास्यं स्वभावे तेजः स्पष्टं यत्पराक्रान्तिषु स्यात् ॥ ४२ ॥
 मन्दं मन्दं मश्वगन्दरयानव्यामङ्गेनालक्षि यः ग्विन्न एव ।
 मेनाभाजां विस्मयं स प्रतेने मुक्तो धावन्नेव रेवन्निनोऽश्वः ॥ ४३ ॥
 उत्तिष्ठद्विबलानान्ते नयान्यः सार्द्धं वेगादङ्गलग्रैव वाहम् ।

सर्वाङ्गीणस्पर्शसौख्यातिरेके रेणुश्रेणिच्छदना भूरुदस्थात् ॥ ४४ ॥
 सर्वाङ्गीणक्षमापरीरम्भशोभाह्वयः सद्यः सापराधोऽपि गच्छन् ।
 भेजे वाजी सम्मुखीनाभ्युदक्षद्वीचीहस्तैस्ताड्यमानोऽपि सिन्धुम् ॥ ४५ ॥
 चापल्यश्रीभास्वराणां सुखाग्रस्फूर्जत्फेनभ्राजिनां ध्वानभाजाम् ।
 जज्ञे लोलह्लोचनैः स्थानपालैः कल्लोलानां वाजिनां वा न भेदः ॥ ४६ ॥
 कीडङ्गीडं कौतुकादीर्घकालं मन्दं मन्दं निःसरन्वाजिराजः ।
 किञ्चिल्लीलालोलकल्लोलमूर्त्या कल्लोलिन्या न त्वसावन्वगामि ॥ ४७ ॥
 ते प्रत्येकं ख्यातिमन्तो महान्तः पृथ्वीनाथैः सस्पृहं प्रेक्ष्यमाणाः ।
 रेजुः पङ्क्तिस्थापिता भोगपात्रैरास्ये वज्रैर्लेब्धकूर्चा इवाम्वाः ॥ ४८ ॥
 उष्ट्रा रावं चक्रुस्तार्यमाणे भारेऽप्युच्चैर्यत्ततो दुःखितास्ते ।
 हेलविश्वोह्लङ्घनारम्भिणोऽल्पक्षोणीगत्या नूतनव्याप्यतृसाः ॥ ४९ ॥
 मुक्तद्राक्षास्तम्बजम्बूरसालो वव्वूलादिग्रासलोलाधरोष्ठः ।
 उष्ट्रव्यूहोऽष्टासि रूपानुरूपे सत्यादारे पक्षिरादैर्दनीभिः ॥ ५० ॥
 मुक्ते भारे सद्य एव प्रमत्ता ध्वानव्रस्तस्पङ्गिनः सौरभेयाः ।
 शृङ्गैः स्वाङ्गच्छायया युध्यमानाः सिन्धो रोधः पातयामासुराणु ॥ ५१ ॥
 दृग्मार्गमेत्य रचितानतयः पदान्तमागत्य निर्मितपुनःप्रणतिप्रपञ्चाः ।
 सम्भाविताः समनमन्मुकुटेन पाण्डुपुत्रेण सम्मदमधुर्वसुभाविनाथाः ॥ ५२ ॥
 सैन्यं कृतावासमशेषतोपि कुतूहलेनेव निरीक्षितुं तत् ।
 नभोऽग्रचूलामधिरुह देवः स्थिरीवभूय क्षणमुष्णरश्मिः ॥ ५३ ॥
 स्वैरं विलस्य सकलासु वनस्थलीषु छायापि तीव्रनपनानपनापितेय ।
 भूमीरुहां प्रसववृन्दमरन्दधारासम्पातशीतलतराणि तलानि भेजे ॥ ५४ ॥

तन्वाने तरणौ करण्यतिकरोत्पादं ललाटन्तपे
 विष्वक् सङ्कुचितैर्विनिघ्नलतया ग्राण्येव निर्मापितैः ।
 क्षिप्त्वा नम्रतराग्रमगचरणद्वारेण मौलि निज-
 च्छायासीम्नि भस्मप्रदेशमरिपैः पैदारदेवायितम् ॥ ५५ ॥
 सम्पातेन सदैव निर्धरजलव्रानैर्विलीनं मत्नी-
 पीठेनापि निमग्मरत्यमथित व्योमापगापङ्कजम् ।
 पातालं तपनोपलाचलतलप्रोक्तधूमध्वज-
 ज्वालीर्धिरसमशंसं समजनि प्रोत्प्रतापे रयां ॥ ५६ ॥

इत्यात्ममौलिमणिजर्जरितान्धकारा गुप्तप्रकीर्णकरशीकरभाञ्जि भेजुः ।
भूपाः स्वभावशिशिराणि रयादसूर्यस्पश्यानि रैवतककन्दरमन्दिराणि ११

इति श्रीगूर्जेश्वरमहामात्यश्रीवसन्तपालविरचिते नरनारायणानन्दनाम्नि
महाकाव्ये निवासनिवेशवर्णनो नामाष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

श्रीवस्तुपालसचिवस्य परे कवीन्द्राः कामं यशांसि कवयन्तु वयं तु नैव ।
येनेन्द्रमण्डपकृतोऽस्य यशःप्रशस्तिरस्त्येव शक्रहृदि शैलशिलाविशाले ॥ ८ ॥

नवमः सर्गः

प्राप्तपौरपरिवारपरीतः पार्थसौहृदमदेन मुकुन्दः ।

अन्यदा मधुमहोत्सवकेलीकौतुकेन विललास वनान्तः ॥ १ ॥

रोमराजिगुणराजिनि मुष्टिग्राह्यमध्यमुवि चम्पकचारौ ।

मन्मथोऽजनि मिथो युवलोके स्त्रीजने करगते धनुषीव ॥ २ ॥

कामिनीरनुयतां तरुणानां बाहुमूलनिहितोरुसुजानाम् ।

तत्कुचाग्रशिखराणि न पाणिद्वन्द्वमाप परिरम्भपराणाम् ॥ ३ ॥

न्यकृतानुलयचादुरपि प्राक् प्रेयसा स्वयमियाय समं स्त्री ।

कामचापकुटिलास्वल्लिगुञ्जाटङ्कृतास्तु तरुमञ्जरिकासु ॥ ४ ॥

दूरवर्त्तिनि वरे हुतमेका दुर्वहस्तननितम्बभरापि ।

सञ्चचाल पुरुपायितलीलालब्धलाघवलय लटभभ्रूः ॥ ५ ॥

आलिलुप्तपदकापि लतान्तर्नर्मगोपिततनूरनुगेन ।

प्रापि काप्यधरपानपरालिन्नासलोलकरकङ्कणनादैः ॥ ६ ॥

आसदन्मृगदृशः प्रतिहारः स्पर्द्धिना मनसिजेन सनाथम् ।

आशु कौतुकविलासनरेशद्वारदेशपदवीमिव दोलाम् ॥ ७ ॥

तन्कुथाप्युपचकार पुरारिर्यचकार रतिनाथमनङ्गम् ।

स्त्रीनिनम्बनिचिनेष्वपि दोलामण्डपेषु स ममौ यद्वाथम् ॥ ८ ॥

प्रामितं हरिनगैरिव वक्रैः किंशुकैर्मृगमुदैक्षत चन्द्रः ।

भृन्तले दिवि च विस्तृतदोलालोलमानललनास्यमिषेण ॥ ९ ॥

रक्तारनूपुररवैश्चलदोलालेलिलोलरमणीचरणैः ।

श्रीरमोदत विगविमरालोन्मङ्गजङ्गमनभोनलिनाभैः ॥ १० ॥

स्वर्गमेव निजशस्त्रममोघं मन्यते स्म मकरध्वजवीरः ।

अक्षिपन्निजितमर्त्यमिदं यदोलया दिवि सुरानपि जेतुम् ॥ ११ ॥
 दोलया तरलया यपुरासां यत्समीकृतकृशाकृशमक्षि ।
 तत्कुचाग्रभरभङ्गभियेव द्रावणा तदपि मध्यमपूरि ॥ १२ ॥
 दोलयाद्भुतगतागतिभाजामुन्नतस्तननितम्बविलग्नम् ।
 योपितां युवभिरूर्ध्वतनूनां भग्नभग्नमवलग्नमशङ्कि ॥ १३ ॥
 चापयष्टिमिव दीधितिमेपां यत्ततान तरला मणिदोला ।
 विश्वविश्वजयिनो रतिभर्तृर्वाणता तदवलाभिरलाभि ॥ १४ ॥
 योपितः सह ध्वैरतिभूमिं गन्तुमुज्ज्वलविलासरसानाम् ।
 आनन्दन्नतिगति दिवि दोलां कामदत्तमिव मङ्गु विमानम् ॥ १५ ॥
 कामुकैः कुचनितम्बननानां प्रेङ्खया तरलितोर्ध्वतनूनाम् ।
 भङ्गनिर्भरमयादृढमुष्ट्या योपितां द्रष्टि मध्यमधारि ॥ १६ ॥
 उन्नतोभयशिखाऽष्टि रत्नप्रेङ्खया तरलया रुचिरेखा ।
 प्रेमपाथसि विलासपयोधौ नौरिव प्रियजुषः प्रमदायाः ॥ १७ ॥
 तादृशैरपि गतागतखेलैर्यन्न विभ्युरवला विलसन्त्यः ।
 दोलया तरलितैस्तनभिस्तत्पुष्पवृष्टिमसृजत् कुसुमेषुः ॥ १८ ॥
 प्रेङ्खितक्षितिरुहच्युतपुष्पस्फारसौरभविशेषितलोभाः ।
 योपितः प्रियतमैः सह चेतस्तन्वते स्म कुसुमावचयाय ॥ १९ ॥
 मा ब्रज ध्वनिमितीव वितेने सन्नतावतरणस्पृशि दोला ।
 स्त्रीजने तु रभसादवलीणं सृर्लयेव विरहेण जुघूर्णं ॥ २० ॥
 क्लृप्तपुष्कलवपुः सह रत्या विश्वदम्पतिमिषेण मनोभूः ।
 सर्वतोऽप्यवचिचाय शरार्थं सज्जितानि मधुना कुसुमानि ॥ २१ ॥
 सम्मुखीनमिलदक्षिविभावोद्भिन्नमानसरसेन मिथोपि ।
 अन्यतः पतिरमुञ्चत पुष्पाण्यन्यतः करमसज्जयत स्त्री ॥ २२ ॥
 पल्लवेषु सदृशः प्रमदायाः पाणिरप्यवचयाय गृहीतः ।
 तादृशम्रदिमतो वत मत्त्वा मङ्गु दक्षदयितेन चुचुम्बे ॥ २३ ॥
 लूनपुष्पवलभृङ्गभियेव द्राक् पतिं चतुरया परिरभ्य ।
 नैव लाघवमलाभि कयाचित् कलिपताऽन्ययुवतेरपि नेर्ण्या ॥ २४ ॥
 न्यामविस्तृतभुजोपि नितम्बे न क्षमः स्त्रियमुदश्चयितुं यत् ।
 उच्चपुष्परुचिमेव युवा तन्मध्यवदमृदुमुष्टिरुदासे ॥ २५ ॥

कापि गोत्रभिदि भर्त्तरि पुष्पं दानुमिच्छति वधूर्ननगुष्टिः ।
 संहतस्तनकठोरतयेव स्वं शुभोच भृशमम्कुटिनं हत् ॥ २६ ॥
 अधिण पुष्परज एव विनेतुं पत्न्युरंसकृतपाणिनदित्य ।
 विस्मृतास्यपवनप्रतिकारा स्त्री रसादकृत चुम्बनमेव ॥ २७ ॥
 माद्यति स्म कुसुमासवपाना कापि विह्वलविवर्णिनदृष्टिः ।
 तद्विशङ्कन्तरवल्लभगाढश्लेषपात्रमपरापि ममाद् ॥ २८ ॥
 या ददे मृगदृशः कुसुमस्रक् नाम नामभिदया दयितेन ।
 एतया लघुतयैव स वदः स्वोऽप्यचेतनहृदां हि परः स्यात् ॥ २९ ॥
 कोपि गोत्रभिदया नवमालां योषितो दददतोपयदन्यान् ।
 किञ्च तत्पदहतः पुलकाङ्गं विग्रहं दधदपीडयदेनाम् ॥ ३० ॥
 गुप्तगर्भकमपि स्फुटपुष्पं जाननी निजशुचिस्मितभिन्नम् ।
 वध्वती दयितकेशकलापं मार्जनेषु विरराम न रामा ॥ ३१ ॥
 मुग्धया प्रियतमश्चिह्नुरालीं गुम्फितुं नम्रमुखेन विवृण्वन् ।
 स्वस्तपाणिरपरासुखचुम्बी पुष्पसञ्चयपरोऽयममानि ॥ ३२ ॥
 माद्यतु प्रियकरे धृतकम्पे काप्यवद्वचिहुरा नवपुष्पैः ।
 धिक्परा प्रियतमस्वकरस्रग्वाढवद्वचिहुरापि ममाद् ॥ ३३ ॥
 यौवनोष्मभरतत्क्षणदत्तस्तानिरप्युरसि चम्पकमाला ।
 अङ्गगौररुचिगौरवलिप्ता स्त्रीजनस्य सरसैव विरेजे ॥ ३४ ॥
 मारुतेन कुसुमावचयोत्थः स्फारितो दिवि रराज परागः ।
 योषितामयममानि च मूर्त्तो मूर्त्तिमान् रुचिभरः कनकाक्षः ॥ ३५ ॥
 कान्तहस्तधुतचौरसमीरैर्योषितामभिहतः श्रमघर्मः ।
 तैरवर्धयत पुनर्मदनाग्निं दीपयद्भिरभितः परितापः ॥ ३६ ॥
 कान्तपाणिपटशीतसमीरैर्नो तथा मृगदृशो मुदमापुः ।
 दीहकोपदहनोष्णसपत्नीश्वासमारुतरयेण ययैताः ॥ ३७ ॥
 अङ्गके मृगदृशां रवितापारोपितश्चिरमराजत रागः ।
 तादृशश्रमजलापनयेच्छालोलपाणितलसङ्कुमितो नु ॥ ३८ ॥
 यत्सहस्रकरजं ह्रमवारि छिद्यते क तदपि द्विकरेण ।
 तज्जयाय निरपायमुपायं रागिणस्तदिति मज्जनमीयुः ॥ ३९ ॥
 हृत्त्वा हृत्त्वा व्रततिविततेः पुष्पभृति प्रभृतां
 यान्तीः कान्ताः सममनुचैरनीरदुर्गाय नूनम् ।

अन्वीयुस्ते चिरपरिचयात्पक्षपातैकदक्षा

लोलाः कोलाहलभरभृतश्चञ्चरीकप्रवीराः ॥ ४० ॥

इति श्रीगूर्जरभग्नाल्लमात्यश्रीवसन्तपालविर्चिते नरनारायणानन्दनाम्नि

महापाद्ये पुष्पावचयप्रपञ्चो नाम नवमः सर्गः ॥

करसरसिरुहं ते वासवेश्म श्रियोऽभू-

दजनि वदनपद्मं सप्त वाग्देवतायाः ।

इह जगति समस्ते वस्तुपाल स्तुमः कं

सधिवतिलक धन्यं तद्वदान्यं वदान्यम् ॥ ९ ॥

दशमः सर्गः ।

मौलौ सपुष्पे व्यजनायमानैः पक्षभ्रमैश्छत्रततीकृताङ्गैः ।

भृङ्गैर्मलत्तापनतापधर्माश्चेलुः सहेलं पयसे महेलाः ॥ १ ॥

मूलस्फुटाभिर्विततातपत्रच्छायाभिरादिच्छदमेचकाभिः ।

स्मेराब्जमुख्यः स्थलपङ्कजिन्यो रेजुर्गता जङ्गमतामिवैताः ॥ २ ॥

काचिद्वरे छत्रिनचीवरेऽपि सद्योऽभिधामेदिनि तापमाप ।

तस्याः सपत्नी चलितापि तापे छायाममायां पुनराससाद् ॥ ३ ॥

कह्लोलिनीभिः प्रतिपत्तिहेतोर्हंसा नियुक्ता इव संमुखीनाः ।

मञ्जीरमञ्जुकणितेन हृताश्चेलुश्चलाक्षीरभि चारुवाचः ॥ ४ ॥

अभ्यभोजसौरभ्यधरोऽभ्युविन्दुसन्दोहवाही मृदुलः समीरः ।

अभ्याययौ सम्मुखमङ्गनानां नृत्तं नदीसम्प्रहितोपचारः ॥ ५ ॥

अभ्युक्षणान्युच्छलितोदविन्दुवृन्देन दत्त्वेव नितम्बिनीनाम् ।

भूमौ स्रवन्ती लुठिता सखीव पस्पर्श पादौ लुलितोर्मिहस्तैः ॥ ६ ॥

तीरस्थिते पादयुगानि जानुदग्धे करान्कण्ठमिते मुखानि ।

राजीवयन्त्यः सलिले क्रमेण चक्रुः प्रवेशं सुदृशो नदीषु ॥ ७ ॥

पूर्वं प्रविष्टावपि नाभिदग्धे कृष्णौ हृदे व्याकुलितौ पयोभिः ।

अभ्यागतस्त्रैणनितम्बशैलाभोगेन नासामपि लङ्घयद्भिः ॥ ८ ॥

नार्यः स्तनस्तम्बनितम्बविम्बाभोगेन चक्रुर्दिगुणं यदम्भः ।

तेनेव तेने द्विगुणत्वमासां तेनापि सद्यः प्रतिविम्बयोगात् ॥ ९ ॥

लोले जलार्द्रस्तनचुम्बिविम्बे स्वे चक्षुषी वीक्ष्य तिमिभ्रमेण ।

घोर्दुर्नवोढा रभसेन कण्ठाश्लेषोत्सवाय प्रथमाय जाता ॥ १० ॥

चित्तोजपाणिन्युतनीन्वाग दूरे तत्पताः स्मृतिता करेण ।
 दीर्घा रराज स्मरकार्युक्ताय संगमज्जमानेन सृणामसोर्वा ॥ ११ ॥
 अट्ठिण प्रियाया रभमेन कथिदम्भः मदम्भः प्र पुं निर्दिष्ट ।
 लोलोऽन्यकान्तामुग्वधिभ्रमेण स्मेरं नवीपे तमन्तं तुनुम् ॥ १२ ॥
 हस्ता विरेजुः मुदृशां निमग्नाः स्वन्देऽमदन्नेऽम्भनि दृश्यन्त्याः ।
 तासां जितानीव मुग्वप्रभाभिः पद्मानि स्वर्वाऽमनोमुत्तानि ॥ १३ ॥
 साकं सखीभिः कुतुकात्तरन्ती प्रेक्ष्य प्रियं अन्यकुलत्करापि ।
 अम्भःसु नो काचिदचेतनन्त्यमंस्तम्भितन्वास्तनया समज्ज ॥ १४ ॥
 गोत्रान्तरालापकृतागसोऽपि पङ्केतं दत्तवनः प्रियस्य ।
 काचिच्चदुद्गीनपडङ्घ्रिभीत्या कण्ठेऽपि लग्ना न लतुन्वमाप ॥ १५ ॥
 खेलन् जलैः सज्जितया कथंचिद्वाग्भिः सम्वीनां सह मुग्धयान्यः ।
 तत्प्रीतिहेतोरपि हारयित्वा मेने मुहुः स्वं कृतकृत्यमेव ॥ १६ ॥
 कान्ते छलान्निर्मितनीरसेके मुग्धा सखीं यत्कुपिता जघान ।
 तं भावमात्मन्यभिशाङ्कमाने तस्मिन्सुदाऽभूत्पुलकप्रदोहः ॥ १७ ॥
 रोधस्तटेभ्यः कुतुकादभीक्ष्णं दत्त्वापि झम्पामनु चित्तनाथान् ।
 उच्चैर्नितम्बस्तनशैलभाराद्वाराः प्रपेतुः प्रथमं पयःसु ॥ १८ ॥
 क्षिप्तैः स्वयं वारिकणैर्वधूनां वक्षोजपीठाद्वलिनैः स्खलित्वा ।
 नूनं युवानो हृदये तदम्भः पुष्पेपुष्पैरिव घातमापुः ॥ १९ ॥
 सेकं सृजन्ती दयिताननेन्दौ नेत्राञ्जलिप्रेमजलैरभीक्ष्णम् ।
 शून्या व्यलासीज्जलशून्ययैव काचिद्व्यस्यासु करप्रसृत्वा ॥ २० ॥
 शङ्के तदा कैरवलोचनानां केलिच्युतैराभरणैः सरत्नैः ।
 तद्वाहिनीवारिभरप्रणुनै रत्नाकरोऽभून्मकराकरोऽपि ॥ २१ ॥
 अम्भोहतैस्ताः सरितोऽङ्गनानां नेत्राञ्जनैश्चन्दनलेपनैश्च ।
 कल्माषिता भास्करजहुकन्यासम्भेदशोभां विभराम्बभूवुः ॥ २२ ॥
 सङ्गान्तरागास्तटिनीतरङ्गाः कान्ताकुचस्पर्शविशेषलोलाः ।
 विस्रस्तहारच्युतमौक्तिकौघैः सस्वेदविन्दुप्रसरा इवासन् ॥ २३ ॥
 अङ्गच्युताश्चारुदृशां विलोककल्लोलनुन्नाः सरितां तटेषु ।
 म्लानि प्रपन्ना विरतालिशब्दाः पुष्पस्रजो मौनमिव प्रतेनुः ॥ २४ ॥
 अङ्गत्विषा चम्पकदामनीरधौतैर्नखाङ्कैर्नवकिशुकस्रक् ।
 स्त्रीणां सितेन सितमल्लिमाल्यं भ्रष्टेषु पुष्पेष्वपि मण्डनानि ॥ २५ ॥

मधोऽम्बुदुर्गं विवाचारविन्दश्चील्लुण्टनेनेव नितान्तरक्तम् ।
 चक्षुर्दृश्यं चारुदृशो दधाना मङ्गुत्तरान्ति स्म तरङ्गिणीभ्यः ॥ २६ ॥
 नृनं विनिर्यद्वनितानितम्बवक्षोजविक्षोभवियोगदुःखात् ।
 कल्लोलिनीनां रम्ममञ्जुलेन कल्लोलजालेन कृशत्वमापि ॥ २७ ॥
 गत्येशपाशे पतिनानि नृनं चित्तानि शून्यां मृगचञ्चलानि ।
 अन्यत्र गन्तुं चिरमक्षमाणि यान्ति स्मरव्याधशरव्यभावम् ॥ २८ ॥
 सीमन्तदण्डानुगतेन यस्या लाभार्ज्यचन्द्रेण जगद्विजित्य ।
 पुष्पायुधध्वजसन्निभेन क्षोभं न शम्भोरपि किं तनोति ॥ २९ ॥
 मन्ये स्मरव्याधधनुःसमानां यस्या भुवं वीक्ष्य पलायमानः ।
 पन्थानमास्येन्दुसृगस्ततान् सीमन्तमूर्त्यां चिह्नुरान्तराले ॥ ३० ॥
 शङ्खेऽयतंसागुजपद्पदानां गीतेन पक्षानिललीलया च ।
 कर्णात्सुखं धावति नेत्रयुग्मं यस्या मनोभूसृगयासृगाभम् ॥ ३१ ॥
 भ्रूपक्षरेण्वास्त्रचिरस्य कासकीरस्य यस्यास्तनुवल्लिभाजः ।
 नासा विभाति स्फुटपाटलौष्ठविम्बीफलासत्तिनतेव चञ्चुः ॥ ३२ ॥
 यस्याः कपोलौ मदनावनीशकान्ताढ्यीखेलनकुट्टिमाभौ ।
 नासाविभक्तौ श्रुतिपाशलोदोलाश्रितौ कस्य न सम्मदाय ॥ ३३ ॥
 कीर्तिप्रवाहो नवयौवनस्य शृङ्गारयोनेर्जयवैजयन्ती ।
 पुण्यात्मनः कस्यचिदङ्गिपुण्यं यस्याः स्मितं राजति हारहारि ॥ ३४ ॥
 यस्या मुखे दन्तततिर्नितान्तमोष्ठप्रभापाटलिता चकास्ति ।
 आर्द्राऽपदश्रेणिरलक्तकाङ्क्षा वाग्देवताया इव सञ्चरन्त्याः ॥ ३५ ॥
 यस्या विराजत्यधरोऽगणश्रीज्योत्स्नासगर्भस्मितकान्तिगर्भः ।
 कामस्य रुद्रानलविदलस्य पुष्पप्रवालप्रथितेव शय्या ॥ ३६ ॥
 यस्या हृदन्तर्गतपुष्पवाणत्राणप्रसूनैरिव जातसङ्गः ।
 श्वासानिलश्चञ्चलचञ्चरीकचेतोहरं सौरभमातनोति ॥ ३७ ॥
 नासीरवीरः स्मरपार्थिवस्य वाङ्माधुरीधुर्यगुरुः पिक्वीनाम् ।
 मन्ये स्वयं वादयते वसन्तो यत्कण्ठकम्बुं मधुरारवेण ॥ ३८ ॥
 कर्णावतंसांभुजगन्धगुञ्जङ्गीव येनेव नतौ दधाति ।
 अंसौ रतिप्रीतिसह्यधिरोल्लपत्यासमौ या स्मरचित्रशाला ॥ ३९ ॥
 यस्याः कपोलेन्दुयुगस्य रश्मिदण्डाविव द्वेपगृहीतपद्मौ ।
 बाह्व जपाकुञ्जलपाटलत्वलुण्टाकपाणी विशदौ विभातः ॥ ४० ॥

मुक्त्वा मृणालीमृदुमप्यमान्तं रोमालिमूर्त्या निजचापदण्डम् ।
 यस्याः स्तनौन्नत्यनिरन्तरालद्वारेप्यनङ्गो हृदये विवेश ॥ ४१ ॥
 मध्ये न मन्ये विजितो नताङ्गथाः पञ्चाननः काननवद्धवासः ।
 यस्याः स्तनस्तम्बतटीधियेव कुम्भीन्द्रकुम्भौ कुपितो भिनत्ति ॥ ४२ ॥
 जित्वा प्रसूनैरपि विष्टपानि जेतुं त्रिशूलायुधमप्यजेयम् ।
 मन्ये यदन्तस्त्रिवलिच्छलेन शल्यत्रयं सज्जयते मनोभूः ॥ ४३ ॥
 यस्याः कलापानणुकिङ्किणीनां काणै रतिर्नृत्यति मध्यसीम्नि ।
 तत्तत्पदैकभ्रमिपार्ष्णिचिह्नशोभां सुवृत्ता वितनोति नाभिः ॥ ४४ ॥
 यस्या विभाति स्मरभूमिपाललीलागृहश्रोणिकृतप्रतिष्ठात् ।
 रोमावली काश्चिमणिप्रदीपादभ्युत्थिता कज्जलमञ्जरीव ॥ ४५ ॥
 यस्या नितम्बो गुरुरेव भाति पञ्चेषु पृथ्वीपतिपूजनीयः ।
 यत्सेवनादेव दिने दिनेऽपि काञ्चीकलापस्य गुणप्रवृद्धिः ॥ ४६ ॥
 आभाति यस्या जघनप्रदेशः कामस्य लीलाखुरलीगृहाभः ।
 ऊरुस्थलद्वारि निवेशिरम्भास्तम्भद्वयीतोरणदत्तशोभः ॥ ४७ ॥
 यस्या नितम्बस्थलभूरिभारक्रान्तस्य जङ्घायुगलस्य गौरम् ।
 कल्याणमञ्जीरक्षचिच्छलेन निस्यन्दि लावण्यमिवावभाति ॥ ४८ ॥
 वक्षोजशैलान्तरिते मुखेन्दौ सन्ध्यारुणं पादयुगं यदीयम् ।
 विष्वग् नवैस्तारकितं सरोजम्लानिक्षमं वीक्ष्य न कः सकामः ॥ ४९ ॥
 लीलागतिं शिक्षितुमभ्युपेतैर्दिव्यैरदृश्यैरिव धातृहंसैः ।
 या स्तूयते सञ्चरणेषु मञ्जुसिञ्जानमञ्जीरवच्छलेन ॥ ५० ॥
 निःसीमसीमन्तमणिर्वधूनां कन्या जलौघादथ निःसरन्ती ।
 आकृष्यमाणेव पुरः स्तनाभ्यां मन्दं सुदुर्वाह्यनितम्बभारा ॥ ५१ ॥
 लावण्यपूरानिपरीतदेहनिस्पन्दवत्तोयकणान्किरन्ती ।
 पार्थेन मद्यो मदनातुरेण विष्णुस्वसादौ ददृशे सुभद्रा ॥ ५२ ॥ (कुलकम्)
 नीराट्चीरान्तरदृश्यमानमर्वाङ्गलावण्यविशेषरम्याम् ।
 पटयन्निमां मन्मथमध्यमानचेताश्चिरं चिन्तयति स्म पार्थः ॥ ५३ ॥
 बृद्धः स धाता ग्लु यः किलास्मिन् दृष्टेऽपि पूर्वं घटिते मुखेन्दौ ।
 माक्षादनुङ्घिमनोविकारो निर्मातुमेतां सकलां शशाक ॥ ५४ ॥
 प्रेमोष्णं मार्जयिता मृकेऽयाः केशानिमान् कः मुकृती कराग्रैः ।
 अग्न्याः कणादग्निबिलम्बिबिम्बे मञ्जरायँद्रोचनमाननेन्दौ ॥ ५५ ॥

Price Rs. 1-4-0.

Circle, Fort, Bombay.

the Gujarati Printing Press, No. 8, Sassoon Buildings,

Baroda, for the Baroda Government, and Printed by Manilal Icharam Desai, at
Published by Janardan Sakharam Kudalkar, M. A., L.L. B., Curator of State Libraries.

उत्तराधिकारिभारतस्य विविध विषय
सर्वे एते विषय विवेचिताः एते विषयः ।
अस्माकं विषयः एते विषयः ।
एते विषयः एते विषयः ॥

परिद्यापितदीर्घिकाजले सदेसा समीरितवसंसरे ।
कनकोज्ज्वलया सुमदया निविष्टं दृष्टेसुखादं फाल्गुनः ॥ १ ॥

अथ मङ्गलं इति प्रविष्टया मदनविषयकवर्णनाभ्याम् ।

एकादशः सर्गः

सा सेवकेषु सुखसुसुखवाप्नुयति ॥ १० ॥

श्रीवस्त्रिपाल तव गालिनीपालनेन

यादयेष्वले सपादे सङ्गतिव सभावा ।

या श्रीः स्वयं विनयवतः पदपयससा

महाकाव्यं सुखददंतीनां नाम दशमः सर्गः ॥

इति श्रीगङ्गाधरमहात्म्यश्रीवसन्तपालविषये मदनमध्यामनन्दनामि

विष्णुदर्शनेनां जगाम सुखदां नेनैव दत्तोत्सवः ॥ ११ ॥

अन्याऽन्यमयमनमनसरसो दृष्टा च नो हृदिमाग

कामः कीर्तिमवप कामपि तदा युयां धृतिरिणाम् ।

एकादशि स्वयमेककालमिषुमिभिर्दन्तसुमदंजुना

कन्दर्पुषा देवा च सा इति तदा कर्णान्तनाम्नैः श्रुतैः ॥ १० ॥

लावण्यकलिकानामिन्द्रतनुर्भूदृष्ट्य दपञ्चन

दोषः सोऽपि सुमदया निजसखीसञ्जोषलक्षेया ।

इत्यन्तःप्रथमानसञ्जोषलक्षः प्रकटज्यया-

सङ्कटः परिरम्भदम्भनिभृतं प्रमासृतं पश्यति ॥ ११ ॥

को धन्यः सनसम्भ्रमविमलसुखावलीविन्दक

भृङ्गामासदेदराः प्रतिपदं वन्दे कदाश्चञ्छदाः ।

पुनरप्यः अवगावत्सकलिकसिरभ्यलभमभमद-

साक्षाद्वर्णमपि कामलोः कन्दर्पकथोर्विना दृष्टेव ॥ १८ ॥

अस्या विनयम इति पञ्चवर्णं कंषादसम्भासविशेषेपरेणाम् ।

कामादीनां कः स्वयमेव धन्यः प्रोक्षपराधोऽप्यनयाऽनुनेयः ॥ १७ ॥

पादंशोऽपि न मे प्रसादयेया विधातेति सुधैव निष्ठम् ।

चक्षुःपथानाऽपि मुखं कदाश्चनारोचपात्रैरभिजात्यमानः ॥ १६ ॥

वृत्तः कन्दर्पमापददृष्टोऽस्याः कन्दर्पुर्दृष्टो इति कः प्रोक्षम् ।

॥ १ ॥ ...
॥ २ ॥ ...
॥ ३ ॥ ...
॥ ४ ॥ ...
॥ ५ ॥ ...
॥ ६ ॥ ...
॥ ७ ॥ ...
॥ ८ ॥ ...
॥ ९ ॥ ...
॥ १० ॥ ...
॥ ११ ॥ ...
॥ १२ ॥ ...
॥ १३ ॥ ...
॥ १४ ॥ ...
॥ १५ ॥ ...
॥ १६ ॥ ...
॥ १७ ॥ ...
॥ १८ ॥ ...
॥ १९ ॥ ...
॥ २० ॥ ...
॥ २१ ॥ ...
॥ २२ ॥ ...
॥ २३ ॥ ...
॥ २४ ॥ ...
॥ २५ ॥ ...
॥ २६ ॥ ...
॥ २७ ॥ ...
॥ २८ ॥ ...
॥ २९ ॥ ...
॥ ३० ॥ ...
॥ ३१ ॥ ...
॥ ३२ ॥ ...
॥ ३३ ॥ ...
॥ ३४ ॥ ...
॥ ३५ ॥ ...
॥ ३६ ॥ ...
॥ ३७ ॥ ...
॥ ३८ ॥ ...
॥ ३९ ॥ ...
॥ ४० ॥ ...
॥ ४१ ॥ ...
॥ ४२ ॥ ...
॥ ४३ ॥ ...
॥ ४४ ॥ ...
॥ ४५ ॥ ...
॥ ४६ ॥ ...
॥ ४७ ॥ ...
॥ ४८ ॥ ...
॥ ४९ ॥ ...
॥ ५० ॥ ...
॥ ५१ ॥ ...
॥ ५२ ॥ ...
॥ ५३ ॥ ...
॥ ५४ ॥ ...
॥ ५५ ॥ ...
॥ ५६ ॥ ...
॥ ५७ ॥ ...
॥ ५८ ॥ ...
॥ ५९ ॥ ...
॥ ६० ॥ ...
॥ ६१ ॥ ...
॥ ६२ ॥ ...
॥ ६३ ॥ ...
॥ ६४ ॥ ...
॥ ६५ ॥ ...
॥ ६६ ॥ ...
॥ ६७ ॥ ...
॥ ६८ ॥ ...
॥ ६९ ॥ ...
॥ ७० ॥ ...
॥ ७१ ॥ ...
॥ ७२ ॥ ...
॥ ७३ ॥ ...
॥ ७४ ॥ ...
॥ ७५ ॥ ...
॥ ७६ ॥ ...
॥ ७७ ॥ ...
॥ ७८ ॥ ...
॥ ७९ ॥ ...
॥ ८० ॥ ...
॥ ८१ ॥ ...
॥ ८२ ॥ ...
॥ ८३ ॥ ...
॥ ८४ ॥ ...
॥ ८५ ॥ ...
॥ ८६ ॥ ...
॥ ८७ ॥ ...
॥ ८८ ॥ ...
॥ ८९ ॥ ...
॥ ९० ॥ ...
॥ ९१ ॥ ...
॥ ९२ ॥ ...
॥ ९३ ॥ ...
॥ ९४ ॥ ...
॥ ९५ ॥ ...
॥ ९६ ॥ ...
॥ ९७ ॥ ...
॥ ९८ ॥ ...
॥ ९९ ॥ ...
॥ १०० ॥ ...

५३

व्ययव्ययिकं सर्वमिमां रचितानेकतन्मनाभयः ॥ ३१ ॥

मदनीं मुहुरितैः शौर्यैवमभ्यस्यति सुखंभवतिनाम् ।

करोतां नयते यतः करोमपि वेद्याकृतविग्रहमिमाम् ॥ ३२ ॥

विधाययमन्त्रकोविदां दूतेनस्तम्भविधिं चल्युभयाः ।

विरहेनलविह्वले सज्जितैर्निद्रयापि यय नभ्यसे ॥ ३३ ॥

विरहेव्ययमा ननु हिवा रुक्मिणी ददंयुं मृगारुहः ।

निजदेष्टुमिवावबन्धुः कठणामिभ्युमराल पालय ॥ ३४ ॥

चलतां पुनरेव जीवितं स्वयमस्या लघु कण्ठमार्गितः ।

परिपूतमभवन्मुखाधरद्विजयैर्परययवर्हितम् ॥ ३५ ॥

दशवारिविन्दुमिभ्यो जगते छठद्विभयाञ्चैः करजलेखनिकागृहैः ।

एवं कथञ्चन विद्युताभयविरयं लेख्यं विलिख्य ननु मां भवते न्ययुक्ता ॥ ३६ ॥

इत्यपि चतुर्या त्वरितं गृहीत्वा लेखं निधाय हृदि सौष्टं च जानताः ।

देवपुत्रपुरंदरनरम् मुहुरिः प्रभात्यु चक्षुः कथञ्चिदपि वाचयति स्म पार्श्वः ॥ ३७ ॥

इतिभः प्रसस्यमुद्राचिभिरमिह्मिद्योऽपि भिद्योऽपि न

स्थाने मन्मथदधपावकमृतिं शिषोऽपि नरोऽपि न ।

सौमन्यैकनिकेतकानिजलदेरीलोलामिरनसुहृदं

दत्तं निर्दयं वज्रसारवर्धितं जाने भवन्तं ततः ॥ ३८ ॥

प्रियासक्तं वल्लभः कथम परिहोसोऽपि न जाने

न च स्थानः कान्तालिलिनि कलविह्वेऽपि कलहः ।

न बाल्यं पाञ्चालीमृगमपि तल्पं विवर्धितं

न तदन्ते कस्माद्विषयं कृपणायां मयि मनः ॥ ३९ ॥

इति लेखमेव निविडयेमनरुहं विद्याय विरमन्तः ।

उद्गसमाननिभैरभावमरो हृदि सुदा निदधौ ॥ ४० ॥

यशोजापातिरिति स्तनपरैरन्मममोदं दधत्

दृष्टिद्वन्द्वपरिच्युतैरिति मुहूर्तजावलेकस्मयम् ।

सदाः पाणिद्वन्द्वैरिति मन्त्रययोरितिव सौजन्यै-

वाच्यनिर्मितमेव वाक्यं लिखितं कैः कैः भवेत् रसैः ॥ ४१ ॥

शरीरेऽपि विस्वजानोऽपि मनोभवस्य नो चेद्विभक्तिं ललनालितव्युत्पत्त्यम् ।

नरिक् कुलं न च भोजितेन न भोजि खाद्यनपातकमपि स्वविषयोपादत्तम् ॥ ४२ ॥

इति सिद्धादिनि च कृत्स्नानामुक्तकामाकृत्य विरहद्विषयसिद्धिचिन्तनं ।
 इति सिद्धादिनि विरहद्वेदनानामुक्तकामाकृत्य विरहद्विषयसिद्धिचिन्तनं ॥ ४३ ॥ (अथ)

सा इति नद्वैतस्य मनसि स्थिते लक्ष्मिना

स्थिताः कतिपयैः कतिपयैः न च नद्वैतसिद्धिचिन्तनं ।

किन्तु त्वं स्वयमावयवविपरिवर्तमानैः सन्तः-

इति मौक्तिकानामुक्तकामाकृत्य विरहद्विषयसिद्धिचिन्तनं ॥ ४४ ॥

विज्ञाप्या सुदृढं त्वया पुनरिदं सा स्वामिनी मतिरा

सदाः पावकमपकाञ्चनमयी किं देवि मुनिस्तव ।

कामदोषिभिरुज्ज्वलैः सगुणैः स्वान्तर्गतैः यत्

तापं कञ्चन चन्दनदिभिरपि उज्ज्वलैः सगुणैः यथाः ॥ ४५ ॥

इति चन्दनमपि स्वदानमपि यदेति देवादिभिः

नाप्यप्युज्ज्वलैः जगद्दिव्यैः किमप्युज्ज्वलैः यथाः ॥

नति चन्द्रयुक्तामलमदपि विज्ञापिनामपि

पारम्यस्य सुदृढं त्वया न च स्वामिनी यदेति ॥ ४६ ॥

नद्वैतस्य स्वतन्त्रमपि कान्तं चन्दनमपि यदेति मुनिस्तव ।

इति मौक्तिकानामुक्तकामाकृत्य विरहद्विषयसिद्धिचिन्तनं ॥ ४७ ॥

महेश्वरं देवि जगद्दिव्यैः जगद्दिव्यैः यथाः ॥

स्वतन्त्रमपि यदेति देवादिभिः यथाः ॥ ४८ ॥

नद्वैतस्य स्वतन्त्रमपि कान्तं चन्दनमपि यदेति मुनिस्तव ।

इति मौक्तिकानामुक्तकामाकृत्य विरहद्विषयसिद्धिचिन्तनं ॥ ४९ ॥

स्वतन्त्रमपि यदेति देवादिभिः यथाः ॥ ५० ॥

अद्वैतः सा. ।

सुखं स्वतन्त्रमपि यदेति देवादिभिः यथाः ॥

स्वतन्त्रमपि यदेति देवादिभिः यथाः ॥ ५१ ॥

इति मौक्तिकानामुक्तकामाकृत्य विरहद्विषयसिद्धिचिन्तनं ॥ ५२ ॥

स्वतन्त्रमपि यदेति देवादिभिः यथाः ॥ ५३ ॥

इति मौक्तिकानामुक्तकामाकृत्य विरहद्विषयसिद्धिचिन्तनं ॥ ५४ ॥

रथारोहेऽथ नौ दृष्टहेस्तलित्तलसदृशौ ।
नाकट्टिमद्योकरणयो नरोहिं च दृष्टिस्त्वसा ॥ ४ ॥

दधत्या स्पर्शद्वनरोहिं चापत्यमथ बालया ।

नहिङ्गितधित श्रेष्ठमासो वासवजन्मवः ॥ ५ ॥

रथारुपप्रथमोत्थानः पार्थुस्तथाभवद्विस्मयः ।

प्रियया प्रथमार्द्धिकठपौडस्तथ शीतया ॥ ६ ॥

रथस्ववलनशीलोलकानालिङ्गितवक्षसः ।

पार्थुस्तथैवतप्रान्तोपलैङ्गितानामणीधितम् ॥ ७ ॥

लोलाः कोलाहेलभ्रतः पार्थुश्चैर्महामहुराः ।

सुमदरवक्षका जम्बुवलयमदसमाभय ॥ ८ ॥

सुमदा सम्यगिति स्वामिन् वैवतवतिस्वामिनि ।

याना मन्मथपूजार्थं पार्थुनापहृता दृढतले ॥ ९ ॥

हेत्याकण्ड्यु नदा सौरो सकम्पमधरं दधौ ।

सद्योहृदोसकोपाधिनवकोलाशिखामिषमम् ॥ १० ॥

सौनन्दिनः सदासमद्यपानपटलिते दृशौ ।

पतन्त्यौ मुहुरन्त्रेणु व्यवजयामासतुः क्रियम् ॥ ११ ॥

अदर्शो बलदेवस्तथ कपोलमलदधूषा ।

नक्तण्णकालिमन्त्रय्या प्रकोपः प्रतिविम्बितः ॥ १२ ॥

कोपे बलस्तथ नापीहि दृष्टोऽप्योष्ठस्तदा रद्वैः ।

असक्तरोचनीदन्तसन्तताभ्यासमासुरः ॥ १३ ॥

रत्नपादांसने पाणिष्ठापिते यमोन्मिद्यवाहिते ।

अर्द्धिश्चाप्यद्विपन्मालिखन्तजस्यस्मरद्वलः ॥ १४ ॥

कर्पूर्याः कर्पितानाऽभूदप्यमारापद्विरेपनिष्णवः ।

अथापुः कोपदावाधिकोललोला समामयः ॥ १५ ॥

अभिभूयस्तम् गदः किञ्चित् प्रसृतेऽद्वैतान्मुखे ।

लोला विष्टा प्रकोपस्तथ दृष्टान्तलज्जनीमिव ॥ १६ ॥

प्रादोपगतसङ्क्षोभाद्वद्विमात्राकञ्चुकः ।

मन्योऽर्द्धिकेतवर्धनं कृतवर्षा व्यराजत ॥ १७ ॥

यया सपुत्रया क्रुध्यवर्धनमहल सात्यकिः ।

नया पथि सुदंष्ट्रान्कणोऽन्यस्याः क नन्दवेत् ॥ १८ ॥

सरभापशः पृथ्वरेषु विवचयोजय ।
 नीवात्रेषु दिवचक्षि ययस्मापि यय जयथा ॥ १९ ॥
 अहं ययुहमदंन मयारत्नान्युपापति ।
 प्रकाप नीवनसाहं देयानाव यय-पुण्य ॥ २० ॥
 आसनानमिव व्यापयुत्सिकः आनयं शिरः ।
 भुक्तः स्फुटकटकरं निरिष्येप रदानं रदः ॥ २१ ॥
 दानपतिकमिभयः पृथक्कुलिङ्गवलिमाहितोम ।
 वयात् कोपानलस्येव दयां विद्धि गवेष्णः ॥ २२ ॥
 खनिः शनैरभृणोति प्रहेतस्तमसमभवः ।
 सुन्दरमातिनिभुञ्ज्य देवः स्फुटदंस्वरः ॥ २३ ॥
 शृणोति नालीसिद्धावबुधोनालपद्विभम ।
 सुन्दरपद्विभुञ्ज्य देवोतिना पाणिना पृथुः ॥ २४ ॥
 पयपुवृणुस्त्वाप्य किञ्चिद्वैमङ्गलसञ्जया ।
 अयुर्वृत्तिपतित्युक्ते सोरो संजयया शिरः ॥ २५ ॥
 वाहं मुक्तवः पृथुं गच्छेदं मर्हिरा वद ।
 क रं वजसि दौमद्यययावरकर तस्कर ॥ २६ ॥
 कौलिभ्य कलिबोरत्वं विवृत्ता शोखवेदिना ।
 साहं व त्वयामर्हि सर्वमकपदे वद ॥ २७ ॥
 त्वं वदोपसन्नं प्राप्य सुखददेयो विद्योनिनाम ।
 देवः सर्वाहं विस्मृताकलङ्कितम विवृत्ति ॥ २८ ॥
 वृत्तस्मिन्निवसनात्ते श्यते सर्वसि लज्जितः ।
 सर्वाङ्गीणानिमेपयशो वयां पद्विष्यते कथम ॥ २९ ॥
 वृत्तानः सत्या स्या सधारादस्माकं गवेषुतः ।
 पुनं न भवता मित्रा ददितानव कुलीनता ॥ ३० ॥
 मूर्धैरस्माभिरस्यापि श्रेयं पस्वति साहदंम ।
 नदिपुष्टि सुययुक्तिरतिरति मणिप्रभा ॥ ३१ ॥
 वदता कोपका संरदिते त्वदेरः स्यात् ।
 प्रतापपादं विवचयानि वद्वेषुयमा ॥ ३२ ॥
 भवानं वृषवदस्माकं स्यात् स्यात्तः ।
 वानिष्य भवत्युनिः श्यः कीर्तिनाहं स्यात् ॥ ३३ ॥

स्थिरोभव क गन्तासि मयोपकिशतां तव ।
 दंष्ट्रीष्वप्यसिद्धयेन स्वर्गं प्राप्स्यस्यसिद्धिं यतः ॥ ३४ ॥
 कुलजीवितामस्माकं कन्येयं भवतां देता ।
 त्वामेकमेव मे देन्तुः क भविष्यति निर्वृतिः ॥ ३५ ॥
 राधा परकाकान्तेभ्यनराया विवर्द्धितं यशः ।
 तस्य छिन्नाया वक्रशोभा स्मेरिष्वेव यजुःसततम् ॥ ३६ ॥
 रे चौर यदि सौजन्यं नाददंमपि विस्मृतम् ।
 तर्हि महाभयप्रादोऽपि विस्मृतोऽपि कपालभित्ते ॥ ३७ ॥
 सावसवस्तथैवमेव तव मौलिं प्रपूजति ।
 मदङ्गौ त्वच्छिरोरगनाङ्गुराः क्षतिकया यदि ॥ ३८ ॥
 हृदयान्ते कुण्डलसुखाय त्वयैव दुष्कृतं कृतम् ।
 निःशङ्कमिति सर्वेषु कस्मिन् नहि वा तव ॥ ३९ ॥
 देत्युक्तवा प्रेष्य तं दूतं कामपालः करालदंके ।
 उवाच कृतवर्माणं कोपस्वबलितया निरा ॥ ४० ॥
 सेनाभूनां समादाय गच्छ सत्सत्त्वं सत्वरम् ।
 तथा ऊह यथा त्वयं जीवतं याति मलिनस्थः ॥ ४१ ॥
 उत्तिष्ठोत्तिष्ठ युद्धैकमहोत्साहिक सत्यके ।
 गच्छामासिः समं यैर्मुह्यतां गृह्यतां शतः ॥ ४२ ॥
 दंतं मा स्म विलम्बन्त भवन्तः सन्ततोऽञ्चलः ।
 पृष्ठेऽहं प्राप मयैव पुरस्कृत्य मुरहिणम् ॥ ४३ ॥
 दंष्ट्रादंशं समासाद्य कृतवर्माणोऽञ्चलम् ।
 ददयद्ददुगुं प्रापदंतस्मदनकतनः ॥ ४४ ॥
 सेनापतयः कोऽन्ययैवैवास्तदावृत्तिवृक्षेभ्यः ।
 अस्मादापि मेव निमुक्त उच्छासापयिष्यतिः ॥ ४५ ॥
 उतः पुरःस्फुरत्स्फुरद्दोषमनरोक्षिणः ।
 दंतद्विधं दिवं मुक्तीकापयवत्कौलया ॥ ४६ ॥
 गतं सगतामनं तं गच्छतां मूर्च्छितानिभ्यः ।
 निवृत्तवर्णमपि मयैव पुरः ॥ ४७ ॥
 (४७) (४७) ॥ ४८ ॥

उदन्तदंष्ट्रकोपागिरिदंष्ट्रिव दंष्ट्रिमः ।
 उपादंष्ट्रः यदा वाचमिन्नुवाचाव्युत्पन्नं प्रति ॥ ४९ ॥
 स कुलीनः कलादाली शूरः साहसिकगणः ।
 सुहृत्वापापुमन्मन्त्रोमवापुत्तिष्ठते न किम् ॥ ५० ॥
 निजं प्रकटितं तेन शौण्डे चोष्णं विनन्वता ।
 अनन्विष्यन्त्वमप्येवं शौरि शौरो भविष्यति ॥ ५१ ॥
 भूधुं स पाति चेत्तत्त्वं दंष्ट्रिम भूम्पाङ्गित्वया ॥
 यदि पाति दिवं दृष्टस्तन्मायं सिद्धयेव मे ॥ ५२ ॥
 वयः सुहृदंश्च स्नेहभयशौचो बलीयसास ।
 वायुरेतिवयस्योऽपि निवर्षयति दीपकम् ॥ ५३ ॥
 पश्यश्रीहरेणवयः प्रत्यये पश्यवन्नुता ।
 वर्जिताऽपि स्वयं पश्य कां दंष्ट्रां नीयते शोयो ॥ ५४ ॥
 अपश्योऽप्यस्यकर्णाऽपि लङ्घयमानो दंष्ट्रापट्टिः ।
 परित्यक्तोऽप्यस्योपात्तं न तस्मादपि शोयसे ॥ ५५ ॥
 विहस्ययति सौदृष्टं यद्येवं प्रति सम्प्रति ।
 तत्सङ्घट्टय तैवेव द्वावप्यङ्गीकरोतु मया ॥ ५६ ॥
 कौन्तेये सदृशा भूयो कौन्तेयस्त्वेव वर्जिता ।
 सोऽप्यस्यैव कृत्रिमः शत्रुमेव तत्किमुपदेयते ॥ ५७ ॥
 विरुद्धः स्वोऽपि दंष्ट्रापि दंष्ट्रिं प्रत्युत रक्षितः ।
 निजार्जिताऽपि योगः स्याद्विजयः किं न सत्यमेव ॥ ५८ ॥
 उभयवृत्तिव वधून्नामिति निदिरया निरा ।
 सुधाः सान्त्वयितुं त्र्येष्टं चक्रपाणिः प्रयत्नमेव ॥ ५९ ॥
 त्वददंष्ट्राविषयोऽस्मि किमप्यु मयि कृष्यसि ।
 वदं कायं प्रवृत्तं नो ममन्तः सदृशैव किम् ॥ ६० ॥
 सदृसा मदेसा दंष्ट्रां वीर्यं दौषं दालद्वलम् ।
 मणिधान्या पतन्तः कां लभन्ते शालमा दंष्ट्राम् ॥ ६१ ॥
 सुधाशुधिममिमधौले सुवशोपिपति पशते ।
 अथान्ता देहवृद्धया काः क्षिपन्पाणि न शोयते ॥ ६२ ॥
 मयं पान्तेव जीवते गतिनतिनतिमात्रे ।
 उदन्तदंष्ट्रियान्ता सदृसा साहसो दंष्ट्रिः ॥ ६३ ॥

हरः पर इयैश्वर्ये शास्त्रे गुरुरिवापरः ।
 स्मरोऽन्य इव सौन्दर्ये शौधे किन्तु स एव सः ॥ ७९ ॥
 तत्कोपस्त्यज्यतां तस्मै स्वसेयं दीयतां स्वयम् ।
 आवां गच्छाव एवाशु सैन्यं यावत्त हन्यते ॥ ८० ॥
 इति हलभृतो विश्वस्वामी सुधोर्मिकिरा गिरा
 विपमिव रूपं मन्त्रज्ञोऽसावपास्य शनैः शनैः ।
 अचलदचलप्रेमा क्षेमङ्करोऽथ किरीटिने ।
 स समममुना तूर्णं पूर्णामिलाषलसन्मनाः ॥ ८१ ॥

इति श्रीगूर्जरेश्वरमहामात्यप्रीवसन्तपालविरचिते नरनारायणानन्दनाम्नि
 महाकाव्ये सुभद्राहरणो नाम द्वादशः सर्गः ॥

शूरो रणेषु चरणप्रणतेषु सोमो वक्रोऽतिवक्रचरितेषु बुधोऽर्धबोधे ।
 नीतौ गुरुः कृतिजने कविरक्रियासु मन्दोऽपि च ग्रहमयो न हि वस्तुपालः ॥ १३ ॥

त्रयोदशः सर्गः

स्मितशक्तिरितोऽपि कोपतप्तश्चरवाक्यैः समरार्थमात्य पार्थः ।
 अपि धन्विभिरन्वगामि भूपैः कृतवर्मादिभिरार्द्ररौद्ररोषैः ॥ १ ॥
 प्रथमाहितदृतदृतभीष्मप्रमुखात्मीयसमग्रवर्गदुर्गः ।
 समनीनहृदप्यथो पृथाभूः पृतनां शत्रुषु योद्धुमुद्धरेषु ॥ २ ॥
 अथ तस्य चमूयुगस्य तूर्यध्वनितैः कर्णरसायनैर्भटानाम् ।
 गुरुमन्दरकन्दरोदरोत्थप्रतिशब्दद्विगुणैर्जगज्जगाहे ॥ ३ ॥
 इति वर्मभृतः क्षणेन दत्त्वा चिरदाक्षिण्यवशाद्भृशं प्रियासु ।
 प्रणिपत्य गुरुन्विनर्त्तितास्त्रा वरवीराः समरश्रिये विलेसुः ॥ ४ ॥
 परिरम्भपरप्रियाकुचाग्रश्लथवन्धं रणतूर्यतज्जितात्मा ।
 कवचं पुलकोच्चयप्रपञ्चैस्तटिति त्रोटयति स्म कोऽपि वीरः ॥ ५ ॥
 परिरम्भिणि वल्लभे रणान्तर्गमनोत्के कृतकं परा हसन्ती ।
 कलिताशकुनात्तिरेप मा भूदिति दक्षाभिनिनाय हर्षमिश्रैः ॥ ६ ॥
 अपि चाटुगिरा प्रिये समन्तादददाने परिरम्भणं रणोत्के ।
 चलितेऽपि च धीरपादपातं पुलकं काचिदुवाह वीरपत्नी ॥ ७ ॥
 अथि वीरशिरोमणिः पिता मे धिष्ठां तुभ्यमदत्त कातराय ।
 विमनस्कमवेक्ष्य युद्धबुद्धौ प्रियमुत्साहयति स्म काचिदित्यम् ॥ ८ ॥

चरणोद्धतधूलिधूमितागा दृढखट्वाहतिविस्फुटस्फुलिङ्गाः ।
मणिकञ्चुकदीपिनोऽथ देहयुधि ते कोपदवा इवाह्वयन्तः ॥ २४ ॥
प्रतिघातविनिस्सृतां पुरस्तात्पदचारस्रवलनोद्धुरापराधाम् ।
असिनाऽन्वततिं विकृत्य कोपाचलितः कोऽपि जवान धैर्यिन्नात्म ॥ २५ ॥
कृतदुङ्कृतिकम्पितोष्ठमन्तर्वत मन्त्रं कमपि ध्रुवं जपन्तौ ।
अपरौ करवालसर्पदंशात्पतितावाञ्च मिथो नरेन्द्रवार्गा ॥ २६ ॥
अरिषु प्रवलप्रकोपहृक्काध्वनितैरेव भयोच्चित्रतायुधेषु ।
युधि कस्यचिदक्षितेजसैव क्षतजालिस इवाभयत्कृपाणः ॥ २७ ॥
युधि कोऽपि ददर्श कुम्भिकुम्भौ स्मृतकान्नाकुचविभ्रमच्युताग्रः ।
अपि तस्य कराङ्गलीलया तौ घुटितौ तु क विल्लाघ नष्टदम्भ ॥ २८ ॥
अपरौ हरिसारथीनभिन्दुदितक्षत्रचरित्रभीषचित्रः ।
रथिनः परिपातयन् रथोद्यं व्यधित प्रागिव सज्जिनं रथिन्यः ॥ २९ ॥
असिघातहर्तृकालोममूलं तुरगेभ्यश्चतुरोऽश्वयारण्यम् ।
परिपात्य परांऽङ्घ्रिपार्णिपाते घट्टिनि क्षुण्णकलापकं जवान ॥ ३० ॥
परिणन्तुमुदग्रदन्तदण्डाः स्फुटमन्योन्यकृताद्रिपादजज्ञाः ।
मदनिर्घरश्वात्कृतोऽभ्यधावप्रभितः कुम्भिकयराः फालगुह्यम् ॥ ३१ ॥
अमिलन्करिणो रणेऽभिपिक्ताः स्वयमन्योन्यपरान्तराद्वर्जितः ।
दशनाग्रमिषोत्तरिष्फुलिङ्गस्फुटनीराजनराजिराजमानाः ॥ ३२ ॥
समुदस्य करी करिन्द्रमेवाः कालीलाकुलुकातयोऽन्यादे ।
भ्रित्तिभङ्गभिषेय दन्तपासे निपतन्तं विशरावदस्य भयः ॥ ३३ ॥
अपरः प्रचिपोरदन्तघातो युधि विघातय परस्मिन् निपेतः ।
अपि धैरिजिताय शाश्वतानि प्रदर्श रवीयनिकारिणि पराजितः ॥ ३४ ॥
निजघान विशगदन्तमग्रे करिणं पीडय श्वात्तुल्यशक्तम् ।
युधि कोपनकुम्भिनोभिरोधः किल नश्यत् पार्श्वे पतेत् तैले ॥ ३५ ॥
रणभग्नरदोऽपि क्षणद्वाराज रणयुत्तवाय स्यं विरुचिबलम् ।
निजघान स्वयं तस्य शौली निज परमस्मितामनो रतेजः ॥ ३६ ॥
रथमेकशयाजमुज्ज्वलं कूर्णं परिपूर्णं तु शतानि ध्वजैः ।
युधि कोऽपि मलानिर्घाय ज ते द्विवि शिखारं र रणयुत्तवः ॥ ३७ ॥
करिणा युधि वेतसिभग्नः प्रसन्नं मुक्तमनोत्तमो धर्मेण ।
मगनेऽपि सिधायुज्यमावसितराशिः सज्जिते दृष्टे हते ॥ ३८ ॥

प्रहिता बलगौरवेण पूरं करिणा केनचिदम्बरे तुरङ्गाः ।
 अपतन् भुवि नित्यदत्तफालप्रथिताभ्याससुखेन चाश्ववाराः ॥ ३९ ॥
 मणिमण्डनमण्डलीमयूखच्छुरिताङ्गा हरयो महारथेण ।
 अभिपेतु रथाग्रभागजाग्रद्वबुध्यैव मिथोऽपि सत्त्वभाजः ॥ ४० ॥
 हयहेषितनूयमानमानोजुरहक्कारवकारिणोऽश्ववाराः ।
 हठहेतिहतिस्फुटस्फुलिङ्गक्षतधूलीतमसो रणं वितेलुः ॥ ४१ ॥
 कृतहर्षितहेषितं महाद्रवो युधि पाश्चात्यपदद्वयेन धावन् ।
 गगनाङ्गणनत्तिताग्रपादः प्रसभादाह्वयते च शात्रवाश्वम् ॥ ४२ ॥
 परधातविनिःसृतैर्निजान्त्रैः खुरकोटीघटनास्त्रविश्रुतद्भिः ।
 ततमार्गलतागणैरिवाश्वः खलु नास्वल्यत कोऽपि धावमानः ॥ ४३ ॥
 रणतूर्यनिनादमुक्तनिद्रः कृतहेपारवलक्ष्यमाणहर्षः ।
 अकृत द्विगुणां गतिं वितन्वन् हरिरेकः पुलकोद्गमं नियन्तुः ॥ ४४ ॥
 रणसीम्नि मिथोविलङ्घनोत्कौ कृतफालौ स्वलितौ पुरोऽन्तरिक्षे ।
 द्रुतसादिकरप्रणुन्नमौली भुवि पश्चात्पतितौ हरी न कौचित् ॥ ४५ ॥
 तुरगाग्रपदान्तदान्तदन्तान्विभिदे कश्चन दन्तिनोऽश्ववारः ।
 असिदारितकुम्भमुक्तमुक्तावलिभिर्मूर्धनि जातपुष्पवृष्टिः ॥ ४६ ॥
 रथिनां स्थिरमूर्ध्वविग्रहाणां चतुरः कश्चिदनातुरं तुरङ्गी ।
 असिनाशु शिरांस्युदास नूनं कलयन्कन्दुकविभ्रमं सुरीभिः ॥ ४७ ॥
 द्विरदेषु रथेषु पत्तिषु द्रागपतत्कश्चिदुदारहर्षहेपः ।
 समरोत्कतुरङ्गिचेतसेव प्रथितस्पर्धमहो मुहुर्महाश्वः ॥ ४८ ॥
 परिमुक्तशिरोरुहैर्नदद्भिः क्षणकृसाङ्गलवैः समुच्छलद्भिः ।
 प्रधानाधिपदैवतापतारादिव वीरैर्वत वभ्रमेऽरुणाक्षैः ॥ ४९ ॥
 गलिनस्वपरप्रभेदबोधा युधि योधा वधबुद्धिवद्वक्त्राः ।
 निजकोपरसार्णवे तु मूर्त्तौ क्षतजौवे व्यहरन्त कण्ठदग्रे ॥ ५० ॥
 पतितेऽपि शिरस्युदारहक्काभृति कस्यापि भयोद्भवप्रकम्पे ।
 अरिभिर्गलदायुधैः कथञ्चिन्नविनिघ्नन्युधि पातितः कवन्धः ॥ ५१ ॥
 पतितां पदयोः प्रियां पदाग्रैः करलग्नं मुह्यदं चपेदयैव ।
 परिताप्य मृतस्य मूर्ध्नि वन्द्योर्निहिताङ्घ्रिर्द्रिपमाप कश्चिदेकः ॥ ५२ ॥
 पतितां युधि भूमिप्लानदन्तान्तरवर्त्ती करिणो हृदाप्य कुम्भौ ।
 पुरुषायिनवह्मभाकुचाग्रस्मरणात्कश्चिदधत्त रोमहर्षम् ॥ ५३ ॥

यदधावहुदारपादपातं च्युतमूर्द्धापि भटो रूपाङ्गाक्षः ।
 अपि लोहमयेन तन्निहन्तुः करवालेन किल व्यकम्पि मौलिः ॥ ५४ ॥
 पतता शिरसैव शस्त्रितेन द्विपमाहत्य यशो वितन्य विश्वे ।
 अपि नाकवधूसवाप्य रक्तां स्वकवन्धेन ननर्त्त कोऽपि धन्यः ॥ ५५ ॥
 रणमूर्च्छिलनि वल्लभे गतासुः सहसा कापि दिवङ्गना सतीत्वात् ।
 पुनरुच्छ्वसिते शुशोच तस्मिन् विरहात्त्या मरणोत्सुकेव तुष्टा ॥ ५६ ॥
 प्रियलाभमहोत्सवाय तेनुः सुरनार्यो विविधानि मण्डनानि ।
 तदवाप्तिहृदां तु बाहुभाजां युधि भूपाऽजनि सत्त्वमेकमेव ॥ ५७ ॥
 परिरम्भकृतां सुराङ्गनाथिः सह यः सत्त्वभृतां वभूव कम्पः ।
 सुदृशां शिखिवर्त्मधावितानां पुरतो भीतिपदे स एव जातः ॥ ५८ ॥
 सविधच्युतमौलिहृकयोच्चैर्विगलत्कर्त्तरिकाभयातिरेकात् ।
 विनिपत्य कवन्धकेषु धैर्यं कथमप्यादधते स्म यातुधानाः ॥ ५९ ॥
 अधिपादतृणीकृतेन कामं वपुषोपक्रियतां मयाऽमुनाय ।
 इति पक्षिषु भक्षिषु च्वसन्तः पतिताः श्वासमधुर्मृता इवैके ॥ ६० ॥
 नवरक्तविलेपिनोऽन्त्रमालाकृतहाराश्च कुटुम्बिनः पिशाचाः ।
 वशया पिशितं कपालपात्रैरघसन्प्रेतपतेर्महोत्सवेऽस्मिन् ॥ ६१ ॥
 बहुमांसमकीकसं मृतानां मृदुलाहारकृतेऽङ्गकं यदायुः ।
 तदपि ध्रुवमाहरन् शृगाल्यो व्यथितास्या घनमग्रभल्लशलयम् ॥ ६२ ॥
 अधिकृत्य मृताङ्गकानि रौद्राः करमोहायितनर्त्तिताऽसिदण्डाः ।
 परतीरजुषां द्विषां निहन्तुं तरलं तेमरस्रग्धुनीषु धीराः ॥ ६३ ॥
 धावहुर्द्धरधीरपादविधुरक्ष्मास्वेदविन्दूपमाः
 क्षत्रासिद्धतकुम्भिकुम्भपतिता मुक्तामणिश्रेणयः ।
 दोलारुढसमग्रराजकजयश्रीलोलताचित्तुव-
 धम्मिल्लग्रथितप्रसूनपटलीपातश्रियं शिश्रियुः ॥ ६४ ॥
 इति श्रीगूर्जरेश्वरमहामात्यश्रीवसन्तपालविरचिते नरनारायणानन्दनानि
 महाकाव्ये सहस्रलालिसङ्गल्लतो नाम त्रयोदशः सर्गः ॥
 श्रीवस्तुपाल जितपालमृणालगर्भे शुभ्रं वितन्वति जगत्तव दीर्घिपरे ।
 मन्यामहे कुबलकजलकोविलालिकाकोलकोलसदृशमभिधा मुधाऽभूत् ॥ १४ ॥

चतुर्दशः सर्गः ।

समं समन्तात्समचालि शूरैरथो रथोत्सङ्गकृतप्रतिष्ठैः ।
 नवीनवीर्यैः कलयद्भिरग्र्यमहो महो वैरियुगान्तहेतोः ॥ १ ॥
 चापं तदा दानरुचा रसज्ञासदृक् सहासस्थितितानवेन ।
 भल्लेन नहं शमनाननाभमग्रेसरं चारु न कः क आप ॥ २ ॥
 (सशरशरासनवन्धः)

तत्तच्छरासननिरस्तनिरन्तराल-

नाराचजालचलनाद् गगनान्तराले ।

कृत्तैः किलार्ककिरणैर्धरणी नितान्तं

संशिश्रिये क्षतजनक्षतजच्छलेन ॥ ३ ॥

(निरोद्धयः)

अधावन्नतिकार्याय पतत्रिचतुरा हिताः ।

योधा एकैकघातार्त्तिपतत्रिचतुराहिताः ॥ ४ ॥

उद्दण्डकाण्डकृतमण्डपडम्बरेषु रक्तौघकुङ्कुमरसाकुलभूतलेषु ।

कालेन कृत्तभरमस्तकमोदकानामालोकेन नन्दते समरोत्सवेषु ॥ ५ ॥

(अतालव्यः)

प्रभाविलासा परमा रणेषु प्रभाविलासा परमारणेषु ।

रसेन सेनायुगली न जेतुमशक्यतान्योन्यमनूनशक्तिः ॥ ६ ॥

अभूत्सम्भेदनिर्भेदं तरवारितरङ्गितम् ।

तद्वाहिनीद्वयं भीततरवारितरङ्गितम् ॥ ७ ॥

असमसमरलीलालाघवेनाशु तूणाविरहिणि शरभारैः शोभमानाभिमानः ।

अद्वितनिहितमेवादाय वाणं शरीरादधिन धनुषि चैकः साधुवादं च लेभे ॥ ८ ॥

(असंयोगात्तरः)

देहे परशरोदारहननं कश्चिदुद्धुरः ।

सेहे वीरवरो धीरश्रीगन्वाङ्कुमृदु स्थिरः ॥ ९ ॥ (गोमूत्रिकान्तः)

केनचिद्विरचितो रिपुर्मिथःसङ्गरोचितमहाग्न्रपानतः ।

सङ्गरोचिनमहाग्न्रपानतः स्वर्चधृप्रथमकेलिकौतुकी ॥ १० ॥

उवाहासिमहानन्यो भुवा हावानिहानयः ।

घनहानिमहाशत्रुजनहानिमहाः शरान् ॥ ११ ॥ (मुरजवन्धः)

चक्रे रग्मचापलनारयानकः प्रभाततः कोऽपि मनो रथी रणे ।

प्रभाततः कोऽपि मनो रथी रणे चक्रे रग्मचापलनारयानकः ॥ १२ ॥

लोलकीलालकल्लोलकूले कलकलाकुलः ।

लीलालोकी ललालैकः कालकेलिकलः कलः ॥ १३ ॥ (द्वयसरः)

ननृतेऽरिवधाय केनचिद्धतेव करस्थितं यमम् ।

चतुरंगवलप्रभासिना च तुरंगवलप्रभासिना ॥ १४ ॥

कलङ्कपङ्कपं चक्रे चक्रो सरसरक्षणम् ।

क्षणं परः परवलं चलत्कलकलः कलम् ॥ १५ ॥

(अविश्रान्तगंदशिकायमकम्)

गृहः स्थिरतरः स्फारशरभारः पुरः पुरः ।

आर वैरभरस्मेरवीरवारहरः परः ॥ १६ ॥

(षोडशदलकमलवन्धोऽत्रिवर्गो भेदद्वयत्रिभक्तगोमृत्विज्ञानः २३)

पूरम्पूरं पुरोऽपारं रोषपूरं परःपरम् ।

रूपं पुररिपोराप पात्रेरिपुपरम्परम् ॥ १७ ॥ (६७१४ :)

कील्यली कलितामण्यदोसः कोऽपि द्विपदने ।

कीलालीकलितारण्यदायानलनिभो वभो ॥ १८ ॥

यत्प्राधीनं चमून्मत्यपरमन्यरितः सद्गुण्यः सद्गुण्यः

मेतुं हार्यं रम्यं दोःसुकृतविभवतः क्षालितश्रीर्ग्यशासन ।

रत्तामुद्रोज्ज्वलस्तं रमितमरमहानन्यपीरतावन्यः

स्यन् शूरं वृक्षराजप्रसभततसर्दो नित्यवर्गोसिद्धः ॥ २० ॥

(कविनामः ओव सुभाषणम्) २२४४

पसन्तसचिवः मिळपीरालिरस्यविरगरम् ।

चम्रे श्रीलारि कृष्णाय महाकाव्यमदो रुद्र ॥२०॥

वीरनन्दकसत्प्राप्तो बभूवो परो रत्ना ।

प्राग्वहोपरं भाग्यसोत्प्राप्त्यदं रथी ॥२५॥ (अष्टमस्कन्धः)

प्रभायनिस्तारपालेयरोऽर्त्तौ प्रसादनित्त्वारवर्त्तौ दर्शयन्तौ ।

पदातिरेकाः फलरन्ध्रगारः पदातिरेकाः कल्पः ॥ ५५ ॥

बालाबाल कर्मोली लाली मालाबाल ।

लोहमालं नमस्कृत्य विनिर्वाणं ॥ ३ ॥

सप्रभावरणः वाजिप मत्तनारि रत्नवत् ।

सुरासत्तावा राजापु निवेदिता विरचितम् ॥ २४ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अमरप्रकरेण भृशं हर्षपुषा पुष्पभरवृष्ट्या ॥ २५ ॥ ✓

परमे घनवरवपुषः समरोपचये नरो महिताः ।

परमेघनवरवपुषः समरोपचयेन रोमहिताः ॥ २६ ॥ ✓ (युग्मम्)

(प्रथमश्लोकोऽदन्त्यः द्वितीयः समुद्रकः असंयोगाक्षश्च)

७ मायाराततरायामा याशमाक्षक्षमाशया ।

रामामाददमामारा तक्षदक्षक्षदक्षत ॥ २७ ॥ ✓ (सर्वतोभद्रम्)

८ सेनामेनां सपत्नस्य भिनत्सि न कथं जवात् ।

वचनानीति सूतस्य निशम्य स्मयवानथ ॥ २८ ॥ ✓ (अमूर्द्धन्यः)

९ शर्वरीश्वरयशाः स्वयं श्रियः संश्रयो वशशरः ससार सः ।

वैरिवीरवलयव्ययाशया वासविः सरसरावलालसः ॥ २९ ॥ (अपञ्चवर्गः)

(पङ्कश्लोकोऽयं विशेषकम्)

१० दहन्महावैरिवनानि लोहनाराचवीचिं दिवि धूमधूमाम् ।

तदा वभार स्मितदावभा रविभासमानः स विभाऽसमानः ॥ ३० ॥

११ यश्चक्रेऽस्य क्रमाक्रान्तधरस्य पुरतो रणम् ।

स ददर्श जवाहण्डधरस्य पुरतोरणम् ॥ ३१ ॥ ✓

१२ नूनं नानेन नुन्नो ना कः कोऽङ्गे केकिकाकुक्कः ।

तातनातेतितत्तान्तो रंरारोरुखोररराः ॥ ३२ ॥ ✓

(प्रतिपादविभक्तश्चतुर्व्यञ्जनः)

१३ व्यालावलीविलयवर्धरवालयोऽयं लोलैरिलावलयवीरवरैरवार्यः ।

वैराविलो रयलयैरविवारचारी वीर्यं युवा रविरिवाविरलं विवत्रे ॥ ३३ ॥

(अन्तःस्याक्षरोऽयम्)

१४ वध्रे तेन तनश्रीकविभाविविदितद्युता ।

तापदालोककरविकलासंसङ्गिना रवः ॥ ३४ ॥

(कविनामाङ्कशक्तिवन्धः वसन्तकविकवितानामाक्षराणि)

रिपुनिकरो बलराजीराजी राजीवशोणनयनेन ।

चक्रे युधे वै कुन्ती कुन्ती कुन्तीमुतेन रुपा ॥ ३५ ॥ (व्यावर्तयमकम्)

अग्र्यः प्रन्यग्रयन्गत्तरलनरशरं नन्वग्रं धन्वदण्डं

चण्डं कर्षत्तमर्षप्रमररगलमहर्षमर्षस्ववडयः ।

वर्षन्धर्षप्रकर्षं गगननलगनस्वर्गमद्वर्गमन्तः

प्रव्यभ्रव्यभ्रव्यः प्रव्यभ्रव्यभ्रव्यमनं स व्यव्य ॥ ३६ ॥ (आयस्वः)

पञ्चदशः सर्गः.

समरे कोपपरममहारित्राससकणः ।
चरमायो जनोच्छ्रायो जेयो मारचणः क सः ॥ ३७ ॥ (खड्गवन्धः)
स्वाजन्यजन्यशसनोऽथ विरस्य रम्यकोदण्डदण्डकृतिना समहारि हारि
वैधुर्यधुर्यरवकारिभुजालजालमासारसारविशिवस्फुरितेन तेन ॥ ३८ ॥
रोषारोषाद्धनुर्ज्यावलयवलयशोभासमानः समानः
सत्रासत्राणधीरो रविकरविकटोद्दीप्रतापप्रतापः ।
कामेकामेप नोच्चैरसमरसमयो नाम रीणामरीणा-
मालीमालीढसत्त्वां रणकरणकटुः काणचक्रेण चक्रे ॥ ३९ ॥
(प्रतिपादद्गणवर्त्तआदिमध्यावसानयमकम्)

युध्यध्वं मा स्म धीरा हरिहयतनयं मामिव ध्यायताम्
धीरध्वानैर्निपिह्य स्ववलमिति बहूदस्तहस्तो विहस्तम् ।
दैत्यध्वंसी तदैत्य प्रियसुहृदमसुग्रायमाश्लिष्य हृष्य-
द्रोमस्तोमं तमन्तःशमनयमनयक्षैर्यधुर्यं स्वपुर्याम् ॥ ४० ॥ (अत्रिवर्गः)
इति श्रीगूर्जरेश्वरमहामात्यश्रीवसन्तपालविरचिते नरनारायणानन्दनामि
महाकाव्ये अर्जुनावर्जनो नाम चतुर्दशः सर्गः ॥
लक्ष्म्यामाकृष्टिमुच्चाटनपनयवति स्तम्भमुज्जृम्भिदम्भे
दोषे विद्वेषमभ्यन्तरिपुषु मूर्तिं वक्ष्यतां चित्तवृत्तौ ।
कर्तुं यद्वस्तुपाल प्रभवसि सकले मण्डले तत्तवैव
श्रीमन्मन्त्रीश मन्त्रे स्फुरति निरवधिः कापि परकर्मसिद्धिः ॥ १५ ॥

पञ्चदशः सर्गः

अथ शिथिलितसर्वस्वार्थसार्धं सुभद्रापरिणयपरिणहारम्भसंरम्भसम्पत् ।
अहह महमहीयस्तपुरं सत्पुरन्ध्रीललितकलितलीलं शर्मनिर्मग्नमासीत् ॥ १ ॥
प्रकटितपटुरागा कुङ्कुमाम्भश्चट्टाभिर्विपुलपुलकपङ्क्तिस्तोरणस्तम्भदम्भात् ।
अतिमहति महेऽस्मिन्नित्यद्वत्या न्यराजत् सुररिपुपुरलक्ष्मीरध्वजाग्रद-
ध्वजाग्रैः ॥ २ ॥
हरिनगरनराणां धोरणिस्तोरणसगुदलचलनमिवेण भ्रूपरिक्षेपदञ्जा ।
महसहजविभूतिर्वासवावासतजां चिरमकुहन चञ्चकेतुचेलाहुलीभिः ॥ ३ ॥

Vasantarāpa—the poetic name of Vastupāla. It will be seen from the author's colophon at the end of each canto of this poem that it bears the name Vasantarāpa instead of Vastupāla. The author himself makes it clear on this point that he got this name from Harihara, Somesvara and other poets. Balachandra has called his life of Vastupāla *Vasantarāpa*.

The subject of the present work. The present work, which is a Malāḥākya in 16 cantos, describes the friendship of Arjuna and Kṛṣṇa, their rambles on Mount Girnar and the consequent abduction of Subhadrā by Arjuna. The subject-matter is very scanty as the greater part of the poem is taken up by the conventional poetical descriptions such as that of the city, the people, the king and his court, the rise of the sun and the moon and gathering of flowers. The reader will find that Māgha's *Sisupalavadha* seems to have been the author's model. The poem seems to have established itself among the poetic world, as the 7th verse of its 1st canto is quoted in Jaiṇa's *Satīnakṣatī*. One more verse is to be found in the *Kavikāvalī* of Amara, the celebrated author of the *Bālābhārata*. Narendraprabhā referring to the poetical skill of our author in the *Alankāramahodadhī* says that Vastu-¹ṭa's poetical skill is such as even renders tender the language of Vyāsa taken from the *Mahābhārata*.

The date of composition. In the last canto of this poem, the author says that his first outburst of poetry took the form of a hymn in the praise of

(1) The poetical name of Vastupāla is Vasantarāpa. The author himself makes it clear on this point that he got this name from Harihara, Somesvara and other poets. Balachandra has called his life of Vastupāla *Vasantarāpa*.

॥ १ ॥ ...
 ॥ २ ॥ ...
 ॥ ३ ॥ ...
 ॥ ४ ॥ ...
 ॥ ५ ॥ ...
 ॥ ६ ॥ ...
 ॥ ७ ॥ ...
 ॥ ८ ॥ ...
 ॥ ९ ॥ ...
 ॥ १० ॥ ...

पुस्तकः

॥ १ ॥ ...
 ॥ २ ॥ ...
 ॥ ३ ॥ ...
 ॥ ४ ॥ ...
 ॥ ५ ॥ ...
 ॥ ६ ॥ ...
 ॥ ७ ॥ ...
 ॥ ८ ॥ ...
 ॥ ९ ॥ ...
 ॥ १० ॥ ...

५५

०५

[illegible]

लब्ध्वा साधुपन्नमजानिचिकुलप्रशं प्रतिष्ठासिमां
 येन धर्मयुगलानामभिगतः संप्रतिपद्यन्निग्रहम् ।
 तेषांशानि वसुधालसिचिवा विद्याप्रजाप्रत्यक्ष-
 रीत्य प्रयुगां मनोरथमयी निःश्लिमाशिवाभिपद्य ॥ १ ॥
 श्रान्नेष मनोरथाः शान्तया सिद्ध्याभिमानान्धुः
 कङ्कला इव विस्फुरन्ति विषयग्राह्यदेव्यधिताः ।
 हित्वा गान्ति वसुधालसिचिवाः सद्गोचरेषादेव-
 मने धीविषमामिमान् शमदमव्यक्तमुक्ताफलान् ॥ २ ॥
 प्रत्यक्षां प्रसरत्कपायविषयव्यालकायलालिनीं
 रुरेभ्यम् मयङ्कुराङ्गवदवदवाद्यामादेयमाधितः ।
 श्रान्नेषुपशुलपावनानि त्वदकचन्दनानि-
 पातितवस्तनमाः शमामृतद्वे द्वादं कदाहं हिये ॥ ३ ॥
 पतसिन्धवगिरिषा निरवधि कोषावृषद्वेन्दुत-
 खलां लोभानिमिद्धस्य निजानन्देयान्धमसां निगताः ।
 सस्तनान् कदा कदाप्रहसदग्राह्यश्च श्रुतिश्च-
 द्रुपं प्राप्य भजेय वैषवित्ययुगलः परं निवृत्तिम् ॥ ४ ॥
 संसरत्यव्यवहारेनो रतिमतिव्यावर्त्यकरोत्यन-
 वासांमव्यवहारे चिन्मयतया शैलेक्यमालोक्यम् ।
 श्रान्नेषुपशुलपादेरगुरुरेभ्यस्यै निवृद्धस्थितिः
 श्रान्नेषु कदा लभेय गलितज्ञेयमिममानं मनः ॥ ५ ॥
 स्वाभिमानस्युद्देरुद्दे हरेणवदवाद्यालिकपयिष-
 व्याविष्णुप्राधनैर्द्वैतः श्रान्तभवारेण्योऽशरण्यो भवत् ।

श्रीशार्दूलश्रमनोरथपदं स्तोत्रम्

श्रीगणेशायनमः शारदायनमः शारदायनमः

APPENDIX I.

नामय त्वमनकुलः कुलपतिर्ध्यायि तस्मिन्ने

श्रीआर्दीश्वरशैलनामनि कदा पुण्याश्रमे विश्राम ॥ ६ ॥

श्रीनारदमिमीरौषधेयु धनिनमोऽन्योन्यलज्जालया

विह्वलेषु मणीरश्यामदुःखाङ्गमापिनेषु दिवाम् ।

वक्रेषु जलपानमिमां विजगतीनिस्तन्द्रचन्द्रोदये

देव श्रीविमलादिकेतन कदा दास्ये त्वदास्ये दशम ॥ ७ ॥

कावेन ज्वलितो हनोऽहमिषुभिः पञ्चगुणा पञ्चभिः

बह्वी मोहमदोद्विषा च विषयग्रामं प्रकामं श्रितः ।

तज्जलान्तरवैरिवीर सुवनरेवाभिन् समश्ले त्वया

दुर्गो श्रीविमलादिनामनि सुखं स्थानाऽस्मि सुस्थः कदा ॥ ८ ॥

आस्य कस्य न वीक्षितं क न कृता सेवा न के वा स्तुत-

स्त्वग्राप्यपरदाहेन विहितं केषां च नाप्युता ।

तजानन्विमलादिनन्दनवनकल्पोकल्पदृष्टम्

त्वामासाद्य कदा कद्यूनामिदं यथोऽपि नाहं सहे ॥ ९ ॥

संसारं सुखदेवदुःखविषयकल्पाङ्गितैः सङ्गतै-

दुर्गा देव त्वदन्यदेव तादृषं वाञ्छा ममोत्पत्तिना ।

श्रेयोवैभव नाभिसम्भव अवर्कपरपारङ्गम्

श्रीशिवशिवमण्डनेन भवता भवती कदा सङ्गमः ॥ १० ॥

गताः श्यामस्तनूतेन हृदालयाले संवर्तिताः पृथुमनोरथवज्रयो मे ।

विश्वकर्मिषु भगवतः प्रसादाद्विहङ्गोत्तरैः कलमरैः सकलीभवावृ ॥ ११ ॥

धनुर्व्यानमना मनोरथमयं रत्नोच्चं युगादिप्रभा-

श्चक्रे गुंनैश्चकवर्त्तिमन्विषः श्रीवस्तुपालः कविः ।

प्रातः प्रातरभ्युपगमनमवगं पश्चिच्छेत्ति सता-

मपस्व विभुतां च तापज्वरमपि श्रेयःश्रियं पुण्यमि ॥ १२ ॥

श्री श्रीआर्दीश्वरमनोरथस्य स्तोत्रम् ।

\$ inv. at 1277 and 1287.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

[illegible]

11 31

— 252 —

It praised the poetry of Somadeva and Harsha as follows

विद्ययाऽपि विदुषां चित्तवृत्तिरिति चेन्न तत्रापि चित्तवृत्तिरिति चेन्न तत्रापि चित्तवृत्तिरिति चेन्न

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

[Faint handwritten notes at the bottom of the page]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (९)

== ॥ विष्णुसूक्तं ॥ विष्णुसूक्तं ॥ विष्णुसूक्तं ॥ विष्णुसूक्तं ॥

(9) ԳԵՂԱՐՅԱՆԻ ԱՆՈՒՄՆԵՐԸ

APPENDIX III

श्रीवस्तुपालकीर्तिदानप्रबन्धाः

I

(उपदेशतरङ्गिणीतः)

श्रीवस्तुपालः प्रतिवर्षं वारत्रयं सर्वचतुर्विधसङ्घपूजां करोति स्म । एकदा
पूजायां जायमानायां एको दरिद्रो द्विजः प्राह—देव ! कल्पद्रुमावतार इव
विलोकयाम्भितं ददानो दृश्यसे, एकवेलं नमापि सम्मुखमवलोकय, यथा
दारिद्र्याय जलाञ्जलिं ददासि । तदा मन्त्रिणोक्तम्—दे ! किमप्युद्गरितवस्त्र-
मस्ति ? एका वन्दनचन्दनसूक्ष्मपट्यास्ति, देहि । सा द्विजस्यार्पिता । तेन
विलोकयोक्तम्—

कचित् सूत्रं क्वचित् तूलं कार्पासास्थि क्वचित् क्वचित् ।
देव ! त्वदग्निरीणां कुटीतुल्या पटी मम ॥

मन्त्रिणोक्तम्—पुनर्वद, त्वदग्निवारमुक्तम् । १७ शतानि द्रम्माणां समर्पि-
तानि । एकदा यात्रारम्भे वन्दनार्थागतमन्त्रिणा सभायां किञ्चिन्निद्रायमाणन-
स्त्वन्द्राचार्यो वादितः प्राह—नाहं निद्रायमाणः, किन्तु नेत्रे निमील्य लक्ष्मीना-
रायणयोः समुद्रमध्यस्थयोः परस्परालापं शृण्वन्नस्मि ।
यथा—लक्ष्मि ! प्रेयसि ! केयमास्यशितिला वैकुण्ठ ! कुण्डोऽसि किं
नो जानासि पितृविनाशमसमं सङ्घोत्थितैः पांसुभिः ? ।
मा भीभीरु ! गक्षीर एव भविताऽम्भोधिश्चिरं नन्दतात्
सङ्घेशो ललितापतिर्जिनपतेः स्नात्राम्बुङ्गुल्यां मृजन् ॥

बालचन्द्रकुलकेन श्रीवस्तुपालो वर्णितः—
गौरी रागवती त्वयि त्वयि वृषो बह्मादरस्त्वं पुन-
र्भूत्या त्वं च समुल्लसद्गुणगणः किं वा बहु ब्रमहे ।
श्रीमन्त्रीश्वर ! नूनमीश्वरकलायुक्तस्य ते युज्यते
बालेन्दुं चिरमुच्चै रचयितुं त्वत्तोऽपरः कः क्षमः ॥

तदनु मन्त्रिणा भट्टारकपादोपदेशनं कारितं बालचन्द्रस्य ।
एकदा अमरचन्द्रमुनौ पर्यादि तत्कालकृतनव्यश्लोकैर्न्याख्यानं कुरु-
क्षिपदी प्रोक्ता—

अस्मिन्नसारे संसारे सारं सारङ्गलोचना ।

वन्दनार्थमागच्छता द्वारस्थेन मन्त्रिणा श्रुता । अहो ! रागी स्त्रीकथा-
न्मुनिः, इति ध्यात्वा न वन्दितः । ज्ञातमन्त्रिचित्ताभिप्रायेणामरचन्द्रेणोक्तम्

अस्मिन्नसारे संसारे सारं सारङ्गलोचना ।

यत्कुक्षिप्रभवा एते वस्तुपाल ! भवादृशाः ॥

तुष्टेन पादोपवेशनं कारितम् ।

श्रीशत्रुञ्जयतीर्थे संघसमक्षं श्रीवस्तुपालमन्त्रिणि आरात्रिके क्रियमाणे
ऽर्थिनां मन्त्रिमध्ये झम्पानं दृष्ट्वा सोमेश्वरकविः प्राह—

इच्छासिद्धिसमुन्नते सुरगणे कल्पद्रुमैः स्थीयते

पाताले पवमानभोजनजने कष्टं प्रणष्टो बलिः ।

नीरागानगमन् मुनीन् सुरभयश्चिन्तामणिः काप्यगात्

तस्मादर्थिकदर्थनां विपहतां श्रीवस्तुपालः क्षितौ ॥

सोमेश्वरस्य सहस्रं ददौ । सन्तुष्टेन सोमेश्वरेण पुनरभाणि—

के निधाय वसुधातले धनं वस्तुपाल न यमालयं गताः ।

त्वं तु नन्दसि निवेशयन्निदं दिक्षु धावति जने क्षुधावति ॥

पुनरपि सहस्रं ददौ ।

तथाऽरिसिंहकविः—श्रीवासाभ्युजमाननं परिणतं पश्चाद्गुलीच्छन्नतो

जग्मुर्दक्षिणपञ्चशावमयतां पश्चापि देवद्रुमाः ।

वाञ्छापूरणकारणं प्रणयिनां जिह्वैव चिन्तामणि-

र्जाता यस्य किमस्य शस्यमपरं श्रीवस्तुपालस्य तत् ॥

द्विमहस्यौ दत्ता ।

एकदा तुष्टेन श्रीवीरधवलेन मन्त्रिणे दशलक्षी प्रसादे दत्ता । सा
तेन गृहाद्वारगेव दत्ता, तदा कश्चित्कविः—

श्रीमन्नि दृष्ट्वा द्विजराजमेकं पद्मानि सङ्कोचमवाप्सुवन्ति ।

ममागतेऽपि द्विजराजलक्ष्णे मदा विक्राम्सी तव पाणिपद्मः ॥

इति मृत्युमानो लज्जयाऽधो विलोकयति स्म । नदा नानालयकविः प्राह

एकमन्यं भुवनोपकारक इति श्रुत्वा सतां जल्पितं

लज्जानम्रजिग धगतलविदं यदीक्षमे वेत्ति तत् ।

शान्देवावदनागचिन्दित्यकश्चावस्तुपाल ! भ्रुवं

शान्दाद्विमुक्तिर्धार्पुर्ममकृन्मार्गं भवान्मार्गति ॥

समर्पयित्वा दत्ता । कर्णान्वयं शिविर्मांसं, जीवं जीमूतवाहनः, ददौ
दधीशितधीनिः पणितत्रयधानयमिदं ।

जयन्तदेनैव समस्तपापादं पणैः—वस्तुपालः पुनर्यमुः । सहस्रचतुष्टयं प्रदत्तम् ।
एकदा सोमेश्वरो वस्तुपालभयत्कृते समागतः, वर्यासनदानेऽपि नोप-
विशति स्म । मन्त्रिणा कारणं पृष्टः प्राह—

अजदानं पयः पानैर्भर्मस्मान्ना भूतलम् ।

यशस्वा वस्तुपालेन काननाकागमण्डलम् ॥

एति स्थानाभावात् नोपविश्यत इत्युक्ते नवसहस्री प्रदत्ता ।
एषस्यां महाचार्यां विजयदेवसूरिभिस्ततम्—नन्दनोद्यानपालको बुभ्वां पातय-
क्षित्सभायासागत्य वक्ति ।

यथा—देव ! स्वर्नाथ ! काष्ठं ननु क इह भवान् नन्दनोद्यानपालः
सेदस्वत्तोऽप्य केनाप्यहह ! हत इतः काननात् कल्पवृक्षः ।
इन्द्रप्रतिपद्यो यथा—

हं मा यादीस्तदेतत् किमपि करुणया मानवानां मयैव
प्रीत्याऽऽदिष्टोऽयमुर्व्यास्तिलकयति तलं वस्तुपालच्छलेन ॥
रोहणाचलं प्रति कस्यापि प्रश्नः—

हंहो रोहण ! रोहति त्वयि मुहुः किं पीनतेयं सदा ?
रोहणप्रतिपद्यो यथा शृणु—

आतः ! सम्प्रति वस्तुपालसचिवत्यागैर्जगत्प्रीयते ।
तेनाऽस्तैव ममार्थिकुट्टनकथा प्रीतिर्दरीकिनरी-
गीतैस्तस्य यशोमृतैश्च तदियं मेदस्विता मेऽधिका ॥

एकदा देवकपत्तनतः सोमेश्वरपूजाकारकभट्टाः समागताः ।
मन्त्रिणा पृष्टाः—वर्या पूजा क्रियमाणाऽस्ति न वा ? । ते प्राहुः—

नादत्ते भसितं सितं सचिव ते कर्पूरपूरं स्मरन्
कौपीने न च तुष्यति प्रभुरसौ शंसन्दुकूलानि ते ।
दिग्धो दुग्धभरैर्जलेषु विमुग्धः श्रीवस्तुपाल त्वया
कर्पूराशुक्लपूरितः पशुपतिर्नो गुग्गलं जिघ्रति ॥

अस्य काव्यस्य कारकाणां भट्टानां दशसहस्री प्रदत्ता ।
दानमण्डपिकायां निरर्गलं दानं ददानं वस्तुपालं कवयः स्तुवन्ति
यथा—ये पापप्रवणाः स्वभावकृपणाः स्वामिप्रसादोल्बणाः

तेऽपि द्रव्यकणाय मर्त्यभषणा जिह्वे भवत्या स्तुताः

तस्मात्तत्तदघापघातविधये वद्धादरा सम्प्रति

श्रेयः स्थानविधानधिकृतकलिं श्रीवस्तुपालं स्तुहि ॥

सूरो रणेषु चरणप्रणतेषु सोमःव क्रोऽतिवक्रचरितेषु बुधोऽर्थबोधे ।

नीतौ गुरुः कविजने कविरक्रियासु मन्दोऽपि च ग्रहमयो न हि वस्तुपालः ।

श्रीभोजवदनाम्भोजवियोगविधुरं मनः ।

श्रीवस्तुपालवन्दनेन्दौ विनोदयति भारती ॥

सर्वेषां सहस्रदानम् ।

पीयूषादपि पेशलाः शशधरज्योत्स्नाकलापादपि

स्वच्छा नूतनचूतमञ्जरिभरादप्युल्लसत्सौरभाः ।

वाग्देवीमुखसामस्तुक्तविशदोद्गारादपि प्राञ्जलाः

केषां न प्रथयन्ति चेत्तसि मुदः श्रीवस्तुपालोक्तयः ? ॥

श्रीवस्तुपाल ! तव भालतले जिनाज्ञा

वाणी मुखे हृदि कृपा करपल्लवे श्रीः ।

देहे द्युतिर्विलसतीति रूपेव कीर्तिः

पैतामहं सपदि धाम जगाम नाम ॥

अपरस्तु—अनिस्मरन्तीमपि गेहगर्भात् कीर्तिं परेषामसतीं वदन्ति ।

स्वैरं भ्रमन्तीमपि वस्तुपाल ! त्वकीर्त्तिमाहुः कवयः सतीं तु ॥

इतरस्तु—सेयं समुद्रवसना तव दानकीर्ति-

पूरोत्तरीयपिहितावयवा समन्तात् ।

अद्यापि कर्णविकलेति न लक्ष्यते यत्

तन्नाद्धुतं सचिवपुङ्गव वस्तुपाल ! ॥

कश्चित्तु—क्रमेण मन्दीकृतकर्णशक्तिः प्रकाशयन्तीव वलिस्वभावम् ।

कैर्नानुमृता मशिरःप्रक्रमं जगं दक्षिस्तव वस्तुपाल ॥

नेन्यः कविभ्यः सत्सवं ददौ ।

हंसैर्लज्जप्रदोमंस्तरलितकमलप्रचरद्गैस्तरङ्गैः

नोमंस्तरङ्गभारैश्चदुल्लसत्कुलप्रागल्लानंश्च मोनः ।

पार्लान्दद्रुमार्लानलसुखशयिनर्त्राप्रर्णानंश्च गीतै-

र्भानि प्रनीददाऽऽनिम्नव सचिव चलेयकवाक्मन्त्राकः ॥

रुद्रिणामगोवर्गने गोमेश्वरस्य पांडुशमनस्यप्रदानं मर्यादुपामानुमानेन

श्रीशत्रुञ्जयोपरि अनुपमदेव्या अनुपमसरः कारितम् । तस्य भरितमहो-
त्सवे क्रियमाणे चारणेनोक्तम् ।

भाऊ भरहिं काई सेचुंजि सर न कराविउं ।

जाणूं हुं इणइ ठामि आगइ अणुपमडी कीउ ॥

एकविंशतिः शतानि द्रस्मानां दत्तानि । तथा स्वसंकीर्त्तनगुणकुलपूर्व-
जावदातप्रतिपादककीर्त्तिकौमुदीसुकृतसङ्कीर्त्तनकाव्यकृतसोमेश्वरारिसिंहयोग्रा-
मग्रासाश्वकनकदुकूलादिदानं यावज्जीवाहं दत्तम् । इत्यादिश्रीवस्तुपालकीर्त्ति-
दानप्रवन्धाः शतशो यथा श्रुताः स्वयं वाच्याः ८४, २४, ७२, प्रवन्धेभ्यः ।

II

(प्रवन्धचिन्तामणितः)

अथान्यस्मिन्नवसरे श्रीसोमेश्वरस्य कवेः काव्यम् ।

हंसैर्लब्धप्रशंसैस्तरलितकमलप्रत्तरङ्गैस्तरङ्गै-

नीरैरन्तर्गभीरैश्चदुलबककुलग्रासलीनैश्च मीनैः ।

पालीरुद्धमालीतलसुखशयितस्त्रीप्रणीतैश्च गीतै-

र्भाति प्रकीडदूर्मिस्तव सचिव चलचक्रवाकस्तटाकः ॥

श्रीमन्त्रिणा षोडशसहस्रद्रस्मानां दत्तिः प्रसादीकृता ।

कचिचिन्तातुरस्य मन्त्रिणो भूमि मृगयमाणस्य समागतः सोमेश्व-
रदेवः समयोचितमिदमपाठौत् । तद्यथा—

एकस्त्वं भुवनोपकारक इति श्रुत्वा सतां जल्पितं

लज्जानम्रशिराः स्थिरातलपदं यद्रीक्ष्यसे वेष्टि तत् ।

वाग्देवीवदनारविन्दतिलक श्रीवस्तुपाल ! स्वयं

पातालाद्दलिमुद्दिधीर्षुरसकृन्मार्गं भवान्मार्गति ॥

मन्त्रिणास्य काव्यस्य पारितोषिकेऽष्टौ सहस्राणि दत्तानि ॥ तथा

त्वचं कर्णः शिविर्मांसं जीवं जीमूतवाहनः ।

ददौ दधीचिरस्थानि—

इति त्रिषु पदेषु पण्डितेष्वभिधीयमानेषु पण्डितजयदेवः समस्यापद-
मिव, वस्तुपालः पुनर्वसु, इत्युचरन् सहस्रचतुष्टयं लेभे ।

तथा सूरिणां दर्शनप्रतिलाभनावसरे केनापि दुर्गतद्विजातिना याचनया
तन्नियुक्तेभ्यः कृपया पटीमुपलभ्य मन्त्रिणं प्रति समयोचितमूचे—

तावल्लीलाकलितसरित्तावदभ्रंलिहोमि-
 स्तावत्तीव्रध्वनितमुखरस्तावदज्ञातसीमा ।
 तावत्प्रेक्ष्यत्कमठमकरव्यूहबन्धुः स सिन्धु-
 र्लोपासुद्रासहचरकरकोडवर्ती न यावत् ।
 दीनाराणां सहस्राणि तस्मै चत्वारि भूपतिः ।
 श्रीमान् विश्राणयामास प्रीतः सचिवसंस्तवात् ॥
 प्रीणयन्तमिति प्राणिश्रेणीर्विश्राणनैर्निजैः ।
 कृपालवालं श्रीवस्तुपालं स्तौति स्म कश्चन ॥
 “अचिन्त्यदातारमजातशत्रुं श्रीवस्तुपालं कति नाथयन्ति ।
 चिन्तामणिः सोऽपि युधिष्ठिरश्च नान्वर्थसाम्यार्थपदं यदग्रे ॥
 दृश्यः कस्यापि नायं प्रथयति न परप्रार्थनादैर्न्यसुचै-
 स्तुच्छामिच्छां विधत्ते तनुदृढतया कोऽपि निष्पुण्यपण्यः ।
 इत्थं कल्पद्रुमेऽस्मिन् व्यसनपरवशं लोकमालोक्य सृष्टः ।
 स्पष्टं श्रीवस्तुपालः कथमपि विधिना नूतनः कल्पवृक्षः ॥”
 ऋणार्तस्य कवेस्तस्य ऋणमोक्षं विधाय सः ।
 आजन्म सकुटुम्बस्य योगक्षेममकारयत् ॥
 अथावसरमासाद्य वृत्ति सद्वृत्तशालिनौ ।
 पूर्वं कृतोपकारेषु भट्सोमेश्वरादिषु ॥
 भूयो भूमिप्रदानेन वस्तुमण्डपिकादिषु ।
 विशोपकविधानाच्च कृतज्ञौ कुरुतः स्म तौ ॥ युग्मम् ।
 कविः सोमेश्वरः प्राह स्तुतिमेवं तयोस्ततः ।
 पुष्पति न को वाचं कृतज्ञगुणकीर्त्तनात् ॥
 “न गिरौ न च मातङ्गे न कूर्मे नैव सूकरे ।
 वस्तुपालस्य धीरस्य पाणौ तिष्ठति मेदिनी ॥
 सूत्रे वृत्तिः कृता पूर्वं दुर्गसिंहेन धीमता ।
 विसूत्रे तु कृता वृत्तिस्तेजःपालेन मन्त्रिणा ॥”
 भट्सोमेश्वरप्रायाः प्रसिद्धाः कविकुञ्जराः ।
 चक्रुस्तत्रागता मन्त्रिसुखामगुणकीर्त्तनम् ॥

१ वस्तुपालनिर्मितसन्नागरमुद्दिश्येत् । २ वस्तुपालस्य कृतज्ञता । ३ स्तम्भनकवीर्दिताव्यापाम् ।

यथा—“ श्रीवस्तुपाल तव भालनले जिनाज्ञा

वाणी मुखे हृदि कृपा करपङ्कजे श्रीः ।

देहे द्युतिर्विलसतीव रूपेव कीर्तिः

पैतामहं सपदि धाम जगाम नाम ॥

अनिस्सरन्तीमपि गेहगर्भात्कीर्तिं परेषामसतीं वदन्ति ।

स्वैरं भ्रमन्तीमपि वस्तुपाल त्वत्कीर्तिमाहुः कवयः सतीं तु ॥

सेयं समुद्रवसना तव दानकीर्तिः पुरोत्तरीयपिहितावयवा समन्तात् ।

अद्यापि कर्णविकलेति न लक्ष्यते यत्तत्त्वद्भुतं सचिवपुङ्गव वस्तुपाल ! ॥

क्रमेण मन्दीकृतकर्णशक्तिः प्रकाशयन्ती च बलिस्वभावम् ।

कैर्नानुभूता सशिरःप्रकम्पं जरेव कीर्तिस्तव वस्तुपाल ॥ ”

प्रत्येकं द्रम्मलक्षाणि तेषामेव ददौ पुनः ।

भट्टगन्धर्वलोकानां सहस्राणि यथागुणम् ॥

एवं सहोदरौ प्रौढपुण्यकार्यैकतत्परौ ।

सन्तुष्टाव फलप्राप्त्यै कविः सोमेश्वरोऽनघः ॥

“ पन्थानमेको न कदापि गच्छेदिति स्मृतिप्रोक्तमिव स्मरन्तौ ।

तौ भ्रातरौ संसृतिमोहवीरौ सम्भूय धर्माध्वनि सम्प्रवृत्तौ ॥

जनव्यामोहवल्लीयमिन्दिरा मन्दिरागता ।

मन्त्रिणा वस्तुपालेन कल्पवल्लीव निर्मिता ॥

श्लाघ्यः स एकः खलु वस्तुपालः सर्वोत्तमः सर्वगुणाकरश्च ।

यस्यार्थिनो वा शरणागता वा नाशाविनाशाद्विमुखा व्रजन्ति ॥

कुत्रापि नोपसर्गो वर्णविकारोऽथवा निपातो वा ।

तेजःपालेन कृताऽपूर्वा व्याकरणस्थितिलोके ॥ ”

तस्मै तौ ददतुः प्रीतौ द्रम्मलक्षत्रयं क्षणात् ।

दक्षिणानां यतो लोके दानेयत्ता न विद्यते ॥

कियती पञ्चसहस्री कियन्तो लक्षाश्च कोटिरपि कियती ।

औदार्योन्नतमनसां रत्नमती वसुमती कियती ॥

श्रीकर्णविक्रमदधीविसृजभोजाद्युर्वीश्वरा भुवनमण्डन वस्तुपाल ! ।

१ “ स्वैरं चरन्तीमपि च त्रिलोक्याम् ” इति तृतीयपादे पठचतुष्टयत्रिपर्यासेनोदाहृतोऽयं श्लोकः बलभद्रवस्य सुभाषितावल्यां कर्तुं रुद्धेन विना । २ वस्तुपालतेजःपालयोर्धर्मकृत्यानुदिश्य । ३ वस्तुपालस्य दानवीग्नानुद्दिश्य ।

दानैकवीरपुरुषाः मममेव नीताः प्रत्यक्षतां कलियुगे भवता कवीनाम् ॥

इत्याशीर्वादयैर्दग्धीं दधानं मागधाधिपम् ।

सन्मानदानतो नीत्वा गौरवं विससर्ज ह ॥

अत्रान्तरे स्तुतिं कश्चिन्मन्त्रिणः कविरब्रवीत् ।

अपूर्वं तव सद्गामकौशलं सचिवेश्वर ! ॥

तथा—

अग्रेऽग्रे पदसङ्गतिर्विजयिनी सा काचिदोजोगुण-

प्रौढा सङ्घटनोदपादि कुटिलः शब्दक्रामोऽलङ्कृतः ।

दोषा ये प्रसरन्ति केऽपि परितः सर्वेऽपि ते धिक्कृता-

स्तज्जानामि वसन्तपाल कविना सङ्क्षयेन सख्यं तव ॥

राजापद्रपुरःशुल्कमण्डपाऽयधनं ददौ ।

मन्त्री तस्मै तदा तुष्टो यदसौ कविकामधुक् ॥

यतः—

धार्त्र्यं पवित्रयति यत्र नरेन्द्रपुत्रे सद्यः सुधास्नपितशंभुनिभैर्यशोभिः ।

अद्यापि विद्यत इवोद्यतकीर्तिसूतिर्देवो दिवाकरकुलैकललाम रामः ॥

पारिजातः कवीन्द्राणां सर्वज्ञातिसुधासुदः ।

धर्मस्तनुः सरस्वत्याः श्रीसर्वज्ञमतांशुमान् ॥

यथौचित्येन सर्वेषां दर्शनानां च पोषकः ।

वस्तुपालो महामात्यस्तस्य राज्यधुरन्धरः ॥ (गुग्मम्)

यतः—“ दानं दुर्गतवर्गसर्गविलयव्यत्यासवैहासिकं

औण्डीर्यं भुजदर्पचण्डिमकथासर्वकपं विद्धिपाम् ।

बुद्धिर्यस्य दिगन्तभूतलमुवामाकृष्टिविद्या श्रियां

कस्यासौ न जगत्यमात्यतिलकः श्रीवस्तुपालो मुदे ॥

मन्ये धुरि स्थितममुं सचिवं शुचीनां मध्यस्थमेव मुनयः पुनरामनन्ति ।

मातः सरस्वति विवादपदं तदेतन्निर्णीयतां मनसि मे हि गतं चिरेण ॥ ”

अत्रान्तरे कविः कश्चिद्विपश्चित्सुरिशालिनि ।

समाजे व्याजहार श्रीवस्तुपालस्तुति यथा ॥

१ वस्तुपालस्य शङ्खपराजयमुद्दिश्येदम् । २ वस्तुपालस्य दानान्युद्दिश्य । ३ वीरधवलसमायां वस्तुपालस्तुतिः ।

“ सन्ततिः परलोकाय विवेकाय सरस्वती ।
 लक्ष्मीः परोपकाराय सोमवंशोऽभवत्पुनः ॥ ”
 तस्मै लक्षत्रयं मन्त्री तत्त्वत्रयपवित्रितः ।
 हुतं विश्राणयामास द्रम्माणां प्रीतमानसः ॥
 अन्यदा वाङ्मयाम्भोधेः पारदृश्वश्वराजभूः ।
 कृपार्द्रहृदयं दृष्ट्वा सर्वाङ्गिषु निजं नृपम् ॥
 महाभारतशास्त्रान्तर्द्वात्रिंशाधिकृतिस्थितम् ।
 गाङ्गेयधर्मपुत्रादिराजेन्द्राख्यानमुत्तमम् ॥
 अष्टाविंशाधिकारस्थं तथा शिवपुराणगम् ।
 मद्यमांसपरीहारपुण्यराशिप्रकाशकम् ॥
 आख्यायाख्याय सद्युक्त्या यथाप्रस्तावमात्मना ।
 मांसास्वादसुरापाननिषेधव्रतनिर्मलम् ॥
 विमुक्ताखेटकक्रीडं त्यक्तपर्वनिशादनम् ।
 पराङ्गनापरिष्वङ्गावाङ्मुखं च विनिर्ममे ॥
 अथालङ्कारिकाणां मुख्याः श्रीमन्माणिक्यसूरयः ।
 समये तीर्थयात्राया आहूता अपि मन्त्रिणा ॥
 काव्यप्रकाशसङ्केतनिर्मितिव्यग्रमानसाः ।
 नेयुः स्वयं न च प्रैषि तैः कश्चिन्निजसंयतः ॥ (युग्मं)
 तेषां लेखस्तदा प्रैषि तेजःपालेन मन्त्रिणा ।
 आदेशाद्वस्तुपालस्य किञ्चिद्वक्रोक्तिगर्भितः ॥
 “ उत्प्लुत्योत्प्लुत्य पुनर्निपतति तत्रैव तत्रैव ।
 वटकूपकूपमध्ये निवसति माणिक्यमण्डूकः ॥ ”
 तदुक्तिविस्मितास्तेऽपि भृशं निःस्पृहवृत्तयः ।
 स्वलेखं प्रेषयामासुस्तयोः श्रावकपाणिना ॥
 “ गुणालिजन्महेतूनां तुलानां हृदिपाटयन् ।
 वंशार्थार्थपरिस्फूर्त्या किं हि जैन विजृम्भसे ॥ ”
 तदुत्तयान्तर्भृशं विद्धो मन्त्री तद्दर्शनोत्सुकः ।
 तदीयं पौषधागारं स्तम्भतीर्थपुरे रहः ॥

१ वस्तुपालस्य महाभारतादिवाचनेन राज्ञो मद्यमासादिनिवारणम् । एतच्च तस्य भारतपुरा-
 णादिग्रन्थाभ्यासनिवेदकमित्यत्रोद्धृतम् । २ काव्यप्रकाशसङ्केतकृन्माणिक्यसूरिप्रसङ्गः ।

[illegible]

২৯

—अथर्ववेदः—

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विष्णुसिंहः कर्मणि कर्मणि

[illegible]

— १११ —

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

“॥ प्रहृष्टप्रवृत्तः प्रहृष्टप्रवृत्तः प्रहृष्टप्रवृत्तः ॥”

—THE END—

॥ अथ श्रीगणेशस्तोत्रम् ॥

[illegible]

ተገቢውን ጥያቄዎችን ለማሟላት ይረዳል።

.. || अष्टादशतमः अध्यायः ॥

1. በጥቅምት 12 ቀን 1991

11. 10. 1942

[illegible][illegible]

1. Ինչպե՞ս բաժանվե՞ր բաժնեյուրեղե՞ր

II. ԴՆԵԱՅԻՆ ԺՌԱՔԵԱՐԵԿԱՆԸ ԱՅ՝

[illegible]

... 11 1/2 ...

1. Ի՞նչու պարտադրվում ես ինքդ:

[illegible]

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

1. The first part of the report, which is the most important, is the one that deals with the results of the investigation. This part is divided into two sections: the first section deals with the results of the investigation, and the second section deals with the conclusions drawn from the investigation.

[illegible]

07

मन्त्रोपाधिवत् न च शान्ता भाव मन्त्रात्म ।

कविः सोमेश्वरः स्माह तन्मन्त्रोपाधे यथा ॥

“ देवशक्तिविशेषादिवत् सुराणां कल्पदृष्टः स्यादेव

पानात् पञ्चमानमोजनजने कष्टं प्रणष्टं वलिः ।

नरनामानामभ्युत्थितसुरभ्यः चिन्तामणिः काव्यमात् ।

तस्मादर्थिकदृष्ट्या हि सर्वतां श्रीवशिष्टाक्षरी ॥ ”

तदुक्तिरश्चित्तस्वान्ता इन्माणां जनदोषमः ।

लक्ष्यं दक्षपतिस्तस्मै सपादं प्रदत्तवत् ।

अथ वृष्टमनाः मन्त्री वृष्टव ज्ञानविष्टम् ।

रोमाञ्चित्तवपुष्कल्या श्रीनेमि रचितोऽलिः ॥

“ कल्पदृष्टस्तत्परसौ नरवत्सल्योऽन्ये चिन्तामणिमणिरो मण्यस्तथान्ये ।
विजालिसेव दृष्टो वन यत्र नेमिः श्रीवैवर्तेरादिवसो दिवसस्तथान्ये ॥

अमङ्कर्वैराग्यमनङ्गपूर्णा इति त्वदीये यदुक्तवान् ।

कथं कुशोऽर्थोऽपि हि मान्यं तेन यस्मादन्वङ्गोऽपि पदं न लभे ॥ ”

यथापानां सुवर्तिन स्म तं कवीन्द्रसुरदृष्टम् ।

स्वजनः सङ्गोऽर्थोऽपि कवीनं कथयो यथा ॥

श्रीमद्वैवर्तभूषणस्य व्रजतां पद्यां दुरारोहेणा

दृष्ट्वा विष्टजनप्रयोगीन्धुरवचनम् सुखारोहेणाम् ।

लक्ष्यैः प्राविष्टवसोवसुविसदृशो नेत्रविषुह्यैः शृणोत्स

श्रीजनमनश्चिन्तामनिव्रजयतां श्रीवज्रमदी मन्त्रारदं ॥

यो मासद्वितीयोपवाससुविनः श्रीशक्तिविष्टोऽना

गत्वा हैमवलयकं मणिमयीं श्रीनेमिसूक्तिं पराम् ।

आनीयाच्च नरेण्योन रचिते चैत्ये पुराऽल्लिखयत्

श्रीवैवर्तद्विनिर्मितां स जयताच्छैरननमाहृतः ॥

श्रीसिद्धेश्वरप्रातिपद्योनिपदवोमामाद्य प्रौढिप्रदां

सौराष्ट्रपदं विदम्भद्वयः सर्वं व्यथित्वा नमः ।

श्रीनेमोऽथरामन्दिरे व्यरचयत् श्रीवैवर्तार्वाविरे

दिव्यपद्मप्रकरसौ विजयतां श्रीसज्जानो मन्त्रारदं ॥

“ पृथुपादपि पृथलाः अश्वधरज्योत्स्नाकलपादपि

स्वच्छा नूननवतमञ्जरीमरादभ्युत्थितसौरमाः ।

स्वादिहः पठे न जीवन्निधौ प्रायः कवीनां कलौ ॥
 तदेकं मन्त्रिभारं शृत्वा तत्कटुः खलिविदोसया ।
 द्रस्मान्नां श्रीणि लक्ष्मीणि श्रीणि वर्षासिन्नाभ्यदात् ॥
 वीजिनां प्राणप्रायेण तैरे प्राप्नुयुः ॥
 वारिधेस्तदभाषासीत्सोऽन्यदा तद्विदोसया ॥
 उत्प्राप्नुमाना यत्नेन प्राणप्राज्जनादिभिः ।
 तेन विवर्ततदा ज्ञाना वीजिनां मन्त्रिभारं ॥
 तानालोक्य कवीनेषु दानवीरिणोर्वीणां ।
 "प्रादेकाले पयोरात्रिः कथं गीतवन्तिनः ? ॥"
 सोऽभ्यवस्रतदा शीघ्रं कविनां समग्रपथ ।
 "अनःसुखमावापनिद्रामर्दमयादिव ॥"
 पौड्या प्रदत्ता तस्मै कवये कविर्जुष्टः ।
 समस्तपूरणारोपितो वीजिनां वीरगानिनः ॥
 पुनः कवीनां सौख्यसिः समस्तप्रायः पदं पुरः ।
 तेनःप्राज्जनात्प्रादौ "काकः किं वा कर्मलकः" ॥
 "प्राणलक्ष्मणमालापानो यत्नोत्तमः स पतिः ।
 प्रथमं सति कः पुनः काकः किं वा कर्मलकः" ॥
 अत्रान्तं कविः कविस्त्वमेव सत्योऽप्यतः ।
 कवीनां त्वां प्राणः पुनो पशुपुत्रमथ प्राये ॥
 "स्वस्ति श्रीपशुपतिविभूतजनना श्रीमते प्रणमः ॥
 प्राणं श्रीपशुपतिं कृत्यापतिं सदा प्राणमिदं ॥
 प्राणमैककण्ठकण्ठः सकलविभूतं प्राणं प्राणमिदं ॥
 स्वस्तिदेवतस्यैव ज्ञानं तस्मै नमोऽर्पयामहे ॥
 स्वस्ति ॥

मन्त्री तस्मै ददौ प्रीत्या इम्मलक्षयं ततः ॥
 पुनर्वदति तेनोक्तः स कथोद्योतिरवधौत ।
 ज्ञातं सम्प्रति शैलपुत्रि शिवयोरित्युक्तयः पान्य यः ॥ ”
 पठन्त्या न हि चन्दना न हि नयि श्रीवस्त्रिपालस्त्वया
 किं स्वामिन्मन्त्रिणा स शोतनिकरणो नो स्वनिवृत्तौ न हि ।
 “ त्वं जानासि मयास्मि वैतसि युनो विप्रोपकारवती
 व्याजद्वार सुधाधारश्रव मन्त्रिप्रसक्त्यै ॥
 तत्कालप्रतिभोत्पद्यकाम्यमौतकवोश्रवः ।
 अस्मि स्फातिमती प्रीतिरिति मन्त्रिणा वीदति ॥
 उमासमद्वेष्टायास्तत्र सुखसंगारमभयोः ।
 देवपत्नयो देव प्राप्सोऽहं सोऽवदत्युनः ॥
 तं कवि सचिषो वीक्ष्ययावतीत्वं ऊत आगतः ।
 तजानादन्धदा वैरिसिद्धः सत्कविबुद्धयः ॥
 दूतललापितं श्रुत्वा तस्य विप्रवतिशोधिकम् ।
 द्वादिशेषवैकान्तियान ! कैवल्यमिदं दृष्टिः समुत्क्रुष्टे ॥ ”
 श्रुत्वाप्यपि नो सशङ्कद्वेष्टया शालोकविश्रम्भणी
 प्रीतनां भवदोषददौनिषिधौ नास्माकमुक्तं पुनः ।
 “ श्रीमत्कृष्णपरमहंसानामवतन्मयाशोकोक्तिर्भूतेः

यशोवीर उवाच —

सुखेन्दुव्योतिषा शोभा करो श्रीः स्वर्णसिद्धया ॥ ”
 प्रकाशयते सतां साक्षाद्यशोवीरेण मन्त्रिणा ।
 ज्ञाते जगत्संजन लज्जमानः प्रविश्य कोणं त्वमतः स्थितोऽसि ॥
 सन्तः समन्तादपि तावकीनं यशो यशोवीर वत खिवन्ति ।
 न भाति सुवने नावदद्वयमन्यद्वयम् ॥
 यशोवीर लिखन्त्याख्यां यावच्चन्द्रं विविक्षत ॥
 संख्यावन्तो निराद्यान्ते त्वयि केन पुरस्कृताः ॥
 “ विन्दवः श्रीयशोवीर मध्ये शृङ्गा निरधुकाः ।
 वस्त्रिपालो यशोवीरमन्त्रिणाः सङ्कीर्णादपिः ॥
 तच्चानुगुणाकुट्टद्वेष्टयः खितिमाननात् ।